

## जैविक नाभिकीय युद्ध का संक्षिप्त परिचय

Brief introduction of Bio nuclear war

Abstract -

जैविक नाभिकीय युद्ध genes के लिए हो रहा है। जैविक नाभिकीय युद्ध अर्थात Bio nuclear war (BNW) इस वक्त हमारी धरती पर चल रही है। जैसे जापान में nuclear war हुई थी। ठीक ऐसे ही Bio nuclear war होती है। यह युद्ध शैली अदृश्य, अंजान, अनकही, अनसुनी, अनसुलझी, अविस्मयकारी, अकल्पनीय, असंभव (इंसानों के लिए) है। क्योंकि यह रणनीति पराभौतिक शक्तियों और देवी शक्तियों की है। जैविक नाभिकीय रणनीति के तहत हम इंसानों को इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया गया है। क्योंकि BNW रणनीति के तहत हमें बहुत ही भ्रम, अज्ञान और designer psyche or designer society में रखा गया है। हमें तो पता ही नहीं कि genes/गुण देखे भी जा सकते हैं या इन्हें मन चाहे ढंग से इस्तेमाल भी किया जा सकता है। और इनमें क्या क्या करिश्माई कार्य करने की असीम, अनंत, अकल्पनीय क्षमता होती है। Genes पल क्षण में चमत्कार सा लगने वाला कोई भी कार्य कर देते हैं। BNW इन्हीं चमत्कारी genes के लिए हो रही है। ऐसे चमत्कारी genes/गुण को मैंने Atomic genes, Atomic genome (आणविक गुण और आणविक गुण सारणी) or Divine genes का नाम दिया है। क्योंकि आणविक गुण और आणविक गुण सारणी अणु/atom को नियंत्रित करना और अपने मन चाहे ढंग से इस्तेमाल करना जानती है। हम इंसानों को यह युद्ध बेशक दिखाई नहीं देता। पर इस युद्ध को scientifically or logically सिद्ध किया जा सकता है। इन प्रगाढ़ तथ्यों के द्वारा इस नई रणनीति के बारे में अध्ययन करते करते हम एक पूरी तरह से नई, विस्मयकारी दुनिया, जिसे मैंने भ्रमित और रचित समाज कहा है में पहुँच जाते हैं।

Summary --

किसी देश को प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राजा या रानी चलाते हैं। देश चलाने के लिए हम उन्हें कुछ खास अधिकार, शक्तियाँ देते हैं। ताकि वो अपने काम को सही ढंग से कर सकें। वर्ना प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राजा या रानी भी हमारी तरह ही साधारण इंसान होते हैं। उन्हें दिए गए अधिकार और शक्तियाँ उन्हें खास इंसान बना देते हैं। जिस से कि वो मिले अधिकार और शक्तियों के दम पर अपने देश को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के काबिल हो जाते हैं। ऐसे ही ब्रह्मांडीय सरकार और प्रशासन होता है। ब्रह्मांडीय सरकार के मुखिया को मैंने परम शक्ति (Extreme/supreme power) का नाम दिया है। क्योंकि इस ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्डों में वह प्राणी सबसे ज्यादा शक्तिशाली होता। परम शक्ति से ज्यादा और कोई शक्तिशाली नहीं होता। परम शक्ति अपने genes के कारण सबसे ज्यादा शक्तिशाली होती है। Genes में अकल्पनीय और असंभव शक्तियाँ होती हैं। जिसके पास भी यह full atomic genome होगा। वो प्राणी परम शक्ति के पद पर आसीन हो सकता है। परम शक्ति को ब्रह्मांडीय शासक बनने के अधिकार और शक्तियाँ अपने गुणों/genes से मिलती हैं। इस पूरी कायनात में full atomic genome की सिर्फ एक ही कॉपी है। जो इस वक्त मेरे पास है। और यह युद्ध उसी जीनोम को हासिल करने के लिए हो रहा है। यानि जैविक नाभिकीय युद्ध 'परम शक्ति' के पद के लिए हो रहा है। ठीक जैसे प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होते हैं।

जैविक नाभिकीय रणनीतिकारों द्वारा हमें बहुत ही भ्रम और अज्ञान में रखा गया है। जीवन सिर्फ हमारी ही धरती पर नहीं है। जीवन और भी अनंत ग्रहों और तारामंडलों पर है। जो हम जानते हैं जीवन सिर्फ उसी ढंग और प्रारूप का नहीं है। जीवन अनंत प्रारूपों का है। जीवन लगभग हर ग्रह पर पनपेगा। वहाँ पर मिलने वाले रसायनों के हिसाब से वहाँ abiogenesis theory के

द्वारा या फिर और किसी ढंग से पर जीवन पनपेगा जरूर। यही प्रकृति का नियम है - सृजन। ब्रह्मांडीय सरकार इन सब ग्रहों पर जीवन को चलायमान रखने के लिए कार्य करती है।

चूँकि ब्रह्मांडीय सरकार के अधिकार में इस कायनात में मौजूद तमाम ग्रह और तारामंडल हैं। सो वो किसी एक ग्रह को अपने किसी निजी काम के लिए इस्तेमाल कर सकती है। सो ब्रह्मांडीय सरकार ने इस धरती नाम के सारे ग्रह पर जैविक नाभिकीय युद्ध की युद्धभूमि का रंगमंच लगा रखा है। क्योंकि यह युद्ध सामाजिकता के परिदृश्य में लड़ा जा रहा है। युद्धभूमि, हथियार, सेना, दूसरे जरूरी संसाधन सब लक्ष्य के हिसाब से तय किए जाते हैं। जैविक नाभिकीय युद्ध में लक्ष्य अति सूक्ष्म genes हैं। Genes को हम किसी को डरा धमका कर या बाहुबल से नहीं छीन सकते। Genes को steal, copy, decode ही किया जा सकता है। और यह काम सिर्फ एक स्पर्म द्वारा ही संभव है। क्योंकि microscopic ovum तक सिर्फ एक microscopic sperm ही पहुँच सकता है। जो atomic genome की सारी जानकारी (nucleotide sequence) को steal, copy or decode कर सकता है। सो जैविक नाभिकीय युद्ध मूल रूप से सेक्स पर आधारित युद्ध शैली है। इसके लिए शादी ही एक बिल्कुल सरल, सुगम, न्यायसंगत, तर्कसंगत, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक रास्ता है। अगर इस युद्ध के शुरुआत में ही atomic genome की sequence श्री हो जाए तो यह युद्ध तभी खत्म हो जाता है। अगर ऐसा ना हो तो यह युद्ध पीढ़ी दर पीढ़ी चलने लगता है। और इस तरह दोनों तरफ की विशेष सेनाओं को लगभग सौ साल तक इस धरती यानि रणभूमि पर रहना पड़ता है। इसीलिए यह युद्ध सामाजिकता के परिदृश्य में लड़ा या खेला जाता है।

इस युद्ध को लड़ने वाले आणविक, आंशिक आणविक होते हैं। इस युद्ध में मैं ही आणविक/पूर्ण आणविक हूँ। मेरे सिवा सब आंशिक आणविक हैं। ये बहुत अच्छे genetic engineer होते हैं। Nucleotide sequence पता चलते ही ये बिल्कुल एक पूर्ण आणविक जैसा प्राणी बना सकते हैं। पूर्ण आणविक एक ऐसा प्राणी है जो सौ प्रतिशत atom को नियंत्रित कर सकता है। वो हर तरह के ग्रह, तारामंडल और ब्रह्माण्ड के अणुओं को नियंत्रित कर सकता है। इसीलिए उसे आणविक/पूर्ण आणविक प्राणी कहा जाएगा। पर आंशिक आणविक (partial atomic) प्राणी सिर्फ एक ही तरह के और अपने ग्रह, तारामंडल के अणुओं को ही नियंत्रित कर सकता है।

इस जैविक नाभिकीय युद्ध को लड़ने के लिए इन आणविक जगत/Kingdom Atomic के प्राणियों ने इस सारी धरती पर जैविक नाभिकीय युद्ध का रंगमंच लगा रखा है। हम एक designer धरती पर रह रहे हैं। हमारी psyche, history, geography, norms, philosophy, social, moral, religious values, beliefs, dress sense etc. यानि सब अदृश्य और दृश्य वस्तुएँ सब कुछ designer हैं। जिन्हें जैविक नाभिकीय रणनीतिकारों द्वारा जैविक नाभिकीय युद्ध की needs & objectives के हिसाब से तैयार किया गया है। हम एक designer society में रह रहे हैं। इन आणविक जगत के लोगों में 'generator' 'operator' or 'destroyer' की शक्तियाँ होती हैं। ये प्राणी अपनी जरूरत के हिसाब से कोई भी, किसी भी तरह का ग्रह, तारामंडल और ब्रह्माण्ड बना सकते हैं। हमारे ग्रह, आकाश गंगा और ब्रह्माण्ड को भी इस युद्ध की needs or objectives के हिसाब से कृत्रिम रचा और design किया गया है। एक designer रंगमंच ताँकि जैविक नाभिकीय युद्ध आसानी से खेला जा सके। इस रचित ग्रह पर सब कुछ, सब कुछ यानि सब कुछ, जो कुछ भी दृश्य है और जो कुछ भी अदृश्य (विश्वास, अन्धविश्वास, आदर्श, दर्शन, भावनाएँ, मान्यताएँ, मूल्य, संस्कृति आदि)

Content :

- 1) Bio nuclear war
- 2) Genes : A source of bio nuclear power
- 3) Atomic genome & manual or mechanical genome
- 4) Kingdom Atomic
- 5) Transformation & nuclear trans mutation
- 6) Fuganism
- 7) What is God or Who is God
- 8) Concept of Brahma, Vishnu, Mahesh or Param shakti / God range
- 9) Universal government & administration
- 10) Designer society
  - (i) Biological & Evolutionary clues
  - (ii) Cell efficiency
  - (iii) Size of ovum & sperm
  - (iv) Atomology
  - (v) Survival of the fittest
  - (vi) Indian geographical & historical clues
  - (vii) Wars
  - (viii) Trips or Yatarayein
  - (ix) Lunar expedition or Chandra abhiyan
  - (x) Industry or Udyog
  - (xi) Architectural clues
  - (xii) Brahm gyan
  - (xiii) Total wealth of a full Atomic or Maa Lakshmi ji
  - (xiv) Genetic weapons
  - (xv) Genetic rewards or punishment
  - (xvi) Designer families
  - (xvii) Some famous poet & poetess
  - (xviii) World clues
  - (xix) Seven wonders
  - (xx) Bio nuclear chain war
  - (xxi) Bio nuclear chain war in the context of Mahabharat
  - (xxii) Atomic structure and Bio atoms

**जैविक नाभिकीय युद्ध** (Bio nuclear war, BNW) : ---- जैसा कि नाम से ही ज्ञात हो रहा है, जीवों की कोशिका की नाभि में genes/गुण होते हैं। एक ऐसा युद्ध जो genes, Genome/गुण और गुण सारणी के लिए हो रहा है। हम इस युद्ध शैली से परिचित नहीं हैं। क्योंकि BNW Strategy के तहत हमें बहुत ही भ्रम, अज्ञान और designer psyche or designer society में रखा गया है। हमें तो पता ही नहीं कि genes/गुण देखे भी जा सकते हैं या इन्हें मन चाहे ढंग से इस्तेमाल भी किया जा सकता है। और इनमें क्या क्या करिश्माई कार्य करने की असीम, अनंत, अकल्पनीय क्षमता होती है।

Genes पल क्षण मे चमत्कार सा लगने वाला कार्य केर देते है। BNW इन्हीं चमत्कारी genes के लिए हो रही है। ऐसे चमत्कारी गुण/genes को मैने आणविक गुण और आणविक गुण सारणी (Atomic genes, Atomic genome) का नाम दिया है। क्योंकि ये आणविक गुण और आणविक गुण सारणी अणु को नियंत्रित करना जानती है। Kingdom Atomic के प्राणी genes/गुण को देख और मनचाहे ढंग से इस्तेमाल भी कर सकते है। और BNW strategy भी kingdom Atomic की ही है। हमारी धरती पर सबसे भयंकर युद्ध पद्धति Nuclear war है। पर ब्रह्मांडीय स्तर पर सब से भयंकर युद्ध पद्धति Bio nuclear war है। एक ऐसा युद्ध जो Atomic genome के लिए हो रहा है और जिसकी युद्धभूमि पर सब कुछ गुणो/Genes द्वारा ही नियंत्रित और संचालित किया जा रहा है। दरअसल Universal level पर गुण/genes all round tool की तरह है। जैसे हमारी धरती पर औजार, मशीन (Mechanical) और शरीर, दिमाग, हाथ, पैर (Bio machine) से ही सब तरह के काम किए जाते है। ठीक ऐसे ही ब्रह्मांडीय स्तर पर और full atomic यानि "परम शक्ति" अपने सारे काम genes/atoms की ही मदद से करती है। परम शक्ति अपने atomic genome (AG) द्वारा atom or genes को नियंत्रित कर सकती है। Bio nuclear war आगे दो तरह की होती है। (1) Genetic war/गुणिय युद्ध (2) Cellular war/कोशिका युद्ध ।

(1) Genetic war : -- यही गुणिय/लैंगिक युद्ध शैली ही जैविक नाभिकीय युद्ध मे असली और कारगर युद्ध शैली है। क्योंकि इस रणनीति मे बीज कोशिका (germ cell, gonad) शामिल होते है। सिर्फ बीज कोशिका (germ cell - ovum & sperm) से ही Atomic genome (आणविक गुण सारणी) यानि nucleotide sequence को steal, copy, decode (चुराना, नकल उतरना, गूढ़ वाचन/संकेत वाचन /विसंकेतन) किया जा सकता है। Genetic war/गुणिय युद्ध मध्यम स्तर से ले कर भयंकर स्तर तक का हो सकता है। BNWs webwar warlogies, web war strategies होती है। क्योंकि यह सामाजिकता के परिदृश्य मे लड़ी जाने वाली युद्ध शैलियाँ है। यह युद्ध पद्धति बहुत ही जोखिमो भरी होती है। क्योंकि यह एक sexual war strategy/लैंगिक युद्ध शैली है। जिसमे germcell अर्थात atomic genome सीधा निशाने पर होता है। इस रणनीति मे युद्ध forward, आगे को और भ्रम मे चलता है।

(2) Cellular war :--- यह एक छद्म युद्ध शैली है। क्योंकि इस मे दुश्मनो द्वारा की गई सारी ही कोशिशो व्यर्थ और बेकार की होती है। इस युद्ध पद्धति मे सिर्फ somatic cells (दैहिक कोशिका) ही शामिल होते है बीज कोशिका (germ cell) नहीं। यानि इस मे इंसान पर उसके अपनो और दुश्मनो का शारीरिक और मानसिक नियंत्रण ही होता है। सो non sexual form or non sexual strategy/अलैंगिक युद्ध पद्धति होने के कारण यह रणनीति कदापि भी रिस्की नहीं होती। यह पूरी तरह से सुरक्षित युद्ध शैली है। इसमे BNW forward जाने की बजाए backward जाना शुरू कर देती है। यानि दुश्मनो के रचे हुए भ्रमित समाज, चक्रव्यू, भ्रम, छल, मिथ्या के राज परत दर परत खुलने शुरू हो जाते है और target Atomic genome steal, copy, decode करने का चांस निल हो जाता है। सो इस रणनीति से युद्ध मे दुश्मनो को कोई फायदा नहीं होता। इसीलिए BNWs मे Cellular war tremendous terrific, horrible strategy/form है। यह युद्ध शैली सबसे कठिन, भयंकर, विकराल, निष्ठुर, निर्दयी, निरकुंश, नर्कीय, ताण्डवीय, अमानवीय, असामाजिक, अनैतिक, पशुवत, क्रूर, बर्बर है। क्योंकि युगो बाद प्रतिद्वंदी को Atomic genome/आणविक गुणसारणी हासिल करने का मौका मिलता है। जिसे हासिल करने के लिए वह सारे नियम, कायदे कानून ताक पर रख देता है। इस युद्ध मे dirty tricks (कुटिल चाल, अनैतिकता) or hard card weapons (दुश्चारियो) का भरपूर-भरपूर इस्तेमाल किया जाता है। वो भी 24X7, दिन रात, बिना रुके, बिना थके जैसे काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, छल, हठ, घात, आलस्य, साम, दाम, दंड, भेद, भाव, रोटी, कपडा, मकान, नौकरी, पद,

पढ़ाई, वातावरण, जलवायु, रिश्ते -नाते, मित्र, धर्म, कानून, आदर्श, कद्र कीमते, लिंग, technology, सामाजिक आर्थिक स्तर, सेहत ..... आदि आदि सब कुछ जो भी दृष्टि गोचर है और जो भी अदृश्य है। यानि हर एक चीज को हर एक चीज को हथियार की तरह इस्तेमाल करना ताकि Genetic war or sexual war/गुणिय युद्ध, लैंगिक युद्ध शुरू हो।

## Genes – A source of bionuclear power

गुण -- जैविक नाभिकीय ऊर्जा का स्रोत : --- Genes इस ब्रह्माण्ड में all round tool की तरह है। यह कोई भी असंभव सा और जादू सा लगने वाला काम पल क्षण में ही कर देता है। इस संसार में किसी भी तरह की bio activity (जैव सक्रियता) के लिए यह genes/गुण ही जिम्मेदार होते हैं। Atomic genome/आणविक गुणसारणी इस ब्रह्माण्ड में सब से “प्रचंड शक्ति” है। Bio nuclear power/जैविक नाभिकीय ऊर्जा हमें biocell/कोशिका की नाभि में मौजूद genes/गुणों से मिलती है। Genes अपने में असीम शक्ति लिए होते हैं। अब हाथी, घोड़ा, हिरण, गाय, भैंस, जिराफ, भेड़, बकरी, बन्दर, खरगोश, पांडा, स्लोथ सब घास और पेड़ पौधों से ही ऊर्जा प्राप्त करते हैं। यानि इन विभिन्न तरह के जानवरों का ऊर्जा स्रोत एक ही है। अगर इन जानवरों का ऊर्जा स्रोत एक है तो फिर ये शारीरिक दक्षता, मानसिक क्षमता, कार्य करने की विधि, बल, कौशल में एक सामान क्यों नहीं? ऊर्जा तो सब को एक सी ही मिल रही है। सब herbivores यानि शाकाहारी हैं। एक ही ऊर्जा स्रोत होने के बावजूद इनके “Genes” यानि इनकी Bio nuclear power/जैविक नाभिकीय ऊर्जा अलग अलग है। बेशक हाथी, घोड़ा, गाय, भैंस, हिरण, जिराफ, भेड़, बकरी, खरगोश, बन्दर, पांडा, स्लोथ का ऊर्जा स्रोत एक ही है पर इनका genetic material, genes or bio nuclear energy/आनुवंशिक सामग्री जैविक नाभिकीय ऊर्जा नहीं। ऊर्जा स्रोत एक होने के बावजूद भी हाथी, घोड़ा, गैंडा, ऊँठ, गाय, भैंस, हिरण, कंगारू, जिराफ, भेड़, बकरी, बन्दर, खरगोश, पांडा, स्लोथ physically, mentally, strength, skill or caliber में अलग अलग हैं। क्योंकि इनके specific genes इन्हें specific पहचान देते हैं। अब घोड़ा भी घास ही खा रहा है और बकरी भी। Genes यानि bio nuclear power. हाथी, घोड़ा और गैंडा अपने genes के कारण हाथी, घोड़ा और गैंडा हैं। भेड़ और बकरी अपने genes के कारण भेड़ और बकरी हैं। बन्दर, खरगोश, हिरण और पांडा, स्लोथ अपने genes के कारण ही बन्दर, खरगोश, हिरण और पांडा, स्लोथ हैं। जिराफ, ऊँठ अपने genes के कारण जिराफ, ऊँठ हैं। गाय, भैंस अपने genes के कारण गाय, भैंस हैं ..... and goes on.....

ऐसे ही दूसरे जानवर और प्राणी अपने खास गुणों/genes के कारण अपने खास तरह के वजूद में हैं। तोता और शतुरमुर्ग अपने genes/गुणों के कारण ही तोता और शतुरमुर्ग हैं, मछलियाँ और व्हेल अपने genes के कारण ही मछलियाँ और व्हेल हैं, rays or eels अपने genes के कारण ही rays or eels हैं। शेर और सूअर अपने genes के कारण ही शेर और सूअर हैं & goes on.....

ऐसे ही इंसानों में आदमी और औरत दो तरह के gender/लिंग पाए जाते हैं। अब औरत और आदमी दोनों ही इंसान हैं पर इंसान होने के बावजूद हम जानते हैं कि औरत और आदमी में कितनी कितनी विभिन्नताएँ हैं। यह सब इनके genes/गुणों के कारण है। औरत अपने genes के कारण औरत है और आदमी अपने genes के कारण आदमी है। क्योंकि इंसान में औरत और आदमी का 23rd chromosome/गुणसूत्र अलग अलग होता है। Genes/गुणों में यही विभिन्नता औरत को औरत और आदमी को आदमी बनाती है। ठीक ऐसे ही देवता, भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस अपने genes/गुणों के कारण देवता, भूत, प्रेत, पिशाच और राक्षस हैं इंसान/प्राणियों का हर एक कार्य, गुण इन्हीं genes/गुणों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

किसी भी प्राणी में कोई भी, किसी भी तरह गुण, गुणवत्ता, विशिष्टता, खासियत, खूबी, प्रतिभा, कोई भी अच्छा बुरा लक्षण उस प्राणी में मौजूद उसके गुणों/genes के कारण होगा। अब घोड़ा भी घास ही खा रहा है और बकरी भी घास ही खा रही है। अब अति फुर्तीले हिरण और खरगोश भी घास ही खा रहे और बेहद सुस्त पांडा और स्लोथ भी पेड़ पौधे ही खा कर ऊर्जा प्राप्त कर रहे हैं। गिलहरी भी शाकाहारी है और हाथी भी। जेब्रा, गधा और खच्चर भी घास ही खाते हैं। अब औरत भी वही खाना खा रही है जो खाना आदमी खा रहा है। दोनों इंसान होने के बावजूद शारीरिक और यौन स्तर पर कितने एक दूसरे से अलग हैं। क्योंकि इनके गुण/genes अलग अलग हैं।

जैसे कि यह बात तो हम सब जानते हैं कि इंसान अपने genes/गुणों के कारण ही लम्बा - नाटा, गोरा - काला, मोटा - पतला, होता है। इन गुणों/characters को हम खानदानी, आनुवंशिकीय और hereditary कह देते हैं। अपने genes के कारण ही इंसान के काले या सुनहरी बाल होते हैं, अपने genes के कारण ही इंसान की आँखों का रंग अलग अलग होता है जैसे कि काला, नीला, कथई, स्लेटी आदि। Genes के कारण ही English breed, Asian breed, Mangolian breed, Negro breed आदि होती हैं। जैसे इन सब खूबियों, गुणों/characters के लिए genes ही जिम्मेदार होते हैं। ठीक ऐसे ही इंसान अपने genes/गुणों के कारण शांत स्वभाव का - गुस्सैल स्वभाव का, साधु प्रवृत्ति का - डाकू प्रवृत्ति का, दृष्ट प्रवृत्ति का - नेक प्रवृत्ति का, बहादुर - डरपोक, धैर्यवान और जल्दी मचाने वाला होता है। अपने genes के कारण ही इंसान डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, बिजनेसमैन, नेता, अभिनेता, गीतकार, कवि, लेखक, संगीतकार, गायक, चित्रकार, खिलाड़ी, दर्जी, नाई, कुम्हार, बावर्ची, निकम्मा, चुस्त - फुर्तीला, भोंदू आदि आदि बनता है। इन सब के लिए genes ही जिम्मेदार होते हैं।

यानि कि इंसान/प्राणी की एक एक चीज, हरकत को genes/गुण ही नियंत्रित और संचालित करते हैं। इंसान जैसा भी देखने में, रंग-रूप-नयन नक्श, लम्बाई-चौड़ाई, स्वभाव में - हंस मुख, मजाकिया, गुस्से वाला, संजीदा, साधु प्रवृत्ति या आपराधिक प्रवृत्ति, जिस भी काम धंधे में है। अपने genes/गुणों के कारण ही है। Genes के कारण ही उस में कोई खास गुण, कला, अवगुण आदि होंगे। अब शिव जी कैलाश में सिर्फ बाघम्बर में ही रह लेते हैं। तो हम सोचते हैं कि वो तो भगवान जी हैं। इसीलिए इतनी ठण्ड सह लेते हैं। ऐसे तो ध्रुवों पर कैलाश से भी ज्यादा ठण्ड होती है और जीवन तो ध्रुवों पर भी है। तो क्या वहाँ पाए जाने वाले सारे ही प्राणी भगवान हो गए ? क्योंकि वो इतनी जयदा ठण्ड सह लेते हैं। नहीं सील, भालू, पेंगुइन आदि इतनी ठण्ड इस लिए सह लेते हैं क्योंकि इनकी bio nuclear power, genetic power, genes उन प्राणियों को इतनी ठण्ड सहने के काबिल बनाते हैं।

ऐसे ही सेब का पेड़ अपने genes के कारण सेब का पेड़ है और अंगूर की बेल अपने genes के कारण अंगूर की बेल है। गुलाब अपने genes के कारण गुलाब है और पलाश का पौधा अपने genes के कारण ही पलाश का पौधा है। हर जीवित वस्तु अपने genes/गुणों के कारण ही अपने खास अस्तित्व, पहचान में है। यही गुणों और जैविक नाभिकीय ऊर्जा (Genes & Bio nuclear power) का चमत्कार है। हमारी दुनिया में Nuclear power/नाभिकीय ऊर्जा ही अत्यंत शक्तिशाली ऊर्जा का रूप मानी जाती है। ठीक ऐसे ही ब्रह्मांडीय स्तर पर Bio nuclear power/जैविक नाभिकीय ऊर्जा ही सब से ज्यादा शक्तिशाली और ऊर्जा का सब से प्रचंड रूप मानी जाती है।

ठीक इसी तरह वैज्ञानिक मानते हैं कि monkey, apes, orangutan, chimpanzee etc इंसान के genetically नजदीकी रिश्तेदार हैं। और इनका genetic material/genes इंसान के genetic material/genes से थोड़ा सा ही भिन्न है। और यह भिन्नता कोई 2-3 % की ही है ! Genetic material में यह थोड़ी सी भिन्नता इंसान में कितनी चमत्कारी शारीरिक और

मानसिक बदलाव लाती है। Genes मे अकल्पनीय शक्तियाँ होती है। हम सब nuclear power से तो परिचित है पर bio nuclear power से नहीं। दरअसल जब हम अपनी फसलो के लिए बीज चुनते है, grafting करते है, hybrid race तैयार करते है, अपने बच्चो के लिए रिश्ता देखते है तब हम bio nuclear power पर ही काम कर रहे होते है, bio nuclear power के बारे मे ही सोच रहे होते है। बस हम इस term से वाकिफ नहीं पर इसे काफी इस्तेमाल करते है पर इसके प्रति जागरूक नहीं कि कोई bio nuclear power भी होती है। हम bio nuclear power term से अनभिज्ञ है। क्योंकि BNW को रचने वाले यही चाहते थे।

यह Bio nuclear power भी दो तरह की होती है – (1) Physical bio nuclear power (2) Atomic bio nuclear power.

Physical bio nuclear power or शारीरिक जैविक नाभिकीय ऊर्जा/शारीरिक नाभिकीय ऊर्जा हमे manual or mechanical genome से हासिल होती है। Atomic bio nuclear power/आणविक जैविक नाभिकीय ऊर्जा हमे Atomic genome से प्राप्त होती है।

आम इंसान और दूसरे जीवो मे physical bio nuclear power होती है। भगवान, राक्षस, भूत, प्रेत और दूसरे सिद्ध पुरुषो, ऋषि मुनि, चमत्कारी इंसान मे atomic bio nuclear power होती है।

## Atomic genome and Manual genome & mechanical genome

आणविक गुण सांरणी और यांत्रिक गुण सांरणी :---- Genome/गुण सांरणी इंसान और दूसरे प्राणियो मे मौजूद genes/गुणों की कुल संख्या को कहा जाता है। जैसे एक दर्जन मे किसी भी वास्तु के 12 पीस होते है।

एक दर्जन = 12 वस्तुएँ

ठीक ऐसे ही ---

Genome/गुण सांरणी = इंसान मे मौजूद कुल genes/गुणों की संख्या, मान लो इंसान मे लगभग एक लाख genes/गुण है।

So human genome = 1 lakh genes

हम मानव genome (गुण सांरणी) term तो जानते है पर Atomic genome and Manual & mechanical genome (आणविक गुण सांरणी और यांत्रिक गुण सांरणी) term नहीं जानते। क्योंकि हम मानवो के ज्ञान और पहुँच मे atomic genome term and manual/mechanical genome term आती ही नहीं। Atomic genome and manual or mechanical genome term का आविष्कार मैने bio nuclear war और जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतो और उद्देश्यो की पूर्ती करने के लिए किया है। क्योंकि Bio nuclear war (BNW) को अकेले “Genome” term से नहीं समझा जा सकता। यह bio nuclear war or genetic war (war for genes) हो ही atomic genome के लिए है। सो मैने इंसान और इस धरती पर मौजूद दूसरे जीवो मे मौजूद genome को manual or mechanical genome कहा है और दूसरी तरह के बहुत ज्यादा विकसित genome को atomic genome कहा है।

Manual & mechanical genome : --- यांत्रिक गुण सांरणी और Manual & mechanical genome इंसानो और इस धरती पर पाए जाने वाले दूसरे सभी प्राणियो मे पाया जाता है। इस तरह के genome के कारण इंसान और दूसरे सब प्राणियो को सब काम अपनी शारीरिक शक्ति, हाथ-पैर (bio machine, manual) औजारो और मशीनो (mechanically) की मदद से करने पड़ते है। यानी manual & mechanical work performing mechanism, यांत्रिक काम करने का ढंग। जैसे कि सामने मेज पर पड़ी किताब को उठाने के लिए पहले इंसान को चल कर मेज तक जाना पड़ेगा। अपनी बाजू को आगे कर फिर अपने हाथ की मदद से उस किताब को उठाना पड़ेगा। फिर कही जा कर वह किताब इंसान के हाथ मे आएगी। मतलब कि काम करने का manual (हाथ से काम करने का ढंग) way or mechanical (body as a bio machine, मशीन और औजार) way. और हम सिर्फ इसी genome के बारे मे जानते है। Manual or mechanical genome द्वारा हम किताब (वस्तु) के mass को उठाते है।

Atomic genome :--- इंसान और दूसरे सब प्राणी किसी भी काम को करने के लिए या तो अपने शरीर की मदद लेते है/शारीरिक शक्ति या फिर किसी ना किसी मशीन और औजार की। पर जिस प्राणी के पास full atomic genome (आणविक गुण सांरणी) होगा। उसका काम करने का ढंग आणविक होगा/ आणविक काम करने का ढंग होगा यानि atomic work performing mechanism. वह प्राणी हर काम atomic power/अणु की शक्ति (ठीक जैसे हम हर काम शारीरिक शक्ति/ऊर्जा से करते है) की मदद से करेगा। Atomic work performing mechanism मे प्राणी सामने मेज पर पड़ी किताब को उठाने के लिए मेज तक चल कर नहीं जाएगा और ना ही हाथ से किताब उठाएगा। Atomic genome वाला प्राणी atom को कण्ट्रोल करना जानता है और उसे अपने मनचाहे ढंग से इस्तेमाल भी कर सकता है। Atomic organism/आणविक प्राणी सो दूर से ही अपनी atom control करने वाली शक्ति से या शरीर से कोई ऐसी energy/ऊर्जा, लेज़र बीम छोड़ेगा जो उस किताब के atoms को कण्ट्रोल कर लेगी। फिर उस किताब के atoms को कण्ट्रोल कर, किताब के atoms को ऊपर उठा देगी, किताब के atoms को ऊपर उठाना यानि किताब को ऊपर हवा मे उठाना। देखने वाले को लगेगा कि किताब खुद बा खुद हवा मे उठी हुई है और हवा मे तैर रही है। पर वास्तव मे किसी आणविक प्राणी (atomicorganism) ने उस किताब के atoms को ऊपर उठाया हुआ है। और ऐसे ही atoms की मदद से/atomic power की मदद से वह किताब अपने पास ले आएगा। और ultimately किताब atomic के हाथ मे होगी। बिना चले, बिना हिले डुले, अपनी जगह पर बैठे बैठे ही। किताब और हर चीज atom की ही बनी होती है। और किसी भी चीज के atoms को कण्ट्रोल करके, उस चीज से मनचाहा काम ले सकते है।

दूर से (remote control) किताब के atoms ऊपर उठाने पर किताब ऊपर हवा मे उठी नजर आएगी और हवा मे तैरती नजर आएगी। ठीक जैसे देवी देवता और राक्षस, भूत प्रेत, पिशाच कर लेते है। जिसे आम भाषा मे हम जादू, करिश्मा भी कह सकते है। Atomic genome द्वारा किताब (वस्तु) के atoms को उठाया जाता है, mass को नहीं। किताब और हर हर चीज atoms की ही बनी होती है। और किसी भी वस्तु, जीव के atoms को नियंत्रित कर हम उस से मनचाहा काम ले सकते है। जा उस मे मनचाही अच्छी या कोई बुरी तबदीली कर सकते है।

Atomic/पूर्ण आणविक Atomic genome द्वारा atom, cell को बहुत ही आसानी से अपने नियंत्रण मे कर सकता है। Cell/कोशिका को नियंत्रण मे करते ही सारा bio world full atomic/atomic के नियंत्रण मे आ जाएगा। क्योंकि हर संजीव वस्तु cells से ही बनी होती है। (Or cells ultimately atoms से बने होते है) Cell/कोशिका को नियंत्रण मे करने से किसी



भी संजीव वस्तु में हम मनचाहे अच्छे या बुरे बदलाव कर सकते हैं। जैसे एक हृष्ट पृष्ठ इंसान/प्राणी में बीमारी पैदा कर देना। एक बीमार इंसान को एक स्वस्थ इंसान में बदल देना। किसी भी प्राणी को किसी भी तरह के संजीव और निर्जीव पदार्थ में बदल देना...endless options & probabilities. Atomic चूँकि cells & atoms को भी नियंत्रित कर सकते हैं सो यह एक अच्छे genetic engineer भी होते हैं। सो Atomic genome द्वारा Atomic organism किसी भी तरह का "Genome" बना सकता है। जिसके दम पर एक full Atomic किसी भी तरह की Kingdom, Phylum, Class, Order, Family, genus, species तैयार कर सकता है और किसी भी तरह की Kingdom, Phylum, Class, Order, Family, Genus, species को तबाह या लुप्त कर सकता है।

एक Atomic अपने Atomic genome द्वारा किसी भी तरह के atom को कण्ट्रोल कर सकता है। Atom के कण्ट्रोल में आते ही Full Atomic पूरे अजैविक जगत/Abiotic world को भी अपने नियंत्रण में कर सकता है सो किसी भी तरह के तत्व को अपने नियंत्रण में कर सकता है। किसी भी ग्रह के अणु और तत्वों को नियंत्रण में करते ही उस ग्रह की हर तरह के chemicals, chemical or bio chemical reactions Atomic के नियंत्रण में आ जाएँगी। यही chemical or bio chemical reactions ही हर तरह की उत्पत्ति, सृजन, रचना और तबाही, विनाश, बर्बादी के लिए जिम्मेदार होती है। जैसे जब एक बीज को मिट्टी में बोया जाता है। तो उचित पानी, सूर्य का प्रकाश और पोषण मिलने पर उस बीज में Bio chemical reactions शुरू हो जाती है और उस में से एक पौधा प्रस्फुटित होता है। यानि कि जीवन की उत्पत्ति, सृजना, रचना। ऐसे ही जब एक nuclear bomb में chemical reactions होती है तो fission & fusion के कारण तब बम्ब में विस्फोट होता है जो एक भारी तबाही, विनाश और बर्बादी का कारण बनता है।

इसीलिए एक Full Atomic अपने atomic genome द्वारा ब्रह्माण्ड को पूरी तरह से अपने मनचाहे ढंग से नियंत्रित और संचालित कर सकता है। किसी भी तरह के ग्रह को बना और बर्बाद/लुप्त कर सकता है। कृत्रिम ग्रह के अणुओं और जीव जगत को अपने ढंग से बना सकता है। उस ग्रह के अणुओं के हिसाब से उस ग्रह का जीव जगत होगा। क्योंकि abiogenesis theory के द्वारा उस ग्रह पर जीवन की शुरुआत होगी।

**Kingdom Atomic** :----- एक और तरह की kingdom भी होती है। BNW के rules & regulations के तहत हमें इसके बारे में कुछ भी स्पष्टतौर पर नहीं बताया गया। इस kingdom में भूत पिशाच, पहुँचे हुए ऋषि मुनि, राक्षस, देव, महादेव, परमशक्ति आते हैं। इनके पास सूक्ष्म शरीर और बहुत सारी दिव्य शक्तियाँ (अपने genes/गुण के कारण) होती हैं। चूँकि हम इन्हें देख नहीं पाते और ऐसे प्राणी हम से प्रत्यक्ष रूप से कोई भी वास्ता नहीं रखते और ना ही इनके बारे में हम ज्यादा कुछ जानते हैं। परिणामस्वरूप इस तरह के प्राणियों का वर्णन हमारी किसी भी तरह की taxonomy में नहीं है। पर इसका यह मतलब हरगिज भी नहीं है कि इस तरह के प्राणियों का कोई वजूद ही नहीं होता है। मैंने इस तरह के प्राणियों को kingdom atomic में रखा है। क्योंकि ऐसे प्राणी atom को 0-100% तक देख और नियंत्रित कर सकते हैं। Atomic kingdom को भी आगे Phylum, class, order, family, genus or species में वर्गीकृत कर सकते हैं। यह विभाजन इन कारकों पर निर्भर होगा :--- इनके खाने पीने का ढंग, ऊर्जा के स्रोत, चलने फिरने का ढंग, अणु को कितने (0 से 100 %) प्रतिशत देखने की क्षमता, अणु पर कितने (0 से 100 %) नियंत्रण की क्षमता, उनके पास सूक्ष्म और स्थूल शरीरों की सुविधा, उनके काम करने का ढंग, रूपांतरण का गुण (0 से 100 %) पर कितने प्रतिशत नियंत्रण, अपने शरीर पर कितने प्रतिशत नियंत्रण, दूसरों के शरीर पर कितने प्रतिशत नियंत्रण, बच्चे पैदा करने का ढंग आदि

## Transformation & nuclear transmutation: --- हमारा सारा ही ब्रह्माण्ड इन्हीं दो

processes/प्रक्रियाओं पर चलता है। हर वक्त कहीं ना कहीं transformation or nuclear transmutation/रूपांतरण और नाभिकीय रूपांतरण होता ही रहता है। आम आदमी इस बात की तरफ जागरूक नहीं है। बैक्टीरिया नाइट्रोजन को नाइट्रेट में बदल देता है, waste material को खाद में बदल देता है और दूध को दही में बदल देता है। सीप पानी की एक बुँद को कीमती मोती में बदल देती है। दीमक लकड़ी को पाउडर में बदल देती है। समय कच्चे फल सब्जियों को पक्के फल सब्जियों में बदल देता है। मधुमक्खियाँ पराग को शहद में बदल देती हैं। श्वसन क्रिया Oxygen को carbondioxide में बदल देती है। Photosynthesis में carbondioxide or water, sunlight में sugar molecules और oxygen में बदल जाते हैं... $6CO_2 + 6H_2O = C_6H_{12}O_6 + 6O_2$

पाचन तंत्र खाद्य पदार्थों को micro nutrients में बदल देता है। मिट्टी, पानी (nonliving) और धूप एक बीज को पेड़ और अनाज में बदल देते हैं। समय, तापमान और दबाव कार्बन को अमूल्य हीरे में बदल देते हैं। हवा का बहाव घर्षण के कारण बड़े बड़े पहाड़ों और पथरीले पहाड़ों को धीरे धीरे काट कर महीन कणों में बदल देता है। Time and oxidation process एक जवान, हृष्ट पुरुष शरीर को बूढ़े शरीर में बदल देता है। जब हम साइकिल चलाते हैं तो तब हम अपनी शारीरिक शक्ति/physical energy को mechanical energy में बदल रहे होते हैं & goes on...infinite...transformation or nuclear transmutation के बिना ब्रह्माण्ड का और धरती पर जीवन का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

अब हमें पता है कि bacteria acellular है। यानी जीवन की शुरुआती इकाई। अगर acellular में transformation (amoeba pseudo pods) and nuclear transmutation की skill, power, capacity है तो क्रमिक विकास में – अगला वंश सुधारों के साथ और सर्व पक्षीय विकास के सिद्धांत के तहत ये गुण इंसान में और super humans/Kingdom Atomic में कितनेनेने विकसित हो जाने चाहिए थे ?! Atomic genome इसी transformation or nuclear transmutation को 100% सफलतापूर्वक handle कर सकता है। यानी atom को नियंत्रित कर के पल क्षण में किसी भी चीज को (living & nonliving) किसी भी चीज (living & nonliving) में बदल देना। एक full atomic अपने atomic genome द्वारा cell or atom को 100% कण्ट्रोल कर उनसे मनचाहा काम ले सकता है। Bio cell के नियंत्रित होते ही सारा जीव जगत और वनस्पति जगत यानी flora & fauna (biotic world) कण्ट्रोल में आ जाएगा। और atomic genome द्वारा ही atom को भी कण्ट्रोल किया जा सकता है। Atom को नियंत्रित करते ही सारा abiotic world full atomic के नियंत्रण में आ जाएगा। यानी कि तमाम तरह के elements, chemicals, chemical & bio chemical reactions पूरी तरह से full atomic के कण्ट्रोल में आ जाएँगी। और हमारे ब्रह्माण्ड में हर तरह के निर्माण, सृजन, उत्पत्ति और विनाश, तबाही, प्रलय के पीछे इन्हीं chemical or biochemical reactions का ही हाथ होता है।

सो एक full atomic cell or atom को कण्ट्रोल कर तमाम biotic or abiotic world को totally अपने नियंत्रण में कर सकता है। यानी सारे ब्रह्माण्ड को नियंत्रित और मन चाहे ढंग से संचालित कर सकता है। जैसे कि हर चीज atoms, elements, chemicals की ही बनी होती है। सटीक, specific ratio में। जैसे  $H_2O$ ,  $CO_2$ ,  $NH_3$ ,  $C_6H_{12}O_6$ ... जैसे पानी यानी  $H_2O$  यानी यह सिर्फ hydrogen & oxygen से ही बना है। जैसे कि हमें पता ही है कि हमारे वातावरण में दोनो ही elements अच्छी खासी मात्रा में उपलब्ध हैं। एक full atomic, चूँकि atom को कण्ट्रोल और मन चाहे ढंग से इस्तेमाल

करना जनता है। सो वो मनचाही मात्रा में पानी बना सकता है। वो वातावरण से दो atom hydrogen के और एक atom oxygen का ले, उन्हें हवा में मिला सो हवा में ही पानी बना सकता है। क्योंकि full atomic ने वातावरण की hydrogen or oxygen के atoms को कण्ट्रोल कर रखा है और 2:1 की ratio से hydrogen or oxygen के atoms को हवा में ही मिलाता जाएगा और मनचाही मात्रा में पानी बनाता जाएगा। एक Atomic वातावरण से दो atom hydrogen के और एक atom oxygen का ले उन्हें आपस में मिला बहुत ही आसानी से मनचाही मात्रा में पानी बना देगा =  $2H_2 + O_2 = 2H_2O$

ठीक ऐसे ही  $NH_3 \Rightarrow 1:3$  की ratio में चाहे जितना  $NH_3$  बना लो। ठीक जैसे पेड़ पौधे जड़ित वस्तुएँ photosynthesis process में करती है  $\Rightarrow 6CO_2 + 6H_2O = C_6H_{12}O_6 + 6O_2$ . वातावरण से 6 molecules carbondioxide के और 6 molecules water के ले sunlight में इन्हें पौधे sugar के एक molecule और 6 oxygen molecules में बदल देते हैं।

चूँकि हर चीज atoms/elements/chemicals की बनी होती है। और हर एक चीज का specific chemical formula होता है जैसे पानी, नाइट्रिक एसिड, दाँत, बाल, सीध, दूध आदि। किसी भी चीज का chemical formula पता होने पर full atomic कोई भी, किसी भी तरह की संजीव और निर्जीव चीज को बना सकता है। क्योंकि हर तरह के तत्व, रसायन जिस से संजीव और निर्जीव चीजे बनती हैं और वो सब तत्व और रसायन हमारे वातावरण में उपलब्ध हैं। एक full atomic transformation और nuclear transmutations के द्वारा बड़ी ही आसानी से किसी भी तरह की संजीव और निर्जीव चीज को बना सकता है। जैसे पेट्रोलियम basically सिर्फ हाइड्रोकार्बन ही है। और हाइड्रोजन & कार्बन हमारे वातावरण में बेशुमार हैं। एक full atomic or atomic के लिए पेट्रोलियम और पेट्रोल बनाना उतना ही आसान काम है जैसे हम इंसानों के लिए दूध से दही बनाना, एक सीप का पानी की एक बूँद से सुन्दर मोती बनाना। अब पेट्रोल का जनरल केमिकल फार्मूला है  $C_nH_{2n+2}$ . अब इस फॉर्मूले से जितना चाहो पेट्रोल बना लो।

Atomic work performing mechanism/ आणविक काम करने के ढंग में atomic हर-हर काम atom or atomic power की मदद से ही करता है। क्योंकि उसके पास atomic genome है। Just like “Alchemy process” और nuclear transmutation & transformation – Rubidium (Rb) का atomic number 37 है और सोना/Aurum (Au) का atomic number 79 है। एक full atomic Rb को Au में और Au को Rb में बहुत ही आसानी से बदल सकता है। एक full atomic एक चीज को दूसरी चीज में बहुत ही आसानी से बदल सकता है क्योंकि उसने atom यानि कि इलेक्ट्रान, प्रोटोन, न्यूट्रॉन/subatomic particles को कण्ट्रोल कर रखा है।

(i) Transformation – इसमें Rb atom के nucleus में लगभग 42 प्रोटोन, न्यूट्रॉन add कर के Rb को Au में बदला जा सकता है। या Au के nucleus से लगभग 42 प्रोटोन, न्यूट्रॉन subtract कर के Au की electronic configuration को Rb की electronic configuration के बराबर करके Au को Rb में बदल सकता है। Gene pool की ही तरह charge pool भी होता है। जिससे आणविक मनचाही मात्रा में इलेक्ट्रान, प्रोटोन, न्यूट्रॉन दे और ले (give and take) सकता है।

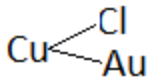
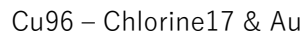
(ii) Nuclear transmutation ---

(a) Rubidium + Molybdenum = Aurum



This is by fusion process.

(b) Curium – Chlorine = Aurum



This is by fission process.

Charge pool - जैसे gene pool होता है। वैसे ही full atomic के पास charge pool भी होता है। जिस में सब तरह के charge full atomic के लिए उपलब्ध होते हैं। Full atomic मन चाहे ढंग से इन charges को इस्तेमाल भी कर सकता है।

(i) Cu -----> Au & लगभग 17 प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉन चार्ज पूल में जमा हो जाएँगे।

(ii) Cl + लगभग 62 प्रोटॉन्स, न्यूट्रॉन्स और इलेक्ट्रॉन्स charge pool से chlorine के atom में जमा हो जाएँगे और इस तरह chlorine Aurum में बदल जाएगा।

Atom control होने के कारण full atomic उम्दा genetic engineer भी होते हैं। क्योंकि वो मनचाहे genes/genome भी बना सकते हैं। यानी मनचाही kingdom, phylum, class, order, family, genus, species. चूँकि वो किसी भी तरह के genes/genome synthesize कर सकते हैं तो वह mermaid, shinx, hydra जैसे प्राणी भी बना सकते हैं। जैसे हम इंसान पैसो से हर चीज खरीद सकते हैं। ठीक उसी तरह atomic की टकसाल का नाम nitrogen bases यानी purine & pyrimidine और charge (electron, proton, neutron; charge pool just like gene pool) है।

**Fuganism** :----- Fuganism = fusion + organism. सम्मिश्रित जीव यानी fusion of flora & fauna

(hydra), fusion of two or more organism (mermaid), fusion of living & nonliving (virus, गंगा जी और गंगा नदी)

Mermaid => fusion of woman & fish, जलपरी.

Sphinx => fusion of woman's head and lion's body.

Virus => According to the host virus may be living & nonliving.

Archaeopteryx => fusion of reptile & bird.

Flying snake => bird + reptile.

हमारी पौराणिक कथाओ मे भी faganism के उदाहरण मिलते है जैसे नल, नील, बाली, हनुमान जी => वानर + मानव। जटायु => भालू + मानव। गंगा जी => स्त्री + नदी। समेरु पर्वत => पुरुष + पर्वत। बरगद => पेड़ + पुरुष। तुलसी => स्त्री + पौधा। महिषासुर जो असुर भी बन जाता था और भैंसा (महीष) भी। मारीच राक्षस जो रामायण मे स्वर्ण हिरण बन सीता हरण के लिए जिम्मेदार बना। जो खुद को राक्षस (=मानव) से स्वर्ण हिरण मे बदल सकता था। स्वर्ण हिरण => स्वर्ण + हिरण => gold coating + हिरण => यानि सोना/रसायन/तत्व/element + हिरण (= biotic + abiotic) और सम्मिश्रण => राक्षस + हिरण + सोना/ Au + deer + demon. गंगा नदी (आंशिक आणविक/partial atomic like वरुण देव) => औरत + पानी /chemical. गंगा माँ अपने body cells को limitless पानी की बूंदों/पानी मे बदल सकते है। ठीक जैसे एक new mother अपने शरीर से दूध पैदा करती है। यानि अपने body cells, biotic material, biochemicals को दूध के molecules मे बदल देती है। दूध औरत के शरीर का हिस्सा होते हुए भी बड़े आराम से औरत के शरीर से अलग हो जाता है। जैसे नाखून, बाल, शू शू, पॉटी, आँसू, थूक आदि। ऐसे ही गंगा माँ अपने शरीर से infinite H<sub>2</sub>O पैदा कर सकते है। इतना पानी कि वह एक विशाल नदी का रूप धारण कर ले। या फिर वो वातवरण मे पानी बना उसे एक नदी का रूप दे सकते है। यानि transformation & nuclear transmutation. A woman with water plant/ water factory/water unit just like oyster/सीप।

इस धरती पर जो कुछ भी संजीव और निर्जीव वस्तुएँ दिखाई दे रही है। वो सब मेरे ही Bio cells से बनी हुई है। सब संजीव और निर्जीव मेरी ही multimorphologies है। मैं अपने ही शारीरिक कोशिकाओं की बनाई हुई ग्रहीय, तारामण्डलीय और ब्रह्मांडीय जेल (planetary, galactic or universal jails) मे कैद हूँ। तभी इस विशेष तौर से रचित और भ्रमित समाज मे जगतजननी, जगदंबा माता जी का वर्णन है।

**What is God & who is God: -----** भगवान होना भी जीव जगत और जीव विज्ञान (Bio world & biology/zoology) का ही एक हिस्सा है। ठीक जैसे microbes, invertebrates or vertebrates होते है। Class God (just like class birds, mammals etc.) अपने genes और अद्भुत क्षमताओ के कारण मानवो से उम्दा मानी जाती है। हम मानते है कि क्रमिक विकास हुआ। जैसे हम मानते है कि वानरो से मानव उत्पन्न हुए/विकसित हुए। पर यह क्रमिक विकास मात्र इंसानो पर ही नहीं रुक गया/थम गया। बल्कि यह क्रमिक विकास from humans to super humans/class God तक भी गया। वैज्ञानिको के अनुसार वानर इंसानो के genetically सब से नजदीकी रिश्तेदार है। क्योंकि वानरो का genome इंसानो के genome से थोड़ा सा (2-3 %) ही भिन्न है। Genome मे यह थोड़ी सी विभिन्नता ही इंसानो को वानरो के मुकाबले शारीरिक और मानसिक स्तर पर कितना श्रेष्ठ बना देती है। Genome मे यह थोड़ी सी भिन्नता के साथ ही हम physics, chemistry, zoology, botany, biochemistry, math, economics, genetics, literature, IT, internet,

electronics, machines, plants or factories, different types of languages, culture, norms, philosophies, values, religion, various types of arts, trades, entertainment, automobiles, air crafts, transport, communication, architecture, medicine, textiles, dress sense, cosmetics, hair styles, astronomy, palmistry, food stuffs, agriculture, livestock, poultry, aquaculture, apiculture, breeding, grafting...goes on... कहाँ कहाँ पहुँच गए !!!

ठीक ऐसे ही मानवो के genome मे mutation, modification, development हुई तो अगली class, kingdom अस्तित्व मे आई। क्रमिक विकास मे apes से सिर्फ humans ही नहीं बल्कि super humans भी पैदा हुए। जिसे हम भगवान/God कहते है। भगवान होना कोई बड़ी, अचंभित होने वाली बात नहीं। उनके genes/गुण ही उन्हें भगवान/चमत्कारी शक्तियो युक्त बनाते है। क्रमिक विकास का क्रम = वानर ---> मानव --> महामानव/भगवान। मानव अपने genes/गुणों के कारण मानव है और भगवान अपने genes/गुणों के कारण भगवान है।

Concept of Brahma, Vishnu or Mahesh, param shakti :----- ब्रह्मा,

विष्णु,महेश आदि पराभौतिक शक्तियो/super powers/Bio nuclear powers और BNW stratigists द्वारा designer

society/भ्रमित समाज मे just clues/hints छोड़े गए है और कुछ भी नहीं है। Universal government &

administration (UGA) मे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, परम शक्ति, वायुदेव, अग्निदेव, वरुण देव आदि सिर्फ

पद/post/designation भर ही है। हमारे ब्रह्माण्ड मे खरबो खरब ग्रह है। इन खरबो खरब ग्रहो पर ब्रह्मांडीय सरकार और

प्रशासन द्वारा कही ना कही सृजन, जीवन की पालना और प्रलय का क्रम चलता ही रहता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी के ऊपर

एक “परम शक्ति” (supreme power) है जो इन्हें आदेश देती है कि कौन सी galaxy/तारामंडल मे कौन से ग्रह पर सृजन,

जीवन की पालना और प्रलय करनी है। किस ग्रह पर कौन सा काल – सतयुग, द्वापर युग, त्रेता युग और कलयुग, आदिमानव

युग, पाषाण युग, लोह युग, कांस्य युग, औद्योगिक युग, jet or net age, computer age...होगा। अलग अलग तरह के

cultures ठीक जैसे इस वक्त हमारी धरती पर भी है – American culture, African culture, Middle east culture,

European culture, Asian culture, Indian culture, Punjabi culture, Bangali culture, Mongolian culture,

Hindu culture, Budha culture, Jain culture, Muslim culture, Christian culture, Sikh culture, ST culture

etc.

किस ग्रह के chemical texture के हिसाब से जीवन के कैसे कैसे प्रारूप होंगे। जैसे हमारी धरती पर oxygen, carbon, nitrogen, hydrogen थे शुरुआत मे तो Abiogenesis theory or The Oprin-Halden theory के हिसाब से जीवन की शुरुआत हुई। किसी और ग्रह पर chemicals, environment, conditions के हिसाब से abiogenesis theory apply होगी। या किसी और mechanism द्वारा जीवन पनपेगा। जीवन हर हाल मे, हर हालत मे, हर जगह पर पनपता है। जैसे हमारी

धरती पर ही बर्फीले इलाके, पहाड़ी इलाके, मरू इलाके, मैदान, पठार, मिट्टी के ऊपर, मिट्टी के नीचे, हवा में, पानी में fresh water, saline water, hot water spring, shallow water, under frozen seas, कीचड़ में, काई में यहाँ तक कि इंसानी शरीर के बहार, भीतर भी कई कई तरह के bacteria पलते/रहते हैं। जीवन अनंत, अकल्पनीय, अनंत, अकल्पनीय रूपों में है। BNW strategy के तहत हम से यह सब छुपाया गया है।

God range : ---- Universal government & administration में भी हमारी सरकारों की तरह President, Prime minister, Home minister, External affairs minister, Finance minister, Education minister...etc. होते हैं। ऐसे ही UGA में भी परम शक्ति, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, लक्ष्मी, सरस्वती, काली, पवन देव, अग्नि देव, वरुण देव, चंद्र देव, सूर्य देव, अश्विनी कुमार, इंद्र देव, ब्रह्मपति देव, यम आदि देव/मंत्री होते हैं। जिनके हिस्से उनके specific काम, कार्य क्षेत्र, authority, power, skill, caliber होते हैं। Just like हिंदी टीचर, मैथ टीचर, साइंस टीचर, इकनॉमिक टीचर, art & craft teacher etc. नर्सरी टीचर, प्राइमरी टीचर, हाई स्कूल टीचर, सीनियर सेकेंडरी स्कूल टीचर, कॉलेज टीचर, यूनिवर्सिटी टीचर => 0-100% atom को देखने और कंट्रोल करने की क्षमता => different ranks => range of gods और भूत, पिशाच, ऋषि मुनि, संत, महात्मा, सिद्ध पुरुष, देव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और परम शक्ति। जो प्राणी अणु को देख और नियंत्रित कर पाते हैं। उन्हें ही देव कहा जाता है। ठीक जैसे हमें इंसान कहा जाता है। घोड़े को घोड़ा कहा जाता है, शेर को शेर कहा जाता है। और मछली को मछली कहा जाता है। और हम जानते हैं कि मछलियाँ कई तरह की होती हैं। मछलियों में बहुत ही ज्यादा भिन्नता होती है। ठीक ऐसे ही अणु को नियंत्रित करने वाले प्राणी/देवता भी कई तरह के होते हैं। ये सब इस बात पर निर्भर करता है कि वो किस तरह के अणु, तत्व, रसायन को किस हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। Just like class fish, amphibians, reptiles, birds & mammals. There is one more class called class God, Atomic/partial atomic

UGA में परम शक्ति ही एक मात्र full atomic है। Just like President, Prime minister, King or Queen. Full atomic की kingdom, phylum, class, order, family, genus, species सब atomic ही होगा। क्योंकि यह शक्ति 100% atom को कंट्रोल करना जानती है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सरस्वती, लक्ष्मी और शक्ति/काली की तमाम शक्तियाँ होंगी। इन्हीं छः शक्तियों के कारण ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्डों में जीवन चलायमान है। सो ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सरस्वती, लक्ष्मी, काली परम शक्ति के मुकाबले 1/6th ही है शक्ति के मामले में। ब्रह्मा मंत्री (Generator) atom को सृजन के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं। जीवन की पालना या प्रलय के लिए नहीं। इनकी atomic power, skill, authority सृजन तक ही सिमित है। ऐसे ही विष्णु जी/विष्णु देव मंत्री (Operator) अपनी atomic authority, skill, power or bio nuclear power का इस्तेमाल सिर्फ जीवन की पालना में ही कर सकते हैं। सृजन या प्रलय में नहीं। ऐसे ही शिव (Destroyer) जी अपनी bio atomic authority, skill, power, caliber का इस्तेमाल प्रलय करने में ही कर सकते हैं। सृजन या पालना में नहीं। ठीक ऐसे ही पवनदेव/मंत्री के पास हवा के अणुओं को handle करने/नियंत्रित करने की power, authority, skill ,caliber होगा। Same in case of वरुण देव/मंत्री, अग्निदेव/मंत्री। सूर्य देवमंत्री nuclear reactions, fusion & fission देखेंगे। चंद्र देव मंत्री mode of communication. अश्विनी कुमार horse power, desirable power or types of power को देखेंगे। परम शक्ति को छोड़ कर यह सब देव/मंत्री partial atomic/आंशिक आणविक होंगे। क्योंकि इनके पास

सिर्फ एक ही गुण/मंत्रालय और सिर्फ एक ही तरह के अणुओं को कण्ट्रोल करने की क्षमता होती है। यह परम शक्ति की तरह all rounder नहीं होते। सो यह full atomic नहीं partial atomic ही होते हैं।

**Universal govt. & administration :----** जैसे हमारे देश की सरकार अपनी जनता को सारी जरूरी चीजे उपलब्ध करवाती है। उदाहरण के तौरपर खाद्य पदार्थ, पानी, वस्त्र, ग्रह निर्माण सामग्री, कच्चा माल, विभिन्न तरह की धातुएँ, उद्योग, यातायात, स्वास्थ्य सेवाएँ, कानून और व्यवस्था, सुरक्षा, नौकरियाँ, तरह तरह के मंत्रालय, शिक्षा, जीवन से जुड़ी तमाम दूसरी चीजे, custom & octroi, खेती बाड़ी, वन्य जीवन और जंगलात से जुड़े मुद्दे आदि। ऐसे ही UGA तमाम ग्रहो, तारामंडलो पर जीवन चलायमान रखने के लिए तमाम तरह की सुविधाएँ, जरूरते पूरी करती है। जैसे हमारी ही धरती पर पेट्रोल, डीज़ल, गैस खत्म हो जाए तो जीवन कितनी बुरी तरह से प्रभावित होगा। ऐसे ही हमारी धरती को इन प्राकृतिक संसाधनों का एक नियत कोटा, नियत अवधि के लिए ब्रह्मांडीय सरकार और प्रशासन द्वारा sanction होता है। उस कोटे को एक नियत समय अवधि तक इस्तेमाल करना होता है। जैसे एक नौकरीपेशा इंसान को पता है कि दस/बीस हजार रूपए/तनखाह में एक महीना पूरा गुजारना होता है। इस तरह आदमी अपनी needs & objectives दस/बीस हजार में तय कर लेता है। इस रकम में अपनी जरूरते, आकांक्षाओं और बचत की लिमिट बांध लेता है। एक महीने के बाद फिर उसे दस/बीस हजार रूपए मिल जाते हैं। ऐसे ही universal govt. हमारी धरती पर विभिन्न देशों को एक निश्चित अवधि के लिए इन प्राकृतिक संसाधनों का एक नियत/तयशुदा कोटा देती है। वर्ना जिस गति से हम प्रतिदिन पेट्रोल, डीज़ल, गैस का अंधा धुंध इस्तेमाल करते हैं तो झट ही यह natural nonrenewable resources खत्म हो जाए। प्रति दिन स्कूटर, मोटरसाइकिल, कारो, बसो, विमानो, उद्योगो, रक्षा विभाग, मनोरंजन आदि के क्षेत्र में हम कितना कितना पेट्रोल, डीज़ल, गैस का अंधाधुंध इस्तेमाल कर रहे हैं। सतयुग के जमाने से ही भारतीय महिलाएँ सोने चांदी के लिए दीवानी रही हैं। तब से ही खाने और औषधियाँ बनाने के लिए सोने-चांदी का इस्तेमाल हो रहा है। लोह युग से लेकर अब तक हम कितना कितना लोहा इस्तेमाल कर चुके होंगे ! आखिर हमारी धरती धरती ही है छोटी सी, कोई घाघर में सागर तो नहीं।

कहते हैं कि धरती इतनी छोटी है कि मात्र एक बृहस्पति ग्रह में बारह सौ से ज्यादा धरतियाँ समा जाएँ। अभी मैंने सूर्य से धरती की तुलना नहीं की है। फिर इस छोटे से ग्रह पर भी सत्तर प्रतिशत पानी है। बाकी बची सतही जगह पर भी कहीं पहाड़, पठार, रेगिस्तान, बर्फ, जंगल, मैदान, नदियाँ, दरिया, नाले, बंजर जगह, खेती बाड़ी वाली जगह, रिहायशी जगह, उद्योग वगैरा हैं। इस छोटी सी बची जगह में कितनी खाने हो सकती है ? और ये खाने हमारे विभिन्न तरह के संसाधनों के लगातार, अंधाधुंध इस्तेमाल करने के ढंग से कितनी देर तक चल सकती है ? युगो तक... हरगिज भी नहीं!!!

जैसे हम प्रतिदिन, लगातार अंधाधुंध इन natural non renewable resources का इस्तेमाल कर रहे हैं। हमारी ऐसी जरूरतों को कौन पूरा करता है ? इन सब बातों का clue हमारी "specially designed society" की पौराणिक कथाओं में मिलता है। जैसे पवनदेव, अग्नि देव, वरुण देव आदि। जैसे आजकल हमारे उद्योग, वाहन, जीवन शैली प्रदूषण बढ़ा रहे हैं। तब



तो सतयुग था। तब कौन सी ऐसी जीवन शैली थी, उद्योग, वाहन थे जो प्रदूषण बढ़ाते थे ? तो ऐसे में सोचने वाली बात यह है कि सतयुग में वायु देव, वरुण देव, अग्नि देव, सूर्य देव और चंद्र देव आदि का क्या काम ? आखिर क्यों BNW or designer society में इन देवों का जिक्र है ? वायु तो चलायमान है। विज्ञान के नियमों के तहत कम, अधिक और प्रचंड गति से बहती ही रहती है। यह सब clues है ठीक जैसे हमारी सरकारों में मंत्री होते हैं ठीक ऐसे ही ब्रह्मांडीय सरकार में देव होते हैं। In BNW मंत्री राष्ट्रीय सरकार में होते हैं ठीक ऐसे ही ब्रह्मांडीय सरकार में देव होते हैं। In BNW मंत्री => देव, यानि देव और मंत्री एक ही बात है पर मंत्री kingdom Animalia में आते हैं और देव kingdom Atomic में। परम शक्ति को छोड़ कर सब देव/ब्रह्मांडीय मंत्री partial atomic होंगे। मंत्रियों में यांत्रिक गुण सारणी (Manual & mechanical genome) होगी और देवों में आंशिक आणविक गुण सारणी (partial atomic genome) होगी। और super power से लैस यह विभिन्न देव अपनी specific power, authority, skill, caliber के हिसाब से और अणु को नियंत्रित करने के हिसाब से Universal govt. & administration में लोह देव/मंत्री, कोयला देव/मंत्री, सोना देव/मंत्री, चांदी देव/मंत्री, तांबा देव/मंत्री, अभ्रक देव/मंत्री, प्लैटिनम देव/मंत्री .....आदि होंगे।

यह देव/UGA के मंत्री, इनके पास जो जो specific atom को कण्ट्रोल करने की authority, skill, power, caliber है उसके हिसाब से यह विभिन्न ग्रहों को अपनी हिस्से आते natural resources का कोटा/mine/खान allot करते हैं। परम शक्ति (like president or prime minister) दूसरे सभी देवों/मंत्रियों को आदेश देती है कि किस तारामंडल के किस ग्रह पर सृजन, जीवन की पालना और प्रलय करनी है। किस ग्रह पर किस देव/age/युग का वर्चस्व होगा ? जैसे पाषाण युग, कांस्य युग, लोह युग आदि। हर ग्रह के उसके specific environment, chemicals के हिसाब से कैसे – 2 जीवन के प्रारूप होंगे ? किसी synthetic planet का biotic or abiotic world कैसा होगा .... आदि।

**भ्रमित समाज/Designer society :---** इसी ब्रह्मांडीय सरकार ने धरती नाम के ग्रह पर/युद्धभूमि/BNW battle field पर bio nuclear war का set लगाया हुआ है। युद्ध शैली, युद्धभूमि, हथियार, सेना, जरूरी दूसरे संसाधन “लक्ष्य” के हिसाब से ही निर्धारित होते हैं। जैविक नाभिकीय युद्ध में microscopic Atomic genome/AG लक्ष्य पर है। वो genes जो इंसान के germ cells में मौजूद होते हैं। AG तक सिर्फ inter course process द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। और इसके लिए शादी सबसे आसान, सामाजिक, न्याय संगत, तर्क संगत, बिना किसी झमेले के सुगम रास्ता है। और यह BNW or genetic war (=> war for genes) आगे जा कर Bio nuclear chain war/bio chain war, genetic chain war में भी बदल सकती है। यानि पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला युद्ध। औसतन BNW 100 साल की समय अवधि की होती है। पर (+,-) सौ साल की समय अवधि की भी हो सकती है। इसका मतलब है कि दोनों तरफ की सेनाओं को औसतन 100 साल युद्धभूमि/धरती पर रहना है। इन्हीं सब कारणों के कारण bio nuclear war सामाजिकता के परिदृश्य में (भ्रमित समाज) में लड़ी/रची जाती है। क्योंकि subject को पता नहीं चलना चाहिए कि वो एक युद्ध में है, कि उसके दुश्मन/पति उस से उसकी आणविक गुण सारणी चुराना, छीनना, लूटना चाहता है। सचेत होने पर, ज्ञान होने पर कौन अपनी आणविक गुण सारणी ज्यूँ ही दे देगा। जब कि उसे पता भी है कि यही आणविक गुण सारणी वो authority, power है जिसके दम पर वो ब्रह्मांडों की शासक बन सकती है और वो आणविक गुण सारणी उसकी ही है। बाकी तो इस धरती/युद्ध भूमि पर सब चोर ही है। तभी यह युद्ध शैली भ्रम, अज्ञान, अंधेरे, छल, मिथ्य में चलती है।

इस पूरी धरती नाम के ग्रह/युद्धभूमि पर एक भ्रमित समाज रचा गया है। क्योंकि “परम शक्ति” और ब्रह्मांडीय सरकार के अंतर्गत तमाम तरह के ग्रह, तारामंडल और ब्रह्माण्ड आते हैं। इस तरह परम शक्ति के पास खरबो खरब ग्रह हैं। वो किसी भी एक पूरे ग्रह को अपनी निजी काम के लिए इस्तेमाल कर सकती है। या फिर जरूरत के हिसाब से और अपनी किसी निजी काम के लिए या जैविक नाभिकीय युद्ध के लिए विशेषतौर पर किसी ग्रह का, तारामंडल का और ब्रह्माण्ड का सृजन (कृत्रिम निर्माण, रचित ग्रह, designer planet, just like artificial stellite) भी कर सकती है।

यानि BNW की needs & objectives के हिसाब से एक designer society, illusive world, fake world/universe को design किया गया है और बनाया गया है। और हमे बाकी सारे ब्रह्माण्ड/ब्रह्माण्डो से अलग थलग कर, इस धरती पर कैद करके रखा गया है। और हमे SP (super powers) द्वारा भ्रमित कर के रखा गया है कि जीवन सिर्फ हमारी धरती पर ही है। वो भी खरबो खरब ग्रह हमारे ब्रह्माण्ड मे होने के वावजूद ! जीवन के विभिन्न और दूसरे कई प्रारूप होने के बावजूद भी !! यह कतई सच नहीं, भ्रम है, मिथ्य है, छल है SP का। हम “धरती” नामक युद्धभूमि just like “कुरुक्षेत्र और BNW के set/रंगमंच पर रह रहे हैं। यहाँ natural कुछ भी नहीं है। हर एक चीज चाहे वो tangible हो या intangible हो, universal war strategists द्वारा युद्ध की needs & objectives को ध्यान मे रखते हुए specially design की गई है। हमारी धरती पर जीवन 3 अप्रैल, 1975 से ही शुरू हुआ है। और यही मेरी जन्म तारीख भी है। मेरे “सुमिता धीमान” के नाम के साथ इस धरती पर अवतरित/जन्म लेते ही यह युद्ध शुरू हुआ है। इससे पहले इस धरती नाम के ग्रह का और आकाश गंगा नाम के तारामंडल का ब्रह्माण्ड मे कोई वजूद ही नहीं था। अगर हम अपने आस पास ध्यान से देखे और अगर हमे BNW की basic जानकारी हो तो हम BNW language को पढ़ और समझ सकते हैं। जिससे हरेक चीज यानि हर एक चीज दृश्यमान और अदृश्य/ tangible or intangible, खुद बा खुद BNW की जानकारी/clues बतानी शुरू कर देती है। जैसे विज्ञान, भूगोल, इतिहास, दिन त्यौहार, धर्म, आदर्श, दर्शन, कद्र कीमते, साहित्य, लेखन कार्य, संस्कृति, भावनाएँ, मान्यताएँ, अन्धविश्वास, जीवन शैली …..आदि आदि। हर एक चीज …2…3…4…हर एक चीज किताब बन जाती है। जो हमे BNW के clues, जानकारी देते हैं। हमारी पृथ्वी, देश, राज्य, शहर, मोहल्ले आदि मे BNW के अनंत -2-3-4-5 clues SP द्वारा छोडे गए हैं। उन मे से चंद clues की चर्चा, clues की संक्षिप्त सी ही जानकारी मैं यहाँ दे रही हूँ। वैसे भी कहते हैं कि अक्लमंद को इशारा ही काफी होता है। इन clues की जानकारी हम विज्ञान के क्षेत्र से आरम्भ करते हैं ----

**जैविक और विकासवादी कारक** - Biological & Evolutionary factors : ---- हम इंसान को सबसे

ज्यादा विकसित जीव मानते हैं। पर जब हम विज्ञान और जीव विज्ञान के मापदंडो से इंसान को परखते हैं तो ऐसा सिद्ध होता है कि इंसान से ज्यादा अपंग/retarded और कोई जीव है ही नहीं ! क्योंकि प्रकृति का पहला सिद्धांत ही यही है कि नए उत्पन्न किए गए जीवन को और किसी भी जाति को जीवित और बहुत ही लम्बे समय तक बनाए रखना। यह नहीं कि इधर किसी जाति को उत्पन्न किया और उधर वो जाति 4-5 पीढ़ियों के बाद लुप्त हो जाए। क्रमिक विकास का मतलब ही यही है कि धीरे धीरे ऐसा विकास करना कि कोई भी जीव, जाति सफलतापूर्वक अपने अपने वातावरण मे रह सके और अपनी जरूरतों से दो-चार हो सके। यानि ऐसी जाति बनानी जो स्वयं मे sufficient & efficient हो, जो स्वावलम्बी हो। और इस तरह वो जीव और जाति लम्बे समय तक बनी रह सके। इंसान इन सब biological or evolutionary मापदंडो मे बुरी तरह से असफल हो जाता है। इंसान जीवन के लिए जरूरी हर पहलु मे बुरी तरह से अपंग है। इंसान मे यह अपंगता, विकार और कमियाँ घातक और जान

लेवा है। और यह सब कमियाँ biological or evolutionary है। अगर सच में क्रमिक विकास इस धरती पर हुआ होता और इंसान सच में इस विकास से गुजरा होता तो इंसान में यह सब घातक biological & evolutionary drawbacks और जैविक और विकासवादी विकार ना होते। यह सब biological & evolutionary drawbacks designer है। जैविक

नाभिकीय युद्ध की जरूरतों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए। अगर क्रमिक विकास और प्रकृति किसी भी प्राणी और जाति का सृजन करती है तो क्रमिक विकास और प्रकृति की यही सबसे जरूरी प्राथमिकता रहेगी कि उसके द्वारा उत्पन्न की गई जाति और जीव लम्बे समय तक जीवित रहे। तभी सृजन का फायदा है। वर्ना नई जाति और जीव बनाने का क्या फायदा ? वर्ना ऐसा जीव और नई जाति बनाने का क्या फायदा जो कुछ पीढ़ियों बाद लुप्त हो जाए। प्रकृति एक माँ की तरह होती है। सो यकीनन उस नई रची गई जाति और प्राणी को क्रमिक विकास और प्रकृति वह सभी चीजें, सुविधाएँ उपलब्ध करवाएगी जिससे बनाई गई नई जाति सफलतापूर्वक अपने हर तरह के वातावरण और दूसरे जीव जंतुओं, पेड़ पौधों, वनस्पतियों, सूक्ष्म जगत जैसे बैक्टीरिया, वायरस आदि और विभिन्न तरह के रसायनों के बीच आराम से इज्जत के साथ और अमन पूर्वक रह सके। कोई भी सफल सृजन तब होगा जो युगो तक चले नाकि कुछ पीढ़ियों बाद सिमिट जाए और लुप्त हो जाए।

जैसे परमाणु युद्ध के कारण जापानियों में radiations/विकरणों के कारण शारीरिक और genetic/अनुवंशिकिय disorders/विकार हो गए थे। ठीक इसी तरह जैविक नाभिकीय युद्ध के कारण सम्पूर्ण मानव जाति में biological or evolutionary विकार है। ऐसे घातक विकार क्रमिक विकास की बदौलत तो हरगिज भी नहीं हो सकते। यह विकार विशेषतौर से जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए रचे गए हैं। ऐसे विकार क्रमिक विकास और प्रकृति की देन तो हरगिज नहीं हैं। ऐसे घातक विकारों के साथ इंसानी जाति 2-4-5 पीढ़ियों तक ही जीवित बच पाती। इंसानी जात का लाखों सालों का इतिहास नहीं होता। biological & evolutionary विकारों में इंसान में शारीरिक, मानसिक और यौन विकार आते हैं। इन शारीरिक, मानसिक, और यौन विकारों को जानने के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि हम जाने क्रमिक (धीरे धीरे-gradual development, क्रम से चलने वाला) विकास क्या है ?

क्रमिक विकास : ---- वो विकास जो क्रम से, धीरे धीरे चले। इंसान का क्रमिक विकास हुआ। यह सब मिथ्य है। विकास है क्या ? आखिर विकास की परिभाषा क्या है ? विकास एक प्रकार से ऐसी आंतरिक शक्ति है जो किसी प्राणी, जाति को उन्नति की ओर ले जाती है। विकास उस स्थिति का नाम है जिससे प्राणी में कार्य क्षमता बढ़ती है। विकास को एक तरह से अभिवृद्धि/accretion भी कहा जाता है। सो विकास का मतलब होता है कुछ अच्छा होना, कुछ बढ़िया होना, कुछ फायदे का होना, कोई उन्नति, कोई उत्थान होना। करोड़ों सालों के क्रमिक विकास में इंसान के साथ तो ऐसा कुछ हुआ दिखाई नहीं देता। इस क्रमिक विकास में जितना इंसान का पतन हुआ। उसकी कहीं और दूसरी मिसाल नहीं मिलती। इस क्रमिक विकास में इंसान upgrade नहीं degrade हुआ है। चारों तरफ से बुरी तरह से clean bowled हुआ है। पर BNW का चक्रव्यू रचने वालों ने इंसान के दिमाग की ऐसी जबरदस्त प्रोग्रामिंग की है कि इंसान को लगे कि वह सबसे ज्यादा विकसित प्राणी है। ऐसा भ्रम, मिथ्य, झूठ का चक्रव्यू जिसने इंसान को बुरी तरह से भ्रमित, सम्मोहित, गुमराह कर रखा है। छलावा, मायाजाल, भ्रम, चक्रव्यू। क्योंकि इंसान ने कुछ का चीजों का आविष्कार जो कर लिए ! कुछ उद्योग जो स्थापित किए। कला के विभिन्न पहलुओं में कुछ का विकास किया। खेती बाड़ी में बढ़िया स्थान बनाया। तरह तरह की मशीनें और हथियार बना लिए। चाँद का सफर किया। यातायात का विकास किया। चिकित्सा के क्षेत्र में काफी उन्नति की। वातावरण और जरूरत के हिसाब से कपड़ों को बनाया। गृह निर्माण कला को उन्नत किया। भाषा का आविष्कार किया। विज्ञान, गणित, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र, कंप्यूटर

साइंस, गृह विज्ञान, कॉमर्स आदि विषयो पर व्यापक जानकारी हासिल की। क्या यह सब हमारे सब से ज्यादा विकसित होने के उदाहरण है ? क्या इन्हीं के दम पर हम खुद को दूसरे प्राणियों के मुकाबले सर्वश्रेष्ठ या सब से ज्यादा विकसित कह सकते हैं ? यह आविष्कार, उद्योग, खेती-बाड़ी, मशीने, हथियार, दवाएँ, कपड़े, वाहन, सुविधाएँ इत्यादि इंसानी दिमाग की श्रेष्ठता के परिणाम तो हो सकते हैं। क्योंकि ऐसे आविष्कार और चमत्कार आज तक इस धरती पर और कोई प्राणी नहीं कर पाया। पर इन सब के बिना इंसानी जीवन संभव ही ना हो, इंसान को बुरी तरह से इन सब पर आश्रित होना पड़े तो यह सब BNW की जरूरतों के हिसाब से रचित मानव/designer human और अपंगता के पुख्ता सबूत है। SP द्वारा हम कुछ इस तरह से भ्रमित, छले गए हैं कि सच को समझ ही नहीं पा रहे। हमे वास्तविक सच से कोसो दूर रखा गया है। Biologically और क्रमिक विकास के नजरिए से हम इंसान इन सब आविष्कारों और उपलधियों के दम पर खुद को श्रेष्ठ सिद्ध नहीं कर सकते। इन सब आविष्कारों और उपलधियों के बावजूद इंसान को अपंग, वो भी बहुत उच्च स्तर का अपंग ही माना जाएगा। सब से ज्यादा विकसित प्राणी नहीं। क्योंकि क्रमिक विकास के दौरान इंसान ने हर वो चीज खो दी (degrade) जो जिन्दा रहने के लिए अति जरूरी थी और इंसान/जाति का जीवित रहना, रखना ही क्रमिक विकास की सब से बड़ी प्राथमिकता है। पर क्रमिक विकास में biologically हम इस हिसाब से विकसित हुए हैं कि मुझे तो इंसानी जात के बचे रहने पर ही हैरानी है और इंसान होने पर शर्म महसूस होती है।

हम अपने natural selection or survival of the fittest के कारण जीवित नहीं हैं। हम उन बैसाखियों/accessories के कारण जीवित हैं। जिन पर हम बुरी तरह से आश्रित हैं जैसे कि घर, हीटर, पंखा, कूलर, ac, वातावरण के हिसाब से गर्म और ठण्डे कपड़े, मौसम के हिसाब से खाना पीना, वाहन, दवाएँ इत्यादि। हम इन बैसाखियों के कारण जीवित हैं ना कि naturally selected or survival of the fittest होने के वरम के दम पर। किसी पराभौतिक शक्ति ने हमे यह समझा दिया कि यह यह क्रमिक विकास है तो हमने मान लिया कि यह यह क्रमिक विकास है। वास्तव में क्रमिक विकास में इंसान के साथ जो हुआ उसे क्रमिक सर्वपक्षीय पतन कहेंगे।

क्रमिक विकास के सिद्धांत : -----वैज्ञानिक मानते हैं कि क्रमिक विकास कुछ सिद्धांतों पर हुआ। पर यह सोचने वाली बात है कि क्या सच में इंसानों का क्रमिक विकास सिद्धांतों के हिसाब से हुआ ? और इस क्रमिक विकास में इंसान का उत्थान हुआ या पतन ? इस अवलोकन द्वारा यह पता चलेगा कि SP ने इंसान को कितना मूर्ख, भ्रमित, मिथ्य जाल में फंसा रखा है। इससे यह भी सिद्ध होगा कि इंसान एक रचित कृति है। जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए। कोई प्रकृति का और क्रमिक विकास का परिणाम नहीं जैसा कि होता है, जैसा कि होना चाहिए था। क्योंकि क्रमिक विकास में इंसान के साथ जो हुआ उसे विकास तो हरगिज भी नहीं कह सकते। क्रमिक विकास निम्नलिखित सिद्धांतों पर हुआ : ----

1) सर्वपक्षीय विकास : --- सर्वपक्षीय विकास (All round development) का सीधा सा मतलब है कि जो भी विकास होगा वो सर्व पक्षीय होगा। इंसानी शरीर को विज्ञान तीन स्तरों पर विभाजित करता है : शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर और योन स्तर/गुणिय स्तर और genetic level. इस सिद्धांत के अनुसार जो भी विकास होगा। वह एक साथ तीनों स्तरों : शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर और योन स्तर पर एक साथ होगा। एक या दो स्तरों पर हुए विकास को विकास नहीं माना जाएगा। उदाहरण के तौर पर मान लो कि क्रमिक विकास के दौरान बन्दर से इंसान बनते हुए बन्दर के मानसिक स्तर पर इतना विकास हो गया कि वह किसी भाषा को इजाद कर सके, बना सके पर उसके शारीरिक स्तर पर इतना विकास नहीं हुआ कि वह कोई भाषा बोल सके या लिख सके। बन्दर द्वारा बनाई हुई भाषा बन्दर के दिमाग में ही रह जाएगी। क्योंकि बन्दर के शारीरिक स्तर पर, vocal cords or हाथों में इतना विकास ही नहीं हुआ कि vocal cords किसी भाषा को बोल सके और हाथ किसी भाषा को लिख सके। इसी तरह मान लो कि बन्दर से इंसान बनते हुए बन्दर के शारीरिक स्तर में तो इतना विकास हो जाए कि उसके

vocal cords किसी भाषा को बोल सके और हाथ किसी भाषा को लिख सके पर उसके मानसिक स्तर पर इतना विकास ही ना हो कि वो कोई भाषा की खोज कर सके। क्योंकि दिमाग के पास कोई भाषा ही नहीं है तो शरीर किस भाषा को बोलेगा और लिखेगा ? तो इस तरह सिर्फ शारीरिक स्तर पर हुए विकास का कोई महत्व नहीं। इस प्रकार सिर्फ शारीरिक स्तर पर हुए विकास को विकास नहीं कहा जाएगा। इस तरह मानसिक स्तर पर कोई ना विकास होने के कारण सिर्फ शारीरिक स्तर पर हुआ विकास बेमानी हो जाएगा। अब मान लो कि बन्दर से इंसान बनते हुए, बन्दर के दिमाग और शरीर में तो इतना विकास हो जाए कि दिमाग कोई भाषा को खोज सके और रच सके और शरीर उस भाषा को बोल सके और लिख सके। पर बन्दर के योन स्तर और गुणिय स्तर पर कोई विकास ही ना हो तो यह भाषा को इजाजत करने वाला गुण, भाषा को लिख पाने वाला गुण और भाषा को बोल पाने वाला गुण उस व्यक्ति की मौत के साथ ही खत्म हो जाएगा। अगर हम चाहते हैं कि विकसित हुआ गुण पीढ़ी दर पीढ़ी चले तो यह विकास बन्दर के योन स्तर/गुणिय स्तर पर भी होना चाहिए। तांकि विकसित हुआ गुण पीढ़ी दर पीढ़ी चल सके। तभी कोई विकास सही मायनो में विकास कहलाएगा।

2) अगला वंश सुधारो के साथ : ---- अगला वंश सुधारो के साथ (Descent with modification, decency) का मतलब बंदरो से इंसान रातो रात तो नहीं बन गए। यह प्रक्रिया कोई mutation or abrupt change नहीं थी। बल्कि यह एक क्रमिक विकास था। इस क्रमिक विकास में किसी पीढ़ी में कोई विकास हुआ और किसी पीढ़ी में कोई विकास हुआ। यह विकास/बदलाव पीढ़ी दर पीढ़ी होते गए और बढ़ते गए। इस क्रमिक विकास में बन्दर से इंसान बनते हुए इंसान में वह वह गुण, विशेषताएँ, चीजे जमा होती गईं जो इंसान के काम की थी और जो जो चीजे इंसान के काम की नहीं थी, उनका निकास होता गया। उदहारण के तौर पर पूँछ। रीड की हड्डी में विकास होने के कारण इंसान ने सीधे खड़ा हो चलना सीख लिया। अब विकसित हुए इंसान को संतुलन बनाने के लिए बन्दर की तरह पूँछ की जरूरत नहीं थी। सो इस क्रमिक विकास में पूँछ का निकास हो गया। खाने पीने का ढंग बदला तो vermiform appendix nonfunctional हो गई। पीढ़ी दर पीढ़ी हाथ, पैर, शरीर और दिमाग में जो जो बदलाव, विकास होते गए। वह सब बदलाव और विकास इंसान के लिए फायदे वाले थे। तो वो सब इंसान में जमा होते गए। इस तरह धीरे धीरे आखिरकार मौजूदा इंसान वजूद में आया।

अब देखते हैं कि सच में इंसान में क्रमिक विकास हुआ ? और क्या यह क्रमिक विकास के “सर्वपक्षीय विकास” और “अगला वंश सुधारो के साथ” के अनुरूप हुआ है ? मुख्य मुद्दा यह है कि क्रमिक विकास में इंसान का विकास हुआ या पतन ? इंसान प्रकृति द्वारा और क्रमिक विकास द्वारा बनाया गया है और उत्पन्न हुआ है या यह SP द्वारा जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए रचा गया है ? तांकि पराभौतिक शक्तियाँ इंसान को अपने मन चाहे ढंग से इस्तेमाल कर सके। यह जाँच शारीरिक, मानसिक और योन स्तर पर होगी : ----

शारीरिक स्तर : ----शारीरिक स्तर में इंसान में क्रमिक विकास के कारण अवगुण ही अवगुण इकट्ठे हुए हैं। मुझे गुण तो एक भी दिखाई नहीं देता। इंसान में एक भी ऐसा कोई गुण दिखाई नहीं देता, जिससे हम शान से कह सके कि इंसान में यह Biological & evolutionary development हुई। इंसान में कोई ऐसा कारगर गुण दिखाई नहीं देता। जिसके दम पर हम कह सके कि मानव जाति में “सर्वपक्षीय विकास” और “अगला वंश सुधारो के साथ” हुआ। इंसान में सुधार और विकास के नाम पर विकार विकार ही इकट्ठे हुए। और भी चिंता की बात कि अधिकतर विकार बहुत ही घातक हैं। आप खुद ही तय करें कि शारीरिक स्तर पर इंसान के साथ जो हुआ उसे विकास कहेंगे या पतन : ----

अनुकूलन : --- यही clue इंसान के designer होने का और पराभौतिक शक्तियों द्वारा बुरी तरह से नियंत्रित और भ्रमित किए जाने का पुख्ता सबूत है। हम मानते हैं कि हम गर्म खून वाले प्राणी हैं। पर हमारे सारे ही लक्षण ठण्डे खून वाले प्राणियों के हैं।

तापमान इतना महत्वपूर्ण कारक है कि यह किसी भी प्राणी को जीवन या मृत्यु दे सकता है। जो प्राणी या जाति अपने आस पास के वातावरण से अनुकूलन (adaptation) स्थापित नहीं करती। वह प्राणी और जाति जीवित नहीं बचती। जैसे सफेद भालू, पेंगुइन, सील इतनी भयंकर सर्दी (- 60 degree celcius) के साथ अनुकूलन स्थापित करते हैं। यह प्राणी इतनी ठण्ड बर्दाश कर पाते हैं तभी ये वहां के ऐसे निष्ठुर वातावरण में भी जीवित रह पाते हैं। दो से तीन किलोमीटर मोटी परत तक जमे समुन्द्रों के नीचे भी जीवन सफलतापूर्वक रहता है। क्योंकि वह वहां के वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। उन में इस हद तक ठंडा वातावरण बर्दाश करने की क्षमता अपने genes/गुणों के कारण आती है। ठीक ऐसे ही रेगिस्तान और शुष्क इलाकों में पाए जाने वाले ऊँठ, दूसरे जीव जंतु, पक्षी, कीड़े मकोड़े, सूक्ष्म जीव और पेड़ पौधे आदि वहां की भयंकर गर्मी (+45 से +50 degree celcius) से अनुकूलन स्थापित करते हैं। यह जानवर और पेड़ पौधे आदि अपने वातावरण की इतनी गर्मी सह लेते हैं तभी वहां के वातावरण में जीवित रह पाते हैं। इन जीवों और पेड़ पौधों के genes/गुण इनको इतनी गर्मी सहने के काबिल बनाते हैं। क्या हम पूरी गर्मी, पूरी सर्दी, सर्दियों में होने वाली बरसात, बर्फबारी, आंधी तूफान आदि खुले में अपने दम पर भालू, सील, पेंगुइन, ऊँठ, हाथी, चिड़िया, तोता, गाय, कबूतर, शेर आदि की तरह सह सकते हैं ?

हम गर्म खून वाले प्राणी हैं। यह मात्र हमारा वहम है। हमारे वास्तव में सारे ठण्डे खून वाले प्राणियों के लक्षण हैं। वातावरण में गर्मी बढ़ने से हमारा शरीर गर्म होने लगता है और वातावरण में ठण्ड बढ़ने से हमारा शरीर ठंडा पड़ने लगता है। निर्जीव वस्तुओं, धातुओं की तरह हमारा शरीर वातावरण की गर्मी सर्दी बढ़ने से खतरनाक सीमा तक गर्म या ठंडा पड़ सकता है और इंसानी शरीर इतना गर्म या ठंडा पड़ जाता है कि यह इंसान के मौत की भी वजह बन जाता है। जबकि दूसरे प्राणी गाए, तोता, चिड़िया, हाथी, ऊँठ, ध्रुवीय भालू, सील, पेंगुइन, शार्क, व्हेल, सूक्ष्मजीव और पेड़ पौधे अपने अपने वातावरण की गर्मी सर्दी, बारिश, बर्फबारी खुले में बिना पंखे, शीतल पेयजल, चाय-कॉफ़ी, सूती व गर्म कपड़े, घर और हीटर आदि के बर्दाश कर लेते हैं। गर्म खून वाले प्राणियों का मतलब ही यही है कि बाहर के वातावरण का तापमान कितना भी कम या ज्यादा हो। इस बात से बेफिक्र गर्म खून वाले प्राणी का तापमान स्थिर रहता है। जैसे हम इंसानों के शरीर का तापमान 98.4 degree Celsius है तो बाहर का तापमान चाहे (-70) degree Celsius हो या (+70) degree Celsius हो। इंसानी शरीर इस बात से बेफिक्र अपना तापमान स्थिर 98.4 degree Celsius बनाए रखेगा। पर ऐसा नहीं होता। क्या हमारे साथ अगला वंश सुधारों के साथ हुआ? क्या क्रमिक विकास को वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने वाला गुण, वरदान इंसान के लिए जरूरी नहीं लगा? जो इस क्रमिक विकास के दौरान इंसान से यह गुण छीन लिया ! क्रमिक विकास में इंसान अनुकूलन के मामले में upgrade हुआ या degrade हुआ ? वास्तव में ठण्डे खून वाले प्राणी और गर्म खून वाले प्राणियों की हमारी परिभाषा ही गलत है।

Partial warm blooded : --- यानि अधूरे गर्म खून वाले प्राणी । ऐसे प्राणी अपने अपने इलाके की चरम चरम सीमा तक की गर्मी या सर्दी सह लेते हैं। जैसे ध्रुवीय भालू और अंटार्कटिक में जमे हुए समुन्द्र के नीचे भिन्न भिन्न तरह का जीवन फलता फूलता रहता है और रेगिस्तान या गर्म इलाकों में ऊँठ, वहां पाए जाने वाले दूसरे प्राणी, पक्षी, कीड़े मकोड़े, सूक्ष्मदर्शी, पेड़ पौधे आदि। यह अपने अपने इलाके में अपने अपने इलाके की चरम गर्मी और चरम पड़ने वाली ठण्ड के अनुकूल हैं। पर यह दूसरे वातावरण में रहने के अनुकूल नहीं हैं। जैसे ध्रुवीय भालू सहारा रेगिस्तान में नहीं रह सकता और ऊँठ north pole में नहीं रह सकता। अर्थात् यह अर्ध गर्म खून वाले प्राणी हैं। यह या तो गर्मी में रह सकते हैं या फिर ठण्ड में।

Pseudo warm blooded : ----- छदम् गर्म खून वाले प्राणियो मे मैदानी इलाको मे पाए जाने वाले जीव आते है। जैसे तोता, चिड़िया, घोड़ा, गाए, बन्दर, बिल्ली, कुत्ता आदि। मैदानी इलाको मे ना तो चरम सीमा तक की गर्मी पड़ती है और ना ही चरम सीमा तक की सर्दी। ऐसे प्राणी एक सीमा तक अपने अपने इलाके मे पड़ने वाली गर्मी, सर्दी दोनो सह लेते है। पर एक निश्चित सीमा से ऊपर की गर्मी, सर्दी नहीं सह पाते है। अगर एक तय सीमा से ऊपर की गर्मी सर्दी हो तो यह प्राणी मर जाते है।

Real warm blooded : ----- ऐसे प्राणी होते तो है पर यह BNW की युद्धभूमि पर नहीं पाए जाते। यानि ऐसे प्राणी हमारी धरती पर नहीं है अर्थात् हमारी धरती पर इनका कोई वजूद नहीं है। ऐसे प्राणियो के लिए तापमान की कोई सीमा नहीं होती। यह प्राण - 60 degree Celsius or + 60 degree Celsius के कही ऊपर या नीचे का तापमान सह लेते हैं। अर्थात् इन्हें north pole से ले कर सहारा रेगिस्तान तक के वातावरण मे कोई दिक्कत नहीं। इन्हें गर्म और सूती कपड़ो की कोई जरूरत नहीं। इनका शरीर अपने आप बैसाखियो की मदद के बिना हर तरह के वातावरण मे सामंजस्य स्थापित करना जनता है। फिर वही बात। ऐसे प्राणियो के पास ऐसे genes/गुण है जो इन्हें भीष्म गर्मी और भीष्म ठण्ड मे रहने के काबिल बनाते है। जैसे शिव जी कैलाश मे भी रह लेते है और उज्जैन, रामेस्वरम मे भी मात्र बाघम्बर पहने हुए। सूर्य देव, जो सूरज सी ऊष्मा और गर्मी सह लेते है। शीतल चंद्र देव। गैसो के भँवर और तूफान मे बृहस्पति देव जी।

धरती पर क्रमिक विकास पहले से ही ऐसे जीव जंतु, पशु पक्षी, सूक्ष्मदर्शी, पेड़ पौधे आदि बना चुक्का था जो अपने अपने इलाके की गर्मी सर्दी दोनो झेल लेते थे। क्रमिक विकास को अगला कोई और ज्यादा विकसित प्राणी बनाना होता तो वह कैसा होता? इंसान जैसा तो यकीनन हरगिज भी नहीं। क्रमिक विकास अगला प्राणी ऐसे बनाता जिस मे ऊँठ और ध्रुवीय भालू दोनो के ही गुण होते। जो -60 or +60 degree Celsius मे भी आराम से रह लेता। सूक्ष्मदर्शी जीवन की शुरूआती इकाई, अगर यह अपने अपने इलाके की चरम सीमा तक की गर्मी सर्दी सह लेते है तो क्रमिक विकास मे यह गुण इंसान तक आते आते कितना विकसित हो जाना चाहिए था ? सूर्य देव की तरह (+6000 degree Celsius ) और (-6000 डिग्री Celsius ) मे भी। अब क्या क्रमिक विकास मे यह गुण इंसान मे और ज्यादा विकसित हुआ या अविकसित और पतन ?

धरती पर प्रकृति और क्रमिक विकास ने इंसान को सबसे ज्यादा विकसित दिमाग, शरीर, हाथ पैर दिए है। प्रकृति ने इंसान को जिज्ञासु, झुझारू, खोजी प्रवृति का बनाया है। इस धरती पर सिर्फ हम मानव ही प्रकृति को समझते है, निहारते है, सराहते है, भ्रमण करते है और प्रकृति का आनंद ले सकते है। हमे ही पता है कि यह मैदान है, पठार है, रेगिस्तान है, झील है, नदी है, पहाड़ है, झरना है, समुन्द्र है, बर्फ है, फूल है, फल है, पेड़ है, लताएँ है, सूरज है, चन्द्रमा है, आकाश है, विज्ञान है, इतिहास है, अर्थ शास्त्र है, नृत्य है, चित्रकारी है, गृह है, ग्रह है, दूर संचार के साधन है आदि आदि...इत्यादि। इस प्रकृति को देखने, समझने, निहारने और भ्रमण करने, ज्ञान, विज्ञान, विभिन्न तरह की कलाओ का आनंद हम तभी ले सकेगे जब हम real warm blooded होंगे वर्ना हमारे इतने मानसिक और शारीरिक विकास का क्या फायदा ? यह तो ज्यूँ ही मिसाल हो गई कि किसी ने चाव चाव मे mercedes तो खरीद ली पर कभी भी चलाई नहीं। क्योंकि उस मे पेट्रोल डलवाने की हिम्मत नहीं। वो महान् प्रकृति जो विभिन्न विभिन्न जैविक, अजैविक वस्तुएँ बनाने मे सक्षम है। वो अपनी सब से अनुपम रचना (मानव) मे पेट्रोल (गर्म खून वाले प्राणी ) नहीं डलवा सकती !

गुरुत्वाकर्षण बल : ----- हम सदियो से यही मानते आ रहे हैं कि इंसान गुरुत्वाकर्षण बल के कारण उड़ नहीं सकता। क्योंकि यह बल इंसान को धरती की तरफ खींचता है। क्या यह बल अति विकसित मानवो के लिए ही है ? अधने से कीट पतंगो, चींटियो, मकड़ियो, पक्षियो, छिपकलियो, bacteria, virus आदि के लिए नहीं ? यह शारीरिक और मानसिक स्तर पर इंसान

के मुकाबले बहुत ही कमजोर प्राणी इस बल से बाहर आ जाते हैं। पर मानव अति विकसित हो कर भी इस बल से बाहर नहीं आ पाता ! गुरुत्वाकर्षण बल के कारण ही हम असंतुलित हो गिरते हैं और चोटिल होते हैं। कभी कभी इंसान को कोई भारी चोट लग जाती है या फिर वो सदा के लिए अपंग हो जाता है और या फिर इंसान की मौत भी हो जाती है। अब इस क्रमिक विकास में गुरुत्वाकर्षण के मामले में हम upgrade हुए या degrade? क्या हमें उड़ने जैसे देवीय गुण की भी जरूरत नहीं थी ? क्या हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना जाना नहीं पड़ता ? जो क्रमिक विकास में इस गुण का भी विकास हो गया ! इंसान को आवागमन की सख्त जरूरत रहती है। क्योंकि हम एक सामाजिक प्राणी हैं। अगर क्रमिक विकास ने हमें उड़ने जैसी सुविधा छीन ली तो इसके बदले कोई और सुविधा आवागमन के लिए दे देता। जो इंसान को क्रमिक विकास में मिले स्थान के अनुरूप होती। नहीं, हमें कोई दूसरी सुविधा भी नहीं दी गई। यह “अगला वंश सुधारों के साथ” है ?

अगर हम प्रकृति द्वारा बनाए गए होते तो हम में यह गुण जरूर होता। पर हम प्राकृतिक ढंग से विकसित नहीं हुए हैं बल्कि हमें विशेषतौर पर जैविक नाभिकीय युद्धकी जरूरतों और उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए रचा गया है। तभी इंसान तेज नहीं दौड़ पाता और इंसान में teletransportation की सुविधा नहीं है और हमें साइकिल, स्कूटर, बस, कार, टैक्सी, जहाज आदि की सफर करने के लिए जरूरत पड़ती है। फिर यही से socio economic status का मुद्दा शुरू होता है। इन कमियों के दम पर ही रोटी, कपड़ा, मकान, साम, दाम, दंड, भेद, भाव, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, द्वेष, हठ, छल, मक्कारी आदि इंसान पर अच्छे से काम करते हैं और इंसान को अपना फैसला, जमीन बदलने पर विवश कर देते हैं। सामाजिकता के परिदृश्य में रची गई युद्ध शैली के लिए ये सब बहुत जरूरी हैं।

पुनरुत्पादन क्षमता : ---- बहुत से जानवरों में regeneration की क्षमता होती है। जैसे छिपकली की पूँछ कट जाए तो वह दोबारा आ जाती है। अगर octopus की कोई भुजा कट जाए तो वह दोबारा आ जाती है। अगर शार्क, व्हेल का कोई दाँत टूट जाए तो वह दोबारा आ जाता है। सींघ वाले जानवर के सींघ टूट जाने पर दोबारा आ जाते हैं। हाथी के हाथी दाँत दोबारा आ जाते हैं। पर अगर महाबली, अति विकसित मानव का कोई अंग कट जाए या दुर्घटनाग्रस्त हो जाए तो वह दोबारा नहीं आता। और अति विकसित इंसान अपनी बाकी की सारी जिंदगी अपाहिजों की तरह बिताता है। पुनरुत्पादन का यह गुण ना होने के कारण इंसान के जीवन पर हर वक्त खतरा बना रहता है। क्रमिक विकास में इंसान के साथ यह “अगला वंश सुधारों के साथ” या “अगला वंश विकारों के साथ” हुआ ?

प्रतिरक्षात्मक प्रणाली : --- शेर जंगल में कीचड़ में पड़े सूअर को मार कर, मिट्टी/जमीन पर ही रख खा लेता है। बिल्ली चूहे को जूँ ही निगल लेती है और अजगर एक मेंढक को सीधा ही निगल लेता है। सूअर, चूहे और मेंढक के शरीर पर कितने कितने बैक्टीरिया, वायरस और दूसरे सूक्ष्मदर्शी और अपशिष्ट पदार्थ/waste material होंगे। उनके खुरों और नाखुनों में कितनी कितनी गन्दगी होगी। अब शेर, बिल्ली और अजगर को कोई संक्रमण क्यों नहीं होता ? क्या शेर कीचड़ में पड़े सूअर को मार पहले उसे sanitize करता है और तब खाता है ? क्या बिल्ली चूहे को मार पहले उसे dettol से नहलाती है और तब खाती है ? क्या अजगर मेंढक को पहले निस्संक्रामक/disinfective करवाता है और तब खाता है ? नहीं, इन जानवरों को इससे कोई संक्रमण, बीमारी, परेशानी नहीं होती। और एक हम इंसान हैं जो उस खाने को खाना जुर्म मानते हैं जिस पर मक्खी या मच्छर बैठे हों। अब छिपकलियाँ बड़े चाव से मच्छर खाती हैं। उन्हें कोई संक्रमण नहीं होता। मच्छर तो रहते ही गंदगी पर हैं। उन्हें भी कोई संक्रमण नहीं होता। ताज्जुब है। सारे नियम और कायदे कानून सिर्फ हम सब से ज्यादा विकसित इंसानों के लिए ही हैं क्या ! और कमाल की बात- इसे हम क्रमिक विकास में सबसे ज्यादा विकसित इंसान विकास कहते हैं !!!



अब शेर, बिल्ली, अजगर, छिपकली, मच्छरो को संक्रमण क्यों नहीं होता ? प्रतिरक्षात्मक प्रणाली किसकी बढ़िया होनी चाहिए ? ज्यादा सुविधाएँ किसके पास होनी चाहिए ? चपड़ासी के पास या मैनेजर के पास ? जी हाँ क्रमिक विकास में हम मैनेजर की ही तरह हैं और हम से कम विकसित यह प्राणी चपड़ासी की तरह।

इंसानो को छोटी छोटी बातों पर खांसी, जुकाम, गर्मी, सर्दी, बुखार, टी बी, एड्स, कुष्ठ रोग, टाइफाइड, मलेरिया, डेंगू, प्लेग, खसरा और bed sore जैसे अनगिनत संक्रमित रोग हो जाते हैं ! Immune system का ज्यूँ बार बार असफल हो जाना इंसानो में बहुत बड़ा विकार है। अब गौर करने वाली बात यह है कि 'multicellular with the facility of division of labour' वाला इंसान 'acellular' से बार बार हार जाता है। हार भी कोई छोटी मोटी नहीं । 'खरबो विभिन्न तरह की कोशिकाओ' से सुसज्जित इंसान के चारों खाने यह 'एक कोशिका' वाले जीव चित कर देते हैं। कभी कभी गंभीर बीमार, कभी कभी संक्रमण के कारण कोई अंग भी कटवाना पड़ जाता है और कभी कभी जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

इतने लम्बे क्रमिक विकास से कौन गुजर कर आया है ? बार बार अगला वंश सुधारों के साथ और Natural selection किसके साथ हुआ है ? और इंसानों के ऐसे ऐसे शर्मसार परिणाम ? वो भी प्रकृति और क्रमिक विकास के ? प्रकृति जो तरह तरह के जीव जंतु, वनस्पति, पहाड़, मैदान, समुन्द्र, नदियाँ, ग्रह, उपग्रह आदि आदि बनाती है। उसकी अब तक की सब से उत्तम कलाकृति मानव का यह हाल ?

प्राकृतिक जैविक हथियार : --- जंगल में रहते हुए हर जीव के लिए दो काम बहुत ही जरूरी हैं पहला अपनी रक्षा करना दूसरा खाना ढूँढना। प्रकृति ने हर प्राणी को अपनी रक्षा करने और खाना ढूँढने के लिए कोई न कोई प्राकृतिक जैविक हथियार दिया है। सिवाय सब से ज्यादा विकसित मानव के ! अब हथियार किसके पास ज्यादा होंगे ? भारत और अमेरिका के पास या फिर नेपाल, भूटान के पास ?

मानवों का तो क्रमिक विकास ही जंगलों में रहते हुए सर्वपक्षीय विकास के सिद्धांत के अनुरूप हुआ है तो फिर क्रमिक विकास सुरक्षा और भोजन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर इंसानों के लिए कैसे चूक गया ? क्या क्रमिक विकास यह चाहता था कि इंसान, सबसे ज्यादा विकसित महाबली इंसान हाथी, घोड़े, गेंडे जैसे बड़े बड़े जानवरों को तो छोड़ो मक्खियों, मधु मक्खियों, मच्छरों, बैक्टीरिया, वायरस से भी डरता फिरे ? खाने के लिए दर दर घूमता फिरे और दूसरे जानवरों के संवेदी अंगों की तरह खाना ढूँढने में इंसान को कोई मदद न मिले ? साँप के पास रासायनिक हथियार, उसका जहर है खाना ढूँढने और रक्षा के लिए। शेरों के पास तेज दाँत, चुस्ती फुर्ती, लचकीलापन, तेज दौड़ने की क्षमता। बाज के पास अति तेज दृष्टि, पंख, पंजे और चोंच। कुत्ते, बिल्ली के पास जबरदस्त सूंघने की क्षमता, तेज दाँत और रफ्तार। हाथी के पास विशाल शरीर और सूंड। गेंडे और दरियाई घोड़े के पास मजबूत शरीर और बल। घोड़े के पास बलिष्ठ शरीर और खुर है। हिरणों के पास तेज दौड़ने की क्षमता। शिकार और सुरक्षा के लिए electric rays बिजली के झटके पैदा करती हैं। गाय जैसा शरीर प्राणी और भेड़ जैसा मूड प्राणी भी अपने बचाव के लिए सीधे रखते हैं। कुछ छोटे प्राणी झुण्ड में रहते हैं और वो अपने झुण्ड को खाना ढूँढने और आत्म रक्षा के लिए इस्तेमाल करते हैं। बड़े झुण्ड के कारण इन्हें शिकार करने में आसानी होती है और दुश्मन/शिकार बड़ा झुण्ड देख डर जाता है। बिच्छू और मधुमक्खी के पास डंक। मकड़ी के पास उसका खुद का ही बनाया जाल होता है। जिससे वो अपनी खाना ढूँढने और आवास की समस्या का समाधान कर लेती है। साही/Porcupine के पास उसके कांटे हैं। मछलियों के पास भी कांटे हैं। कछुए जैसे प्राणी के पास एक मोटा अभेदक खोल है। भालू के पास सूंघने की क्षमता, रफ्तार और फर। सील के पास बढ़िया चमड़ी है। जो निष्पूर मौसम में भी उसकी रक्षा करती है। कुत्ता भोंक कर ही महाबली इंसान की ऐसी तैसी कर देता है। यहाँ भोंकना sound power as a natural biological weapon है।

अब सोचने वाली बात है कि इंसान के पास आत्म रक्षा और खाना ढूँढने के लिए क्या प्रावधान है ? अब प्राकृतिक जैविक हथियारों के मामले में कौन श्रेष्ठ है ? कितने ताज्जुब की बात है कि सबसे ज्यादा विकसित इंसान के पास एक भी ऐसा प्राकृतिक जैविक हथियार नहीं जिससे वह अपनी रक्षा कर सके। जबकि मानव को लगातार कुत्ते, हाथी, शेर, मधुमक्खियों, बिच्छुओं, बाढ़, भूस्खलन, लू, आंधी, तूफान, बारिश, बर्फ आदि से खतरा है। इंसान को तो अति सूक्ष्म बैक्टीरिया और वायरस से तक भी जानलेवा खतरा है। प्रकृति में ऐसा कोई जानवर नहीं जिससे महाबली इंसान को खतरा ना हो। पर सुरक्षा के नाम पर क्या है इंसान के पास ? सिर्फ खाली पीली, फोकट में सब से श्रेष्ठ होने की तख्ती। अगर विकास सर्वपक्षीय हुआ है तो फिर defense जैसा संजीदा मुद्दा क्रमिक विकास की निगाह से कैसे रह गया ! क्रमिक विकास का मुख्य उद्देश्य क्या है ? किसी भी बनाई जाति को जिन्दा बनाए रखना। हमारी धरती पर अभी तक इंसान से ऊपर तो कोई और जीव बनाया ही नहीं प्रकृति ने। तो इंसान क्रमिक विकास की अब तक की सब से उत्तम रचना है। ऐसी रचना जिसे बनाने में क्रमिक विकास ने अपना सारा अनुभव, अनुसन्धान, समय लगाया है। समय, अनुभव और अनुसन्धान के साथ कोई भी उत्पादन, निर्माण अपनी चरम सीमा पर और लाजवाब होता है। क्या मानव के लिए ऐसा कह सकते हैं ?

बढ़िया मानसिक शक्ति क्या करेगी अगर उसके पास बढ़िया साधन ही ना हो। अगर दिमाग ने कह दिया खतरा भांप कर अति तेज गति से कि सामने आग है, बाढ़ है, शेर है, मधुमक्खियों का झुण्ड है, भू स्खलन है आदि। अगर उसी गति से शरीर ने और हमारी सुरक्षा प्रणाली ने काम ही नहीं किया तो मात्र मानसिक स्तर पर विकसित होने का क्या लाभ ? तभी कहते हैं कि कोई भी विकास तभी सफल है जब वह तीनों स्तरों पर एक साथ हो। यानि सर्व पक्षीय विकास हो। अब दिमाग ने तो बिजली से भी तेज गति से शरीर को सचेत कर दिया कि सामने खतरा है या शेर है। पर उसी गति से शरीर ने अपने बचाव के लिए कुछ किया ही नहीं तो दिमाग का शरीर को धूर्त गति से शरीर को निर्देश देने का क्या फायदा ? इंसानी दिमाग के अति विकसित होने का फिर इंसान को क्या लाभ हुआ ?

आवास की समस्या : ----हर वो जानवर जिसे आवास/घर की जरूरत है। वह अपनी इस जरूरत को पूरा करने में सक्षम और आत्म निर्भर है। जैसे चींटी, मधुमक्खी, ततईया, मकड़ी, साँप, चूहा, केंचुआ, दीमक, घोंघा, सीप, कछुआ, पक्षी आदि। हम तो बंदरो, गाए, भैंसों की तरह खुले में भी नहीं रह सकते। क्योंकि हम गर्मी, सर्दी, बारिश, आंधी, तूफान, बाढ़, आदि नहीं सह सकते हैं। और हमें दिन रात विभिन्न तरह के जानवरों से लगातार खतरा है। हमें अपनी जरूरतों के हिसाब से घर अनिवार्य चाहिए। घर बिना हम नहीं रह सकते।

क्या हम अपने दम पर अपनी आवासीय समस्या का समाधान कर सकते हैं जैसे पक्षी, साँप, कछुआ आदि कर लेते हैं। अब यहाँ आवास की समस्या को हल करने में कौन सक्षम है ? हम या कि दूसरे प्राणी ? जबकि इनके पास हमारी तरह विकसित हाथ पैर, शरीर और दिमाग भी नहीं है। बिना घर के इंसान की क्या हालत होगी ? कोई भी यह बात समझ सकता है। अगर हमारे लिए घर इतना ही जरूरी है तो क्रमिक विकास ने इतनी घातक गल्ती कैसे कर दी ? नहीं क्रमिक विकास और प्रकृति माँ ऐसा नहीं कर सकते। यह क्रमिक विकास की नहीं बल्कि BNW disorder or drawback है, जैविक नाभिकीय युद्ध विकार और कमियाँ हैं। तांकि इंसान को रोटी, कपडा और मकान की जरूरत हो। जिसे पूरा करने के चक्कर में इंसान पर साम, दाम, दंड, भेद, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, छल, घात, द्वेष, आलस्य, जलवायु, बिमारियाँ, रिश्तेनाते, बच्चे, पढ़ाई - लिखाई, नौकरी, सामाजिक - आर्थिक स्थिति, लिंग, संस्कृति, बेटा - बेटा, जीवन साथी, सास बहु, बहु नन्द, बोस, सीनियर, बेरोजगारी, सामाजिक ताना बाना, धार्मिक, नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियाँ और दायित्व, टेक्नोलॉजी आदि आदि का इस्तेमाल कर इंसान को हथियार डाल देने के लिए बाध्य करना। ये सब सामाजिकता के परिदृश्य में लड़े जाने वाले युद्ध के हथियार हैं। यही हथियार जैविक नाभिकीय युद्ध में web war warlogies, web war stratigies के जन्मदाता होते हैं।

शारीरिक शक्ति : ---- घोड़े किसी भी व्यक्ति को अपनी पीठ पर बिठा बिना रुके, बिना खाए पीए कितनी देर तक, एक तेज गति से दौड़ सकते हैं। चींटियाँ अपने भार से 50X ज्यादा भार उठा लेती हैं। इंसान अपने शरीर के वजन से कितने गुणा ज्यादा भार उठा सकता है ? चींटियाँ 24 घंटे बिना रुके, बिना थके, भयंकर गर्मी में, दिन-रात, अँधेरे में भी काम कर लेती हैं। क्या हम लगातार दिन-रात, बिना रुके, बिना थके, बिना खाए पीए काम कर सकते हैं ? हम सब हाथी, शेर, गेंडे की शक्ति से परिचित हैं। हाथी एक पेड़ तक उखाड़ देता है। क्या हमें शारीरिक शक्ति की जरूरत नहीं ? शारीरिक शक्ति के बिना मानसिक शक्ति भी पंगु हो जाएगी। क्रमिक विकास ने करोड़ों साल लगा किस तसल्ली से इंसान को किस मुकाम तक पहुँचा दिया !

ऊर्जा के स्रोत : --- सर्व पक्षीय सिद्धांत के अनुसार कोई भी विकास सर्वपक्षीय होगा। अगर अब मछलियों से ले कर इंसानों तक शारीरिक रूप में कितना कितना अकल्पनीय विकास हुआ। पर ऊर्जा का स्रोत वही - खाना और पीना। नई शारीरिक संरचना, नया मानसिक स्तर तो ऊर्जा के स्रोत भी तो भिन्न होते। पर नहीं। करोड़ों सालों से वही अंग, वही ऊर्जा के स्रोत ! ऐसा कैसे हो सकता है ? वही दिल, फेफड़े, गुर्दे, जिगर आदि सब प्राणियों में लगाते लगाते क्रमिक विकास और प्रकृति ऊभ नहीं गई ? विभिन्न तरह की लीलाएँ रचना ही तो प्रकृति का स्वभाव है। कभी नदी, कभी पहाड़, कभी समुन्द्र, कभी मैदान, कभी मरू, तो कभी बर्फ। कभी दहकता सूरज, कभी जीवनदाई धरती, कभी बंजर मंगल ग्रह, तो कभी विशाल गेसो का गोला ब्रहस्पति, अरुण ग्रह जैसा सबसे ज्यादा ठंडा ग्रह, शनि जैसा सबसे ज्यादा खूबसूरत सौरमंडल का ग्रह आदि। जो ऊर्जा स्रोत उल्लू, चींटी, गधे, तिलचिट्टे आदि के हैं वही ऊर्जा स्रोत सब से विकसित मानव के ! मानव का विकास जंगलों में रहते हुए हुआ। यहाँ कभी बाढ़, सूखे, कभी गर्मी सर्दियों के कारण खाने और पीने जैसे ऊर्जा के स्रोत कितने जोखिम भरे हो सकते हैं ? प्रकृति माँ अपनी सब से अनुपम कलाकृति इंसान के लिए इतनी कठोर नहीं हो सकती।

दृष्टि शक्ति : ---- एक बाज आसमान में उड़ते हुए चार से पाँच हजार फीट की ऊँचाई से धरती पर चूहे जैसे एक छोटे से प्राणी को साफ साफ देख लेता है। हम इतनी ऊँचाई से या दूरी से कितना साफ साफ देख सकते हैं ? इतनी ऊँचाई से बाज के देखने का दायरा तीस किलोमीटर तक का हो सकता है। नदारद मक्खियाँ भी सूक्ष्मदर्शी बैक्टीरिया और वायरस देख लेती हैं। मक्खियाँ UV light देख लेती हैं। उल्लू, बिल्ली आदि बहुत से प्राणी रात को अँधेरे में भी देख लेते हैं। ऊँठ की आँख में एक झिल्ली होती है। जो ऊँठ की आँखों को रेतीली आँधी से बचाती है। गिरगिट की आँखें उसे 360 डिग्री पर देखने की सुविधा देती हैं। जिसके कारण गिरगिट बिना सिर हिलाए आगे पीछे सब देख सकता है। बिना हिले झूले गिरगिट अपने दाँए बाएँ और बिल्कुल पीछे सब देख लेता है। इससे वो लगातार खतरों के प्रति सचेत रहता है। वो भी बिना हिले झूले। यह सुविधा गिरगिट को हर खतरों से बचाती है। हम मानव सर्व श्रेष्ठ होने का वहम भर ही पाली बैठे हैं। हम में पर जीवन को कायम रखने का गुण एक भी नहीं है।

सूँघने की क्षमता : --- हम सब कुत्ते और बिल्ली की सूँघने की क्षमता से वाकिफ हैं। बड़े बड़े देशों की बड़ी बड़ी जाँच एजेंसियाँ अपना मामला हल करने के लिए कुत्तों का सहारा लेती हैं ! वो भी इतने hi tech जमाने में ! कितने शर्म की बात है कि जिस गली के कुत्ते को हम तुच्छ प्राणी मानते हैं। सब से ज्यादा विकसित इंसान को उसी की मदद लेनी पड़ती है। नाचीज चींटी की भी सूँघने की ताकत इंसानों से ज्यादा है। ध्रुवीय भालू तीस किलोमीटर की दूरी से भी अपने शिकार की गंध सूँघ लेता है और शिकार का पता चलने पर इतना भारी भरकम भालू तीस किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ भी लेता है। व्हेल समुन्द्र में आधा किलोमीटर के दायरे में मात्र एक खून की बूँद सूँघ लेती है। अगला वंश सुधारों के साथ कहाँ है ? और सर्वपक्षीय विकास कहाँ है ?

चमड़ी : --- इंसानी चमड़ी बाकी सब जानवरों की चमड़ी से ज्यादा विकसित है। वैज्ञानिकों के पास कई तर्क हैं इस बात को सिद्ध करने के लिए। एक तो इंसानी चमड़ी क्रमिक विकास से गुजर कर आई है दूसरा इंसानी चमड़ी के पास सब से ज्यादा

बढ़िया Collegen & Elastin है। जो इसे क्रमशः सबसे बढ़िया मजबूती और लचीलापन देते है। फिर भी इंसानी चमड़ी पर समय की मार साफ दिखाई देती है। कोई कुत्ता, सूअर, हाथी, केंचुए आदि को देख कर उसकी उम्र बता सकता है ? सील, पेंगुइन की चमड़ी इन्हे भीष्ण ठण्ड (-60 degree celsius) से बचाती है। पानी मे और खारे समुन्द्रो मे रहने वाले जानवरो की चमड़ी हम इंसानो की चमड़ी की तरह क्यों नहीं गलती ?

मानसिक स्तर : ---- मानसिक स्तर पर भी हम बुरी तरह से अपाहिज है। वैज्ञानिक भी मानते है कि हम अपने दिमाग की कुल क्षमता का कोई 5 से 7% ही इस्तेमाल करते है। बाकी ज्यादातर दिमागी क्षमता सुप्त अवस्था मे रहती है। अभी तक कोई भी ऐसा super computer नहीं बना जो इंसानी दिमाग की गति का मुकाबला कर सके। कोई भी सुपर कंप्यूटर एक साथ इतने ढेरो काम नहीं कर सकता जितने ढेरो काम इंसानी दिमाग एक वक्त मे बड़े आराम से कर लेता है। हमारा दिमाग एक ही समय मे खरबो खरबो कोशिकाओ मे होने वाली biochemical reactions को संभालता है। कोई super computer भी एक साथ खरबो खरब काम एक ही समय मे नहीं संभाल पाता। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अभी इंसानी दिमाग अपनी कुल क्षमता का सिर्फ 5 से 7% ही इस्तेमाल करता है। तो भी ऐसे चमत्कार करता है। अगर इंसानी दिमाग अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल करे तो फिर क्या हो ?

इंसानी दिमाग VS कंप्यूटर : --- इंसानी दिमाग प्रकृति के, क्रमिक विकास के करोड़ो सालो के अनुभव और मेहनत का नतीजा है। कंप्यूटर को बने अभी कुछ ही दशक हुए है। हम कंप्यूटर की गति, सटीकता, स्मरण शक्ति, डाटा उत्थान, आंकड़ा प्राकलन, गणना, स्कैनिंग क्षमता, पूर्वानुमान और इसके द्वारा किए जाने वाले सारे ही कामो के सही होने पर विश्वास करते है। तो क्या प्रकृति की इंसानो को बनाने की करोड़ो सालो की उठा पटक, मेहनत, इंसानी दिमाग की क्षमता इंसानी कंप्यूटर के आगे कम पड़ गई ? इंसान ने कुछ ही समय मे प्रकृति से भी ज्यादा उत्तम चीज बना डाली ? हद है !

महान दार्शनिक अरस्तु जी ने कहा है कि इंसान कोई भी काम, कला, चीज सीखता है तो वह नक्ल से ही सीखता है। जैसे खाना पीना, चलना दौड़ना, पढ़ना लिखना, कोई कला आदि। ऐसे इंसान ने अगर कंप्यूटर बनाया तो यह इंसानी दिमाग की नक्ल थी। जब हम नक्ल करके कोई चीज बनाते है तो उसके तीन तरह के परिणाम हो सकते है : --

मान लो हमने वस्तु "X" की नक्ल करके कोई चीज बनाई तो उसके निम्नलिखित परिणाम होंगे : ---

- 1) हमने वस्तु "X" से ज्यादा अच्छी चीज बनाई
- 2) हमने वस्तु "X" से घटिया चीज बनाई
- 3) हमने वस्तु "X" जैसी ही कोई चीज बनाई

अब सोचने वाली बात यह है कि इंसानी कंप्यूटर, कैलकुलेटर ज्यादा बढ़िया है या इंसानी दिमाग ? कोई भी कंप्यूटर और कैलकुलेटर इंसानी दिमाग की जगह नहीं ले सकता। ठीक जैसे कोई भी रोबोट इंसानी शरीर की जगह नहीं ले सकता। इंसानी दिमाग कंप्यूटर और कैलकुलेटर के मुकाबले हर पहलु मे अच्छा है। अतुलनीय है।

भूलना : --- भूलना वैज्ञानिक इंसानी दिमाग का एक गुण मानते है। स्मरण शक्ति का fail होना heart fail होने जैसा ही है। दिल की तरह दिमाग भी एक अंग है। सारी उम्र हाथ पाँव, दिल, गुर्दे, फेफड़े, आँख, नाक, कान, मुँह आदि अंग अपना काम

नहीं भूलते तो अब तक की सबसे सर्वश्रेष्ठ मशीनरी इंसानी दिमाग अपने हिस्से आए "याद" रखने के काम को कैसे भूल सकती है ?

इंसानी दिमाग एक ही समय, पर खरबो खरब कोशिकाओं को संभालता है। जिन में हर वक्त कोई न कोई रासायनिक क्रियाएँ होती ही रहती हैं। और हर कोशिका और अंग की अपनी अपनी खास रासायनिक क्रियाएँ होती हैं, कुछ रासायनिक क्रियाओं का समय निश्चित होता है। उसी निश्चित समय पर ही वह रासायनिक क्रियाएँ होती हैं। हर रासायनिक क्रियाओं के reactants, enzymes, coenzyme, conditions, time अलग अलग होता है। इंसानी दिमाग एक ही समय पर खरबो खरब रासायनिक क्रियाओं को संचालित करने में कोई गड़बड़ नहीं करता तो थोड़ा सा डाटा याद रखने में इतनी गड़बड़ कैसे कर सकता है ?!!!!!! यह जैविक नाभिकीय युद्ध विकार और कमियाँ ही हैं और क्या हैं ?

क्या आँखें अपना देखने को काम को भूलती हैं ? अगर दस साल तक कोई हरा रंग ने देखे तो क्या दस साल के बाद आँखें हरा रंग देखना भूल जाएँगी ? जैसे हम मानते हैं कि अगर किसी बात को ज्यादा समय हो जाए तो हम उस बात के बारे में भूल जाते हैं। अगर उस बात को याद भी करते हैं तो अच्छे से याद नहीं आती। आखिर क्यों ? अगर कोई इंसान दस साल तक आम न खाए तो क्या उस इंसान का पाचन तंत्र आम खाना भूल जाएगा? जैविक नाभिकीय युद्ध में भूलने को भी एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। और कुछ नहीं। जैसे कोई भी अंग अपने हिस्से आए काम करने को नहीं भूलते। वैसे ही धरती पर अब तक की सब से ज्यादा विकसित जैविक मशीन यानि इंसानी दिमाग भी अपने हिस्से आए कुछ भी याद रखने के काम को कभी भी नहीं भूल सकता। दिमाग द्वारा याद रखने के काम में कोई भी चूक नहीं कर सकती।

इंसानी दिमाग किसी भी बात को कभी नहीं भूल सकता। चाहे वो बात पचास साल पुरानी हो या सत्तर साल पुरानी हो। पचास सत्तर साल बाद भी कोई बात दिमाग पूरी जानकारी के साथ वैसे ही याद रखेगा जैसे fb पर comments के बारे में जानकारी दी जाती है। पचास सत्तर साल बाद भी दिमाग उस बात को दूसरी सारी जानकारियों के साथ याद रखेगा। यानि जब यह बात हुई मैंने कौन से कपड़े पहने थे, सामने वाले ने कौन से कपड़े, गहने, makeup किया था। आस पास क्या क्या पड़ा था। इतने बज कर इतने मिनट पर वहाँ से कौन कौन गुजर कर गया, उस दिन क्या तारीख, वार था। यह वार्ता कितने बजे शुरू हुई और कब खत्म हुई आदि आदि। इंसान पूरे का पूरा screen play बताने और लिखने के काबिल होगा। ये सही इंसानी scanning और memory power है।

नक्ल व समन्वय : ---- सभी जानवर आत्मनिर्भर हैं और अपने हर काम को खुद करने में सक्षम हैं। सिवाय अति विकसित इंसान के ! इंसान अपने छोटे छोटे कामों के लिए भी दूसरों पर आश्रित रहता है। पक्षी अपने छोटे से जीवन काल में भी बिना स्कूल, ट्रेनिंग, नक्शानवीस की डिग्री के, किसी की मदद लिए अपना घर/घोसला खुद बनाने में सक्षम होते हैं। अभी पक्षियों के पास हमारी तरह अति विकसित हाथ, पैर, शरीर और दिमाग नहीं होता। पक्षियों के शरीर और दिमाग में पूर्णतया ताल मेल होता है। पक्षी के दिमाग को पता है कि ऐसे ऐसे घोसला बनाना है और वह शरीर को उचित निर्देश दे कर शरीर से मन चाहा काम निकलवा लेता है। पर पक्षियों की तरह हमारे शरीर और दिमाग में पूर्ण ताल मेल नहीं है। पता हमारे दिमाग को भी है कि ऐसे ऐसे घर बनना है। पर हमारा दिमाग शरीर से मनचाहा काम नहीं ले पाता। पक्षियों की तरह हमारे दिमाग और शरीर में पूर्ण तालमेल नहीं होता। और अपने इस गुण के कारण पक्षी हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा को चरितार्थ करते हुए अपनी आवासीय समस्या का समाधान कर लेते हैं।

जन्म जात कुशलता : --- मधुमक्खियों में चार तरह की मधुमक्खियाँ पाई जाती हैं। यह हैं – Queen, soldier, sweeper & worker. मधुमक्खियों का जीवन काल बहुत छोटा सा होता है। रानी मधुमक्खी को छोड़ तमाम तरह की मधुमक्खियाँ चार से

पाँच छः सप्ताह तक ही जीवित रहती है। चारो तरह की मधुमक्खियो का काम अलग अलग होता है। जैसा कि इनके नाम से ही सिद्ध होता है। चारो तरह की मधुमक्खियाँ बिना किसी स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के जन्म से ही अपने अपने काम में कुशल होती है। जैसे मछली के बच्चे को तैरना नहीं सिखाया जाता है। अब सौ बातों की एक बात कि इंसान जन्म से किस गुण में प्रवीण होता है? अब अगला वंश सुधारो के साथ और सर्वपक्षीय विकास कहाँ है?

इंसान तो स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, polytech आदि में पढ़ कर भी कुछ खास नहीं कर पाते। कुछ ढंग का तो क्या सीखना ? कुछ तो पास भी नहीं हो पाते है। और ऊपर से झंडा गांडेगे कि हम इंसान है। हम मानसिक स्तर पर बाकी सब प्राणियों से ज्यादा विकसित है।

बुद्धिमत्ता : ---- प्रकृति ने सब प्राणियों को एक सा ही बनाया है। सब के दिल गुर्दे, फेफड़े, जिगर, आँख, कान, नाक, जीभ आदि अंग एक सा ही और एक सी ही क्षमता से कार्य करते है। इसी तरह सभी इंसानों का दिमाग भी एक सी ही दक्षता और सटीकता से कार्य करता है। क्योंकि सभी इंसानों का दिमाग एक से ही जैविक पदार्थ से बना हुआ होता है। कोई भी व्यक्ति किसी काम, कला, विषय में God gifted नहीं हो सकता है। जैसे हम कहते है कि किसी का दिमाग गणित में बहुत तेज चलता है, किसी का दिमाग अर्थ शास्त्र में खूब दौड़ता है। और किसी का चित्रकारी में और किसी का कविता लिखने में खूब चलता है। जैसे हमारा पाचन तंत्र है। सब कुछ पचाता है। फिर चाहे वह सेब केला हो, आलू गोभी हो, बादाम पिस्ता हो, आचार चटनी हो, चाय कॉफी हो, शरबत शिकंजीवीं हो, जूस रस हो, मुर्गा बकरा हो। हमारा पाचन तंत्र यह नहीं कह सकता कि मैं केला तो पचा सकता हूँ पर सेब नहीं। आलू तो पचा लूँगा पर गोभी नहीं। हमारा पाचन तंत्र सब कुछ पचाएगा सब कुछ। इसी तरह हमारा दिमाग हर कला, काम, विषय आदि में निपुण होना चाहिए। जैसे सभी कंप्यूटर एक सी गति, सटीकता से काम करते है। ठीक इसी तरह सभी दिमाग एक सी ही गति और सटीकता से चलने चाहिए। कोई भी बुद्ध नहीं हो सकता और कोई भी अति चतुर वीरबल नहीं हो सकता। इंसानी दिमाग अपने हिस्से आए हर काम को कंप्यूटर से भी ज्यादा सटीकता व गति से करेगा। फिर वह काम चाहे कुछ याद/समरण रखने का हो, गणना का हो, पूर्वानुमान का हो, स्कैनिंग करने का हो, या फिर कोई विषय, कला, या कोई भी काम-कोई भी काम। जैविक नाभिकीय युद्ध में बुद्धिमत्ता को भी एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

सुरक्षात्मक पहलु : ---- कितने ताज्जुब की बात है कि हमारा दिमाग हमारी सुरक्षा में कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं करता। जबकि यह शरीर द्वारा खाए गए खाने से और ली गई ऑक्सीजन से 20 % अकेले ही इस्तेमाल करता है। अगर इंसान तरह तरह के खतरों से सुरक्षित रहेगा। तभी तो वह अपने करिश्माई शरीर और दिमाग का इस्तेमाल कर पाएगा। इतने लम्बे क्रमिक विकास में हमारे दिमाग ने किसी भी तरह की प्राकृतिक आपदा से, बड़े बड़े जानलेवा रोगों से और जानवरों से हमारी रक्षा करना नहीं सीखा ! चींटी के दिमाग की ही तरह हमारा दिमाग यह गर्म है, ठंडा है, यहाँ पानी है, आग है बताता है बस। पर इन सब से हमारी कोई रक्षा नहीं करता। हमारे दिमाग ने कोई भी, किसी भी तरह का defense mechanism विकसित नहीं किया है ! बल्कि यह खुद उल्टा अपनी सुरक्षा के लिए उस शरीर पर आश्रित है रहता है। जो खुद बुरी तरह से अपंग है। शायद इसीलिए डर कर खोपड़ी में छुप कर बैठा है।

कुछ इंसान तो इतने ज्यादा SP द्वारा सम्मोहित होते है कि उन्हें एहसास ही नहीं होता कि उन में किस हद तक शरीर के तीनों ही स्तरों पर कमियाँ भरी हुई है। उन्हें अपने मानसिक स्तर पर ही बहुत मान है। ठीक है इंसानों का दिमाग जो कर सकता है वैसा किसी और प्राणी का दिमाग नहीं कर पाता। माना यह ठीक है। पर केवल मानसिक स्तर पर विकसित हो कर हम बहुत efficient & sufficient विकसित हो गए ? ऐसे ही चलते चलते सामने बड़ी कोई नदी आ जाए, पहाड़ आ जाए, खाई आ जाए, शेर, भेड़िया, हाथी आ जाए तो ? हमारा विकसित दिमाग क्या कर लेगा ? दिमाग सिर्फ स्थिति देख निर्देश ही देता है। हमें

शारीरिक स्तर पर उतना ही विकसित होना पड़ेगा कि दिमाग के दिए निर्देशों को शरीर पूरा कर पाए। फिर वही बात कि विकास सर्वपक्षीय होता है। जब हमारे दिमाग ने कहा कि सामने भालू है। तो या तो हमारा शरीर इतना सशक्त हो कि भालू से भिड़ जाए या फिर इतने काबिल कि भालू से तेज भाग, उड़ कर अपनी जान बचा ले। मात्र मानसिक स्तर पर ही मामूली सा विकास देख कर इंसान खुद को दूसरे सभी प्राणियों से सर्वश्रेष्ठ समझने लगा ! ऐसा वहम, सम्मोहन भी BNW की एक कमी, विकार, disorder, drawback है। ठीक nuclear war के physical और genetic disorder की ही तरह है।

योन स्तर : --- शारीरिक और मानसिक स्तर की ही तरह योन स्तर पर भी बहुत सी भ्रांतियाँ, कमियाँ हैं। Bio nuclear war genetic war होने के कारण योन स्तर और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। आईए देखते हैं कि क्रमिक विकास के दौरान योन स्तर पर क्या बदलाव हुए ? और क्या सच में योन स्तर पर विकास हुआ? इससे भी यही सिद्ध होता है कि हम designer society में रहते हैं। और कोई हमें बुरी तरह से भ्रमित कर रहा है।

औरतों के गर्भकाल का लम्बा समय : --- एक औरत एक बच्चे को पैदा करने में 9-10 महीने का समय लेती है। और गाय और भैंस भी लगभग इतना समय लगा देती हैं। तो इन करोड़ों साल के इतने लम्बे क्रमिक विकास में गर्भकाल के समय में कहाँ विकास हुआ ? और इसके आगे, इतना समय फूँक कर औरत जो बच्चा पैदा करती है वह बुरी तरह से बेबस, लाचार, अपंग, हर काम में। बोलना, सुनना, खाना, पीना, चलना, समझना, पढ़ना, लिखना इत्यादि में फिसलूँगी। वही एनाकोंडा, हाथी, घोड़े आदि के बच्चे पैदा होते ही स्वयं ही तैरना और चलना शुरू कर देते हैं। एनाकोंडा और समुंद्री कछुए के बच्चे जन्म लेते ही जंगल और समुन्द्र में अपने दम पर जीना/रहना शुरू कर देते हैं। इंसान के बच्चों को तो सरकार ही 18 साल का होने तक समझदारी का सर्टीफिकेट नहीं देती ! इतने अपंग शैशवकाल के साथ यह सर्वपक्षीय विकास है ! खैर मैं बात कर रही थी गर्भकाल के समय की। सर्व पक्षीय विकास यह कहता है कि जो भी विकास होगा वो एक साथ शारीरिक, मानसिक और योन स्तर पर होगा। सीधी सी बात है कि जो गति हमारे दिमाग के काम करने की है। वही गति हमारे शरीर और योन स्तर की भी होनी चाहिए। यह हुआ विकास, क्रमिक विकास। जैसे किसी ने statue of Liberty का सोचा तो झट मानसित स्तर पर वह Statue of Liberty पर होगा। उसके आस पास का नजारा उस इंसान के दिमाग में होगा। यही गति हमारे शारीरिक और योन स्तर की भी होनी चाहिए। किसी ने बच्चे का सोचा तो बच्चा इंसान के हाथ में। ना की नौ दस महीने लगा एक पूरी तरह से अपाहिज बच्चा पैदा करना ।

विकास के मामले में हम यहाँ कंप्यूटर का उदाहरण लेते हैं। सबसे पहले कंप्यूटर एक कमरे जितने बड़े होते थे। गति और काम का परिणाम कुछ खास नहीं। गर्मी इतनी छोड़ते थे कि उन्हें ठंडा करना पड़ता था। और अब कंप्यूटर तारों के झंझाल से मुक्त इतने छोटे हो गए हैं कि उन्हें जेब में रख कहीं भी ले जाओ। कंप्यूटर में यह सब बदलाव चंद सालों में ही हुए हैं। विकास का उम्दा उदाहरण । औरत और आदमी के साथ करोड़ों सालों के क्रमिक विकास में जो हुआ। उसे विकास कह सकते हैं ?!!!

वीर्य के हर निकास में शुक्राणुओं की संख्या : ---- वीर्य के हर निकास में शुक्राणुओं की संख्या हजारों, लाखों में होती है। आखिर क्यों ? अंडाणु के निषेचन के लिए सिर्फ एक ही शुक्राणु की जरूरत होती है। तो फिर पुरुष पर हर बार इतनी बड़ी संख्या में शुक्राणु पैदा करने का बोझ क्यों? जैसे स्त्री का एक ही अंडाणु उम्दा किस्म का होता है तो फिर पुरुष का एक ही शुक्राणु इतना स्मर्थवान क्यों नहीं होता कि पुरुष हर निकास में सिर्फ एक ही उम्दा शुक्राणु पैदा करे जो अंडाणु को निषेचित करने में सफल रहे। अगर अंडाणु एक है। दिल, फेफड़े, जिगर, पेट और स्क्लीन आदि जैसे इतने महत्वपूर्ण अंग एक एक हैं तो फिर शुक्राणु हर निकास में एक क्यों नहीं? बन्दर भी हर निकास में हजारों, लाखों शुक्राणु पैदा कर रहे हैं। और वही काम

करोड़ो साल के क्रमिक विकास से गुजर कर आया आदमी भी कर रहा है ! और हद तो यह है कि हम इसे विकास कह रहे हैं। अगर बन्दर और आदमी एक ही तरह से काम कर रहे हैं तो क्या हमें इसे विकास कहना चाहिए ?! इतनी बड़ी तादाद में शुक्राणुओं को संभालना खाला जी का घर है क्या ?

उत्तेजना : --- सेक्स के मामले में इंसान इतना उत्तेजित क्यों हो जाता है ? यह बात मेरी समझ से बाहर है। अगर ध्यान से और गहराई से देखा जाए तो आखिर सेक्स का क्या काम है ? सेक्स का काम है एक बच्चा पैदा करना। इसके लिए इंसान का कपड़ों से बाहर हो जाने का और पागलपन की हद तक पहुँच जाने का क्या फायदा ? दूसरे जानवर भी सेक्स के लिए लड़ मरते हैं और इंसान भी इस मामले में कितना बेबस हो जाता है ! शारीरिक और मानसिक स्तर पर इतने विकसित हो चुके इंसान के लिए योनि स्तर पर ऐसी प्रतिक्रिया शोभनीय है क्या ? आखिर इन करोड़ों सालों के विकास में इंसान ने इस पार्श्विक वृत्ति में क्या विकास किया ?

यहाँ फिर वही बात सिद्ध होती है कि इंसान विशेषतौर पर जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतों और उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए परग्रही जीवों द्वारा विशेषतौर पर रचा गया है। जिसे सिर्फ एक लैंगिक यंत्र (sex machine) की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। वर्ना इतने विकसित हो चुके इंसान के लिए काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि कोई मायने नहीं रखते। वर्ना सेक्स गुलाब की तरह नाजुक और सुगन्धित होता। ना कि जवालामुखी की तरह दहकता और बिना मतलब की उत्तेजना में अँधा ।

प्रसव वेदना :---- जो तन लगे सो तन जाने। अब बच्चे के जन्म का और दर्द का क्या सम्बन्ध है ? यह बात भी मेरी समझ से बाहर है। दिल सारा दिन सारी रात खून पम्प करता है। क्या इस में थकावट या किसी और वजह से दर्द होता है ? हम दिन में कितनी बार नाजुक सी पलके झपकाते हैं। क्या इन में दर्द होता है? साँस लेने में सहायक माँस पेशियाँ दिन में कितनी बार सिंगुड़ती और फैलती हैं। क्या इन में दर्द होता है? तो फिर बच्चे को पैदा करने में सहायक माँस पेशियों और हिस्से में ही क्यों दर्द होता है?

हमारे द्वारा खाया गया खाना मुँह से ले कर मल द्वार तक मीटरों लम्बा सफर तय करता है। खाने को मुँह से ले कर मल द्वार तक जाने में कोई परेशानी नहीं तो तो बच्चे को माँ के गर्भाशय से ले कर योनि द्वार तक जाने में इतनी परेशानी क्यों? आखिर गर्भाशय से योनि द्वार तक का रास्ता कितना है? दिल, फेफड़े, गुर्दे, आँख, कान, नाक, जीभ आदि सारे अंग आराम से, शांति से, पीड़ा रहित सारी उम्र काम करते हैं। तो बच्चे को जन्म देने में सहायक माँसपेशियों और अंग में इतनी दर्द क्यों? क्या यह अंग, माँसपेशियाँ शांति से आराम से काम नहीं कर सकते ?

लम्बाई, चौड़ाई और बल : ---- पुरुष लम्बाई, चौड़ाई और बल में स्त्रियों से ज्यादा ताकतवर होते हैं। आखिर क्यों ? वैज्ञानिक इसका बहुत ही बेतुका सा स्पष्टीकरण देते हैं कि क्रमिक विकास के दौरान, जब अभी इंसान जंगलों में ही रह रहा था। तब पुरुषों को परिवार के पालन पोषण के लिए शिकार पर जाना पड़ता था। ओर स्त्रियाँ बच्चों के साथ घरों में ठहरती थीं। शिकार पर जाने से पुरुषों को लगातार खतरे का सामना करना पड़ता था। सो क्रमिक विकास में पुरुष लम्बाई, चौड़ाई और बल में स्त्रियों से श्रेष्ठ हो गए।

हमारे बुद्धिमान वैज्ञानिकों से मुझे ऐसे स्पष्टीकरण की कतई उम्मीद नहीं थी। क्या खतरा शिकार पर गए मर्दों को ही था ? पीछे रह गई औरतों और बच्चों को नहीं ? क्या तब के शेर, हाथी, साँप, बिच्छू, कुत्ते, चूहे, मधुमक्खियाँ, कीड़े मकोड़े, बारिश, आंधी,



तूफान, बर्फ आदि इतने समझदार थे कि वे सोच लेते थे कि यहाँ कमजोर औरते ओर बच्चे है। इन पर हमला नहीं करना। एक तो जंगल में इंसान को लगातार हर जानवर से खतरा ओर ऊपर से घर भी पक्के नहीं।

अब बात हम महाबली पुरुषो ओर मर्दों की करते है। क्या पुरुष सच में इस क्रमिक विकास में इतने बलिष्ठ ओर स्मर्थवान विकसित हुए है कि वो हर खतरे का सामना कर सके ? क्या औरतो की ही तरह पुरुषो को भी गर्मी, सर्दी, बारिश, बर्फ, तूफान, हाथी, गेंडे, सांप, चूहे, मच्छरो, मधुमक्खियो आदि से उतना ही खतरा नहीं ? बड़े बड़े जानवर, बाढ़, तूफानो आदि की तो बात छोड़ो। महाबली पुरुष तो सूक्ष्मदर्शी बैक्टीरिया, वायरस से भी अपनी रक्षा नहीं कर पाता। नमक, चीनी, CO<sub>2</sub>, O<sub>2</sub>, SO<sub>2</sub>, NO<sub>2</sub> etc. जैसे molecules तक तो इंसान पर हावी हो जाते है ओर इंसान को मारने तक की भी क्षमता रखते है।

**कोशिका दक्षता और जैव सांख्यिकी** (Cell efficiency or Bio statistics) : --- एक कोशिका वाले जीव और बहु कोशिका वाले जीव (यानि खरबो खरब कोशिका वाले जीव)

एक कोशिका : बहु कोशिका यानि

एक कोशिका : खरबो खरब कोशिकाएँ

क्या अनुपात है यह ! पर इतने लम्बे क्रमिक विकास के बावजूद इनके काम एक से ही है। इंसान क्रमिक विकास के इतने लम्बे सफर से हो कर गुजरा है। इंसान multicellular और division of labour की सुविधा के साथ है। हर काम के लिए कई कई specialized cells, organs & organ systems की एक पूरी फौज को विकसित किया है। इतने सारे ताम जाम और लाखो करोड़ो सालो के क्रमिक विकास के बावजूद इंसान की हैसियत acellulars जैसी है। या शायद उस से भी बद्तर।

(1) इंसान अपने इलाके, वातावरण, गर्मी, सर्दी, बारिश, बर्फबारी आदि से adapt नहीं कर पाते। पर acellulars अपने अपने इलाके की गर्मी, सर्दी, बर्फ आदि में सफलतापूर्वक रह लेते है। Fresh water, marine water, shallow water, hot water, springs etc. में मिलने वाले acellulars भी अपने अपने वातावरण से पूर्ण अनुकूलन स्थापित करते है।

(2) Acellulars में एक ही cell हरफनमौला होता है। यह एक सेल ही जीवन से सम्बंधित तमाम काम स्वयं ही कर लेता है। जैसे खाना खाना, पचाना, मल त्याग, श्वसन क्रिया, gas exchange, चलना फिरना, अनुकूलन, sensibility, immunity, reproduction. वहीं अति विकसित मानव ने हर काम के लिए हजारो लाखो specialized cells की एक पूरी फौज तैयार कर रखी है (cardiac cells, neurons, nephrons, rod cells, cone cells, bone cells, epidermal cells etc.) और organs & organ systems भी विकसित कर रखे है। पर परिणाम वही ढाक के तीन पात । जबकि क्रमिक विकास से गुजर कर आने के कारण हमारे cells की कार्य दक्षता, cell efficiency acellulars से अच्छी होनी चाहिए।

(3) Acellulars खाने की कमी के कारण मर जाते हैं और इंसान भी खाने की कमी के कारण मर जाते है। जबकि इंसानो के पास Nervous system, sensory system, digestive system, locomotive facility etc. होती है। तो भी !

(4) हम भी division of labour के बावजूद, sensibility, intelligence, tricky brain etc सुविधाओ के बावजूद acellulars की ही तरह किसी भी प्राकृतिक आपदा से खुद को बचा नहीं सकते है।

(5) हमारा specialized खरबो cells से सुसज्जित शरीर मात्र एक element, oxygen की कमी से धाराशाई हो जाता है। जबकि कुछ acellulars ने aerobic or anaerobic respiration की दोनों तरह की सुविधाएँ अपने में विकसित की हुई है। यह प्रावधान, सुविधा क्रमिक विकास में acellulars - a unit of life से इंसानों तक आते आते कितनी विकसित हो जानी चाहिए थी ? यह अगला वंश सुधारों के साथ या अगला वंश विकारों के साथ हुआ ? यह सर्व पक्षीय विकास नहीं सर्वपक्षीय पतन है।

(6) Reproduction के मामले में चाँद विजेता इंसान acellulars की ही तरह बेबस है। इंसान का reproduction के मामले में भी कोई भी नियंत्रण नहीं है। Acellulars भोजन और जगह की उपलब्धता के हिसाब से खुद बा खुद reproduce होना शुरू हो जाते हैं। जगह और भोजन की कमी से इनका reproduction process खुद बा खुद ही रुक जाता है। यानि acellulars का इस प्रोसेस पर कोई नियंत्रण नहीं है। Acellulars में reproduction खाना और समय तय करते हैं। ऐसे ही इंसानों में कुछ महिलाएँ गर्भ धारण नहीं कर पाती, कुछ का गर्भपात हो जाता है, कुछ का गर्भ काल बहुत कष्टदायी होता है पर बच्चा सही सलामत पैदा हो जाता है, किसी औरत का गर्भकाल सही रहता है पर प्रसव के समय complications हो जाती है। जिसके कारण कभी कभी बच्चा या माँ या दोनों ही मर जाते हैं। लड़का होगा, लड़की होगी, बच्चा कब पैदा होगा - इन सब बातों पर भी इंसान का कोई नियंत्रण नहीं है। अगर बच्चा सुरक्षित पैदा हो भी जाए तो ढाई तीन साल तक उसकी परवरिश बहुत मुश्किल होती है। माँ पर सौ तरह की खाने पीने, कहीं आने जाने, कपड़े पहनने की पबन्दियाँ। बच्चा न हो गया कोई penalty हो गई। आदमियों को भी reproduction के मामले में जुड़ी कई परेशानियाँ हैं। ऊपर से useless, worthless, periodically any time any where natural sexual assaults. Reproduction के मामले में कोई सुविधा नहीं। ऊपर से इन खरबो cells लिए रोटी, कपड़ा, माकन आदि का प्रबंध करते करते इंसान का जो बैंड बजता है वो अलग से। हम तरह तरह के खरबो specialized cells विकसित करके भी बेबस हर मामले में एक cell वाले जीव की ही तरह हैं। क्या यह सब विकास में आया ? क्रमिक विकास और इसके सिद्धांतों ने इंसान की सुरक्षा, पालन पोषण, वातावरण आदि को ले कर क्या बढ़िया सोचा ? यहाँ पर हम bio statistics apply करते हैं। अगर acellulars एक cell से अपने शरीर के आकर के हिसाब से अपने अपने वातावरण में सफल, विजयी हैं तो इतने सारे अलग अलग तरह तरह के खरबो cells की मदद से तो इंसान में कुछ special skills naturally होनी ही चाहिए। ना कि कदम कदम पर दुर्गति। गर्मी, सर्दी, बरसात, बर्फबारी, प्राकृतिक आपदाओं, जीव जंतु, virus, bacteria तो छोड़ो। इंसान की तो नमक, चीनी ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि molecules ही खूब ऐसी तैसी कर देते हैं। प्रकृति माँ अपनी सबसे उत्तम, अनुपम कलाकृति के साथ ऐसा नहीं कर सकती। यह सब designer है। प्राकृतिक नहीं।

**अंडाणु और शुक्राणु का आकार :** ---- अंडाणु और शुक्राणु का आकार भी BNW में एक पुख्ता सबूत है, हमारे समाज और इंसानों के designer (रचित, कृतिम) होने का। जैसा कि इंसानों में सब से बड़ा cell/कोशिका अंडाणु है और सब से छोटी कोशिका शुक्राणु है। आखिर क्यों ? अंडाणु और शुक्राणु में quantitatively & qualitatively same genetic material है। तो दोनों के आकार में इतना अंतर क्यों ? अपने आकार के हिसाब से शुक्राणु को एक लम्बा रास्ता तय करना होता। एक medium आदमी से दूसरे medium औरत में जाना होता है। Different environment, conditions, pH, challenges तो शुक्राणु के पास क्या है इन सब का सामना करने के लिए ? छोटे से शुक्राणु के पास क्या ऊर्जा का स्त्रोत्र है इतना लम्बा रास्ता तय करने के लिए ? जबकि अंडाणु को औरत के शरीर में ही रहना होता है। किसी भी तरह का

वातावरणीय बदलाव और एक लम्बा रास्ता तय नहीं करना होता है। अंडाणु और शुक्राणु के आकार में अंतर की वजह BNW ही है। औरत के पास (यानि मैं) Atomic genome/आणविक गुण सांरणी है और पुरुष के पास Manual & mechanical genome/यांत्रिक गुण सांरणी होती है। जाहिर सी बात है कि Atomic genome and Manual & mechanical genome से आकार में बड़ा होगा। क्योंकि आणविक गुण सांरणी में genes के काम करने का ढंग आणविक है यानि Atomic work performing mechanism है। दूसरा आणविक गुण सांरणी में ब्रह्म ज्ञान (extreme science or atomology) का भी software/जानकारी है। ब्रह्म ज्ञान से मतलब polymorphism, multimorphism, pseudomorphism, capability to see or control the atom, control of all types of chemical & biochemical reactions, transformation & nuclear transformation, और कई तरह की powers, skills, caliber जैसे ability of creation, operator & destroy ये सब सुविधाएँ और जानकारी यांत्रिक गुण सांरणी में नहीं होती। आणविक गुण सांरणी/Atomic genome (AG) में व्यापक विस्तृत आनुवंशिक सामग्री/genetic material होता है। इसी लिए AG आम MMG से आकार में बड़ा होता है। यही वजह है कि अंडाणु शुक्राणु से आकार में बड़ा होता है। अंडाणु में kingdom Atomic का genetic material है और शुक्राणु में kingdom Animalia का genetic material है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि इस युद्ध शैली में इंसान को BNW की जरूरतों और उद्देश्यों की पूर्ती करने के लिए ही रचा गया है, गड़ा गया है।

औरत के पास वह genetic material, आनुवंशिक सामग्री है। जिसे चुराना, कॉपी करना या डिकोड करना है। और आदमी के पास उतनी ही आनुवंशिक सामग्री है जिससे कि यह आणविक गुण सांरणी चोरी हो सके, कॉपी हो सके और डिकोड हो सके। That's all. इसीलिए आदमी औरत से लम्बाई, चौड़ाई और बल में ज्यादा अच्छा होता है। क्योंकि अपने यांत्रिक गुण सांरणी/ MMG के कारण आदमी को अपने सारे ही काम manually or mechanically करने होते हैं। इसके लिए लम्बाई, चौड़ाई और बल की जरूरत पड़ती है। पर वास्तव में औरत एक पूर्ण आणविक प्राणी है। उसे अपने सारे ही काम अणु की शक्ति से करने होते हैं। अणु को नियंत्रित और संचालित करने के लिए कोई विशेष लम्बाई, चौड़ाई, बल, परंपरागत शारीरिक आकर (शरीर, दिमाग, हाथ, पैर) की जरूरत नहीं पड़ती। इसके लिए आणविक क्षमता, अणु को नियंत्रित और संचालित करने के लिए सिर्फ उपयुक्त गुणों/genes की ही जरूरत होती है। सब कुछ बिना बल के इस्तेमाल से आनुवंशिक रूप से/genetically (just like switch on off करने की तरह) नियंत्रित होता है। तभी इस विशेष तौर से रचित और भ्रमित समाज में देवी माँ को ही सिर्फ ज्योति रूप/निराकार रूप में पूजा जाता है। क्योंकि वो पूर्ण आणविक है और उन्हें परंपरागत शारीरिक आकर की कोई जरूरत नहीं पड़ती।

**Atomology** : ---- हम मानते हैं कि हमारी atomic science पूरी तरह से systematic &

scientific/सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक है यानि प्रमाणित है। पर मेरे हिसाब से हमारी Atomology/knowledge about element और हमारा आणविक विज्ञान पूरी तरह से काल्पनिक और किसी परी कथा सा ही है। हमारी सारी chemistry, biochemistry किसी sci fi melodrama से कम नहीं है। इंसानों की chemistry को ही हवाई घोड़े दौड़ाना कहते हैं। एक बार अकबर ने वीरबल से जिद्द की कि घर नीचे नीव से ही क्यों बनना शुरू होता है ? मुझे तो ऊपर छत से घर बनाना शुरू करना है। छत से घर बनाते हुए नीचे नीव तक आना है। हमारी chemistry, biochemistry अकबर महान की इसी जिद्द को पूरा करती है। हमारे वैज्ञानिक और प्रोफेसर बिना पाँव की ही chemistry को दौड़ाई ले जा रहे हैं। जैसे हम Biology में "अनुकूलन" के मामले में SP द्वारा बुरी तरह से भ्रमित हैं, सम्मोहित हैं। ठीक यही हाल हमारी chemistry के मामले में है।

Chemistry = कै + mystry = क्या राज है ? जैविक नाभिकीय युद्ध और BNW वास्तव में chemistry or biochemistry पर ही आधारित है। हमारी इस रचित, कृत्रिम दुनिया में इनका भी कृत्रिम होना लाजमी है।

Atomic weight & atomic number : ---- अणु/atom इतना इतना छोटा होता है कि इंसान को दिखाई तक नहीं देता। इससे भी बढ़ कर वैज्ञानिकों को अणु की सटीक स्थिति, exact location का भी पता नहीं होता। एटम इतना छोटा है कि दिखाई नहीं देता। तो फिर इसका nucleus/नाभिकितनी कितनी छोटी होगी ? प्रोटोन और न्यूट्रॉन तो और भी छोटे होते होंगे। जो एटम की nucleus में दोनों आराम से फिट हो जाते हैं। और electron बेचारा तो इतना इतना छोटा होता है कि atomic weight/आणविक भार में इनका contribution ना की ही बराबर होता है। अब atom की location uncertain है और ऊपर से प्रोटोन, न्यूट्रॉन इतने छोटे हैं कि कितनी भी मात्रा हो एटम की nucleus में आराम से set हो जाते हैं। OMG तो ऐसे क्या हम किसी एटम का atomic weight और atomic number माप और गिन सकते हैं ? !!!! Electron जो इतने छोटे होते हैं और धूर्त गति से अपने अपने orbit/shells में घूम रहे होते हैं। क्या हम orbit, shell देख और detect कर सकते हैं ? क्या हम अति सूक्ष्म धूर्त गति से घूम रहे electron, valence shell electron को गिन सकते हैं ? जबकि हम electron की तरह धूर्त गति से नहीं पर तेज गति से घूम रहे पंखे के बड़े बड़े macroscopic पर तो गिन नहीं पाते।

Mendeleev's Periodic table : --- ओह भगवन जी 1869 में Mendeleev ji ने ढेर सारे elements (60+) का atomic weight or atomic number exact calculate करके "Periodic table" publish भी करवा दिया !!! Really toooooo much 1869 में ऐसी कौन सी machine, microscope, technology, mechanism था जिन्होंने exact atomic weight or atomic number calculate कर डाले ! Atomic weight तो minus में माप/calculate कर लिया !!!

Atomic weight of proton =  $1.67262 \times 10^{-27}$  Kg.

Atomic weight of neutron =  $1.6726231 \times 10^{-27}$  Kg.

Atomic weight of electron =  $9.1093837015 \times 10^{-31}$  kg. कौन सी तुला से at. Wt. को मापा गया ?!!!!

यह तो धरती पर बैठ कर अपने हाथों से आसमान पर जगमगा रहे चाँद को पकड़ने के जैसा है।

Chemical formulae of compounds & molecules : ---- इंसान भी सच में too much होते हैं। इंसानों को single unit atom or element तो दिखाई नहीं देता। पर हर तरह के complex से भी complex molecules or compounds के वैज्ञानिकों ने exact chemical formulae बना डाले, बता डाले !!! अब हम कैसे कह सकते हैं कि sodium phosphate का formula  $\text{Na}_2\text{PO}_4$ , mol wt 119.976 g/mol ही है ? अब हम कैसे पूर्ण आत्म विश्वास के साथ कह सकते हैं कि  $\text{Na}_2\text{PO}_4$  में यहाँ हम मान रहे हैं कि  $\text{Na}_2$  है वहाँ  $\text{Na}_2$  ही है ? क्या हमने  $\text{Na}_2\text{PO}_4$  में  $\text{Na}_2$  की जगह  $\text{Na}_2$  के tests, confirmatory tests करके चेक किया है कि यहाँ हम  $\text{Na}_2$  सोच रहे हैं। वहाँ  $\text{Na}_2$  ही है। Na की जगह Sulphur, Pottasium नहीं है। हमें कैसे पता कि phosphorus की जगह Phosphorus ही है Iodine या Zinc नहीं।  $\text{O}_4$  की जगह  $\text{O}_4$  ही है, O,  $\text{O}_2$ ,  $\text{O}_3$ ,  $\text{O}_5$ ...नहीं। क्या इनके इनकी locations पर confirmatory tests किए गए हैं ? वैज्ञानिकों को कैसे पता चलता है कि यहाँ single bond है या double bond या triple bond क्या half, penta, hexa bond नहीं हो सकते ? क्या सच में वैज्ञानिकों को दो atoms और elements में कोई bond दिखाई दे रहा होता है ?

DNA molecule one of the complex structure और Watson and Crick जी ने 1953 मे ही DNA का सटीक model दुनिया को बता दिया। DNA का diameter 2nm, complete turn 3.4nm हर turn मे 10 base pair. दो successive pairs मे .34 nm की दूरी। इतना ही नहीं adenine, thymine, guanine, cytosine के भी exact chemical formula बता दिए। सूक्ष्मदर्शी cell के अति सूक्ष्म nucleus मे इतना huge genetic material. Nucleus मे तीन मीटर लम्बा genome होता है ! Watson & Crick ने कौन सा scale ले DNA का diameter और दो successive pairs के बीच की दूरी माप ली ? ! इतना ही नहीं A, T, G, C का सटीक फार्मूला भी बता दिया। A, T, G, C कितने कितने कितने कितने छोटे होंगे ! There are about 3 billion nucleotides in human DNA. एक human cell मे इतनी cell organelles के साथ इतना बड़ा genetic material और वैज्ञानिको ने तमाम cell organelles & genetic material की exact information ढूँढ ली ! Watson & Crick ने DNA की सारी जानकारी X - ray diffraction photographs द्वारा ली ! What a joke ! क्या photographs ने खुद बोल कर DNA का molecular formula/structure इन महान वैज्ञानिको को बताया था ? OMG Tooooo much

Multisteps chemical reactions : ---- हर multi step chemical reaction मे कई steps होते है। हर step के अपने reactants, products, enzymes, coenzyme, catalysts etc. होते है। और हर step का अपना rate of a chemical reaction यानि समय अवधि /time period होता है। कुछ chemical reactions/रासायनिक क्रियाएँ एक सेकंड या इस से भी कम समय मे हो जाती है। Really fairy tales किसी भी cell/कोशिका मे chemical reaction तब ही संभव है जब वो सेल जीवित होगा। कोई भी सेल तभी जिन्दा होता है। जब वो किसी शरीर और पेड़ का हिस्सा होगा। शरीर के भीतर hepatic cells, nerve cells, cardiac cells, muscle cells, epithelial cells etc. होते है। इन cells के भीतर क्या हो रहा है ? कौन सी रासायनिक क्रिया हो रही है ? उस biochemical reaction के reactants, products, enzymes, coenzymes, catalyst, conditions क्या क्या है ? और उन products का इंसानी शरीर पर क्या क्या प्रभाव पड़ रहा है ? कोई भी वैज्ञानिक बाहर से शरीर को देख कैसे अनुमान लगा सकता है और जान सकता है ? सब कुछ शरीर, पेड़ के भीतर इतना सूक्ष्मदर्शी है। Calvin cycle, Hatch & Slack cycle, Glycogenolysis, glycolysis, glycogenesis etc. की study करो तो ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक सभी हद्द पार कर flora & fauna के cells के भीतर ही घुस गए। तभी इतनी सूक्ष्मदर्शी जानकारी इन्हें पता लग पाई ।

Avogadro's number : --- A principle stated in 1811 by the Italian chemist Amadeo Avogadro (1776-1856) that equal volumes of gases at the same temperature and pressure contain the same number of molecules regardless of their chemical nature and physical properties. This number (Avogadro's number) is  $6.023 \times 10^{23}$ .

क्या सटीक संख्या ढूँढी है !  $6.023 \times 10^{23}$  -किसने और कैसे इसे गिना होगा ? और कितनी बार, कितनी गैसों के लिए गिना होगा ?

**Survival of the fittest** : ---- "Natural selection" डार्विन की यह theory भी Atomology के तमाम पक्षों की तरह बहुत ही हास्यप्रद लगती है। क्या सच में हम Survival of the fittest or Natural selection से गुजर कर आएँ हैं ? इस पर विचार करना बहुत ही जरूरी है। हम अपनी बैसाखियों/accessories (घर, कपड़े, मौसम के हिसाब से खाना पीना, दवाएँ, पंखा, हीटर, टेक्नोलॉजी आदि) के दम पर जीवित हैं ना कि "Survival of the fittest" के वहम के कारण। इंसान तो इस "Natural selection" के किसी भी इम्तिहान में शामिल होने के योग्य तक नहीं है। हमारी बैसाखियाँ ही हमें जिन्दा बनाए हुए हैं ना कि हमारा सब से ज्यादा विकसित होने का वहम और भ्रम। एक हष्ट पृष्ठ इंसान को दो, चार दिनों के लिए रेगिस्तान में भगवान जी के आसरे छोड़ दो। जैसे कि रेगिस्तान में दूसरे जीव जंतु, पक्षी, कीड़े मकोड़े, सूक्ष्मदर्शी आदि बिना किसी खास सुविधा के रहते हैं। उस इंसान को जल्दी ही पता चल जाएगा कि वो कितना survival of the fittest है। ऐसे ही एक इंसान को बैसाखियों के बगैर अंटार्कटिक/poles पर अकेले छोड़ दो। एक घंटे के भीतर ही उसे Natural selection की सच्चाई पता चल जाएगी। जब सिर पर मौत ताँडव कर रही होगी।

दरअसल हम क्रमिक विकास का नतीजा हरगिज भी नहीं है। क्रमिक विकास ऐसी घातक गलतियाँ नहीं कर सकता। इंसान BNW की needs & objectives के हिसाब से ही design किए गए हैं। ताँकि इन पर काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, छल, हठ, रोटी, कपड़ा, मकान, साम, दाम, दंड, भेद, घात आदि जैसे हथियारों का आसानी से इस्तेमाल हो सके। अब देखो अनुकूलन, atomology के मामले में ही हम पराभौतिक शक्तियों द्वारा कितने भ्रमित किए गए हैं।

अगर इंसान क्रमिक विकास का नतीजा होते तो इंसानों में Biological or evolutionary drawbacks हरगिज ना होते। इंसानों के पास अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए कोई ना कोई substitute जरूर होता। प्रकृति माँ और क्रमिक विकास हमें सख्त हालातों, खूंखार जानवरों, बिमारियों आदि में ज्यूँ लावारिस ना छोड़ती। "Atomology section" सारा "human limits" से बहार है। पर फिर भी electron, proton, neutron, valency shell electron, atomic weight, atomic number आदि के हिसाब से जो chemical equations, calculations तैयार करते हैं। वो सब सही ही होती हैं। क्योंकि हमें proton, neutron, electron, atomic weight, atomic number, valence shell electrons का "सटीक" ज्ञान है। यह सारी basic, microscopic, subatomic details/information हमें पराभौतिक शक्तियों/SP द्वारा उपलब्ध करवाई गई है। SP ने ही हमें यह सारी sub atomic जानकारी बताई है। Atomology & its history को बनाने में इंसानों का कोई योगदान नहीं है। इंसान atom तक तो देख नहीं सकता तो atom इसके sub particles like electron, proton, neutron की history create करने में इसका क्या योगदान होगा ?!!!

क्योंकि हम BNW के रचित समाज में रहते हैं। हमारी सारी पृथ्वी पर ही जैविक नाभिकीय युद्ध का सेट लगा हुआ है। चूँकि यह set पराभौतिक शक्तियों/SP द्वारा लगाया गया है। तो यह set, इस पर मौजूद सारी चीजें, जानकारी आदि सब कुछ SP द्वारा ही उपलब्ध करवाई गई है। हकीकत में जीवन 3 अप्रैल 1975 से पृथ्वी पर मेरे आगमन से ही शुरू हुआ है। और हमारी दुनिया को jet age, net age, nuclear age का design करना था। सो उस हिसाब से चीजें, जानकारी SP (फिल्मों के निर्माता, निर्देशक, सेट डिज़ाइनर की तरह) द्वारा उपलब्ध करवाई गई है, बताई गई है। इन सब में इंसानों का कोई योगदान नहीं है। अब फिल्म "योद्धा अकबर" में ऐश्वर्य और ऋतिक रोशन ने योद्धा बाई और अकबर की भूमिका निभाई है। तो क्या मुगल कालीन का set खुद ऐश्वर्य और ऋतिक के बनाया ? नहीं इन कलाकारों को फिल्म के निर्माता, निर्देशक द्वारा यह set उपलब्ध करवाया गया है। ठीक ऐसे ही BNW के set पर हम अपना अपना किरदार निभा रहे हैं। इंसानों ने कोई आविष्कार नहीं

किया। सिद्धांत, theory, philosophy, norms, values, civilizations, culture, वेद, ग्रन्थ, साहित्य, मौर्य काल, गुप्त काल, विक्रमादित्य काल, मुगल काल, ब्रिटिश काल, स्वतंत्रता संग्राम, भारत विभाजन आदि सब designer है और कागजो पर ही है। हकीकत में ऐसा कभी कुछ हुआ ही नहीं। क्योंकि हमारी धरती पर जीवन ही 3 अप्रैल 1975 से ही शुरू हुआ है। वर्ना हम जैसे naturally selected इंसानों को जंगलों में रहते हुए पहली गर्मी में ही "survival of the fittest" को खाना, पानी, संक्रमण, धूप, दूसरे जीव, कीड़े मकौड़े, वातावरण, आदि ने सबक सीखा देना था और बहुत से लोग ऐसी कठिन परिस्थितियों में मर जाते। अगर कुछ सख्त जान बचते भी तो वो सर्दियों में ठण्ड से मर जाते। हम जैसे इंसान 4-5 पीढ़ियों से ज्यादा खुले जंगलों में, घर, खाना, पानी, पंखा, हीटर, आग, आदि के बिना रह नहीं पाते।

## Indian geographical and historical (IGH)clues/भारतीय भौगोलिक और

ऐतिहासिक सुराग : ---- विज्ञान की ही तरह भौगोलिक और ऐतिहासिक संकेत इतने जबरदस्त हैं कि कोई भी समझदार, दूरदर्शी, संभावनाओं में विश्वास रखने वाला, जागरूक-खोजी प्रवृत्ति का, बात में से मुद्दा निकालने वाला, खुले दिमाग का इन सुरागों को नकार ही नहीं सकता। यह सुराग भी यही बताते हैं कि हम एक रचित समाज, कृत्रिम दुनिया, बनावटी ब्रह्माण्ड में रहते हैं। हमारा इतिहास, हमारे स्मारक स्वाभाविक तौर पर समकालीन परिस्थितियों में नहीं बने हैं। बल्कि इन्हें BNW के तहत design किया गया है। IGH clues इतने महत्वपूर्ण हैं कि BNW में इन्हें अनदेखा नहीं कर सकते। तभी विज्ञान के बाद मैंने इन्हें दूसरा स्थान दिया है। हर एक सुराग अपने आप में एक सम्पूर्ण कहानी, कथा लिए हुए है।

अण्डमान निकोबार – लक्ष्य प्रायद्वीप : ----- Indian geographical & historical में पहला सबसे बड़ा सुराग कि हम एक designer society में रहते हैं और एक अति भयंकर, अदृश्य जैविक नाभिकीय युद्ध चल रहा है। यह मात्र इत्तेफाक, अचम्बा या कोई अलौकिक करिश्मा नहीं है कि भारत के पास दो विपरीत दिशाओं में दो द्वीपीय क्षेत्र हैं। और मजे की बात उनका नाम अण्डमान निकोबार और

है। अण्डमान निकोबार और लक्ष्य प्रायद्वीप हमारे भारत के और इस दुनिया के designer होने और BNW का पुख्ता सबूत हैं। हम designer geography or designer history में रह रहे हैं। जो अलौकिक शक्तियों (super powers/SP) द्वारा design की गई है। और यह द्वीपीय समूह हमारे world के designer होने पर मील का पत्थर की तरह है। हमारी दुनिया को geographically or historically BNW की needs & objectives के हिसाब से design किया गया है। A prominent clue.

Bio nuclear war or genetic war में अंडाणु में मौजूद genes/atomic genome ही निशाने पर है अर्थात् लक्ष्य पर है इसीलिए अंडमान => अंडे (अंडा) + मान। जिसके पास Atomic genome है वो ही इन ब्रह्माण्डों में सबसे ज्यादा शक्तिशाली और सम्माननीय है।

निकोबार = nico + bar => nicotine + bar/बार बार/pub/pubrty.

nicotine + bar => इंसान पर (जो निशाने पर है) काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार के बार बार आक्रमण/after puberty sexual attacks psychologically any time anywhere. हमें पता है कि after puberty, अंडाणु में मौजूद genes/गुण तक एक खास समय पर ही पहुँचा जा सकता है। अंडाणु में मौजूद genetic information को steal, copy, decode करना है तो एक निश्चित समय अवधि, cycle के बाद ही संभव है। बार बार मौका मिलना अंडाणु तक पहुँचने का।

Cellular jail :---- Cellular war/कोशिका युद्ध में हमारा हर cell निशाने पर है। क्योंकि SP(Super powers/alokik shaktiyan) genes/गुणों को नियंत्रित करना जानती है। और genes हमारे हर cell में मौजूद हैं। Genes को नियंत्रित करने का मतलब है कि उस इंसान के हर cell को नियंत्रित कर लिया। Genes और शरीर का सम्बन्ध ऐसे ही है जैसे TV or

remote का। शरीर रुपी TV का remote genome होता है। Genome को control करते ही हमारे शरीर के सभी तरह के cells यानि हमारा सारा ही शरीर (+ -) SP के नियंत्रण में आ जाएगा। जिससे यह शक्तियाँ हमारे शरीर में कोई भी मनचाही +ve or -ve बदलाव कर सकते हैं। इंसान इस सब में कुछ नहीं कर सकता। पूरी तरह से बेबस होगा और अपने शरीर में होने वाले इन बदलावों को रोक नहीं सकता। क्योंकि इंसान genes को नियंत्रित नहीं कर सकता। सो हम यह भी कह सकते हैं कि इंसान एक cellular jail यानि अपने ही शरीर/कोशिकाओं में कैद है यही शारीरिक जेल/कोशिका जेल/cellular jail/bodily jail.

कोशिका युद्ध - दुश्मन कोशिका ही कर रहे हैं कि गुणिय युद्ध/genetic war शुरू हो। क्योंकि अभी तक genetic war शुरू नहीं हुई है

आजकल एक कहावत आम प्रचलित है कि खून सफेद हो गया। खून कभी सफेद नहीं होता। आखिर भगवान जी हमारे खून में से हीमोग्लोबिन तो नहीं निकाल सकते। हमारे शरीर पर +ve or -ve SP का बारी बारी से एक निश्चित समय के लिए नियंत्रण रहता है। जिस दौरान जब -ve SP का नियंत्रण होता है तो इंसान अपने नियंत्रण से बाहर हो जाता है। और हर तरह का गलत काम करने लगता है और घर वालों को लगता है कि खून सफेद हो गया। चूँकि हम सब जैविक नाभिकीय युद्ध की युद्धभूमि में रहते हैं। युद्धभूमि पर दो ही तरह के लोग होते हैं। एक दोस्त और एक दुश्मन यानि एक हमारी सेना के लोग दूसरा दुश्मनों की सेना के लोग। यह दोनों तरह के लोग सामाजिकता के परिदृश्य में युद्ध लड़ रहे हैं। सब से महत्वपूर्ण हमें यह सब बाते पता ही नहीं। अनभिज्ञता से हम कभी कभी किसी दुश्मन को अपना जिगरी दोस्त बना लेते हैं या फिर कभी कभी किसी दुश्मन से ही शादी कर लेते हैं या फिर हमारे रिश्तेदारों में ही कोई दुश्मन होता है। इसीलिए आजकल सब घरों में कलह कलेश, मन मुटाव, मुकाबलेबाजी, नफरत आदि बढ़ रहे हैं। कभी कभी ऐसा भी होता है कि हम सामने वाले को नहीं समझ पा रहे होते हैं।

अज्ञानतावश हम उसे अपना दोस्त मान लेते हैं। पर वो दोस्त के रूप में दुश्मन होता है। जिसे हमारी आत्मा पहचान लेती है। हमारी और हमारी आत्मा की आपस में बहुत दूरी है। सो हम कुछ नहीं समझ पाते। पर हमारी आत्मा उससे बात करना पसंद नहीं करती और हम उस इंसान से खुद को दूर करना शुरू कर देते हैं। कभी कभी हम पर -SP का इतना असर होता है कि कोई हमारा दोस्त, हितैषी होता है पर हम -SP के प्रभाव में इतना होते हैं कि अपने असली दोस्त हितैषी को पहचान नहीं पाते और खुद को उससे दूर कर लेते हैं। -SP समय समय पर (periodically, nico bar) बार बार काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, आलस्य, छल, घात, द्वेष, साम, दाम, दंड, भेद, रोटी, कपड़ा, माकन, नौकरी, रिश्ते नाते, बच्चे, बीमारी, लिंग आदि आदि का आक्रमण कर या फिर कई तरह की परिस्थितियों का सहारा ले इंसान को गलत काम के लिए उकसाएगी। अगर इंसान इस उकसाने में आ गया या अपनी परिस्थितियों से हार कर गलत रास्ते पर आ गया तो उस पर -SP का ज्यादा प्रभाव/अधिकार हो जाएगा और अगर हम इन सब को नजरअंदाज कर देंगे और हम हर हाल में सद् मार्ग पर चलेंगे तो हम पर +SP का ज्यादा अधिकार और प्रभाव रहेगा। हम जिस को भी ज्यादा ध्यान, समय देंगे हम पर उसी तरह की SP का अधिकार और प्रभाव हो जाएगा। ठीक जैसे हम शिवजी की पूजा करते हैं तो हम शिवजी की निगाह में आ जाते हैं और अगर हम माताजी की ज्यादा पूजा करते हैं तो हम माताजी की निगाह में आ जाते हैं। अगर हम किसी शैतान, बुरी चीज की उपासना करते हैं तो हम उन बुरी शक्तियों के प्रभाव में आ जाते हैं। ठीक ऐसे ही जैविक नाभिकीय युद्ध में अगर हम गलत काम ज्यादा करेंगे तो -SP का अधिकार/प्रभाव हम पर ज्यादा हो जाएगा। अगर हम तमाम तरह के प्रलोभनों को छोड़ कर सद् मार्ग पर चलेंगे तो हम पर +SP का अधिकार और प्रभाव ज्यादा हो जाएगा। यही cellular war है, शारीरिक जेल और कोशिका/cellular jail. धर्म के रस्ते से ही हम इस जेल से बाहर आ सकते हैं। हम जब इस धरती पर किसी को कैद करते हैं तो हम उसे एक सिमित क्षेत्र (जेल) में ही कैद करते हैं। पर SP ने हमें हमारे ही cells में कैद किया हुआ है। कोई cellular jail भी होती है। इस बात को सिद्ध करने के लिए अण्डेमान निकोबार में cellular jail है। SP किसी को cellular level और आणविक स्तर तक कैद कर सकती है। जैसे हम किसी को शारीरिक तौर पर ही कैद कर सकते हैं। पर उस कैदी की physiology, mental or sexual activities को कण्ट्रोल नहीं कर सकते। SP किसी को भी physical, mental or sexual programming अपने मनचाहे ढंग से genes द्वारा कर सकती है। पर यह सब somatic level(=> शारीरिक स्तर) पर ही है। यहाँ main target germ cells में मौजूद atomic genome ही है। जैविक नाभिकीय युद्ध में चूँकि दुश्मन शुरू में genetic war/गुणिय युद्ध, लैंगिक युद्ध शुरू नहीं कर पाते तो फिर cellular war शुरू की जाती है। Cellular war का मतलब ही यह है कि इंसान को तरह



तरह से परेशान कर genetic war शुरू करवाना। Cellular war, शारीरिक नियंत्रण यानि काम, क्रोध, मोह आदि का सहारा ले इंसान को इतना कु दुःखी करना कि वह खुद ही genetic war शुरू कर दे।

जब मैंने कुछ होश संभाला तो 1982 मे हमारे भारत के राष्ट्रपति सरदार ज्ञानी जेल सिंह जी थे, देश मे सबसे महत्वपूर्ण और बड़ा पद। यह भी कोई इत्तेफाक नहीं है। यह भी एक महत्वपूर्ण, अनदेखा ना करने वाला सुराग है। जो हमे यह बताता है कि (ज्ञानी जेल सिंह) कोई भी पढ़ा लिखा, समझदार, ज्ञानी व्यक्ति इन clues, सबूतों को जानने, अध्यन करने के बाद यह समझ जाएगा कि हम इस धरती नामक जेल मे कैद है। हम अपने ही cells, bodily jail मे कैद है। क्योंकि हमारे cells को किसी और ने नियंत्रित कर रखा है और वो ही हमे संचालित भी कर रहा है।

पोर्ट ब्लेयर :----- Port Blair अंडमान निकोबार की राजधानी है। Port + Blair, Port = बंदरगाह + बा - lair

बंदरगाह => बन दर गह, बंद अंदर से agah => यह चेताने के लिए कि इंसान को अंदर से बंद कैद (कण्ट्रोल) किया गया है यानि cellular jail/genetic jail/bodily jail.

पोर्ट => रिपोर्ट/खबर देना।

बंदरगाह => virgin

बन्दर जैविक नाभिकीय युद्ध मे बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस मायामय रचित संसार मे मै तो समझ ही नहीं पा रही थी कि मुझे इस कृत्रिम संसार मे कैद किया गया है। दुश्मनो का जैविक नाभिकीय युद्ध के चक्रव्यू का परत दर परत राज बंदरो के कारण ही खुलना शुरू हुए। Biological & evolutionary point पर gradual development के कारण मुझे इंसान मे विकार, कमियाँ समझ आने लगी। हमारा gradual development का सिद्धांत यह कहता है कि हम बंदरो से विकसित हुए है। बस gradual deveoplment पर ही काम करते करते मैं यहाँ तक पहुँच गई। इस युद्ध मे बन्दर BNW के लूप का एक सिरा है जिसे पकड़ कर मैंने चलना शुरू किया और इस चक्रव्यू को liner बनाना शुरूकर दिया।

Blair => बा + lair

Baliar = बा +liar

बा = जैसे बा मुलाईजा, बा अदब

Lair = गुफा, माँद, जंगली जानवरो के रहने का स्थान।

+ve or -ve SP ने इंसान के शरीर पर 50% - 50% कब्जा कर रखा है। तांकि -ve powers इंसान पर काम क्रोध मोह, लोभ, अंह आदि को अच्छे से आजमा सके। अगर 100% +ve SP का इंसानी शरीर पर नियंतरण होगा तो काम क्रोध अंह लोभ, मोह आदि इंसान पर असर नहीं कर पाँगे।

यानि सामाजिक, नैतिक और धार्मिक मूल्य, कद्र कीमते, आदर्श; दर्शन, सदाचार, नियम - कानून, मृदु भाषा, उच्च संस्कार, पवित्र आहार, व्यवहार, विचार आदि; काम क्रोध, मोह, लोभ, अंह, द्वेष, ईर्ष्या, आलस्य, छल, हठ अज्ञान आदि के रहने की जगह। -ve SP के कारण ही हम मे इन विकारो का प्रभाव बढ़ता है। वर्ना सब बहुत ही अच्छे, मिलनसार, एक दूसरे से सहयोग करने वाले, शांत, अच्छी सोचनी वाले है। यह विकार ही आणविक गुण सारणी को steal, copy, decode करने का रास्ता बनाते है। अधर्म ही हानि करता है धर्म, सदाचार पर रहना नहीं।

Liar => यह सारा जग झूठा, मिथ्य, रचित है। पुराने जमाने मे काले पानी की सजा के लिए इन द्वीपो का इस्तेमाल किया जाता

था।

जम्मू और कश्मीर :----- यह दूसरा सबसे बड़ा सुराग है। एक मैं कह रही हूँ कि कोई अदृश्य युद्ध चल रहा है। दूसरा हम इस धरती पर कैद है, जो कि विशेषतौर पर रची गई है। यह दोनो ही बाते अंडमान निकोबार और लक्ष्य प्राय: द्वीप सिद्ध कर देते है। तीसरी बात मैं कह रही हूँ कि सारी ही मानव जाति बुरी तरह से retarded/अपंग है। यह घातक अपंगता इंसान मे तीनो ही स्तरों पर है। जैसे कि शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर और योन स्तर। हम भारत को भारत माता कहते है। और इस तरह भारत को स्त्री लिंग मे लेते है। और यह भी कोई इत्तेफाक नही कि भारत का नक्शा भी कुछ ऐसा ही है। भारत का नक्शा देखने मे कुछ ऐसा लगता है जैसे औरत ने अपना एक हाथ अपने कूल्हे पर रखा हो और सिर को दूसरी तरफ किया हो। और इस तरह नक्शे मे जम्मू और कश्मीर भारत माता के सिर को दर्शाते है। कितना सुन्दर और अधभुत संयोग है कि कश्मीर मे एक बहुत ही प्रसिद्ध झील है। जिसे डल झील कहा जाता है। "डल" "झील" "कश्मीर" मे ज्यूँ ही इत्तेफाक से नही है। यह भी जैविक नाभिकीय युद्ध के ब्रह्मांडीय युद्ध नीतिकारो (Bionuclear war strategists) द्वारा जानबूझ कर एक सुराग छोड़ा गया है कि इंसान का दिमाग सही तरह से काम नही कर रहा है, डल/dull है। अगर दिमाग सही तरह से काम नही कर रहा तो शारीरिक और योन स्तर भी सही तरह से काम नही करेगे। क्योंकि इन्हें निर्देश तो दिमाग ही देता है। जो खुद जबरदस्त ढंग से बीमार है। तो वह क्या सही निर्देश देगा और क्या सही काम शरीर से ले पाएगा। यानि कि हमारा शरीर बुरी तरह से dull अर्थात जाम (जम्मू) है। जैसे मैने पहले बताया कि हम खुद को गर्म खून वाले प्राणी मानते है। और हमारे doctor, professors, scientists, तमाम बुद्धिजीवी हमारे warm blooded के मुद्दे से सहमत भी है पर वास्तव मे हमारे सारे लक्षण ठन्डे खून वाले प्राणियों के है ! हम वही समझ पाते है जो SP हमे समझाना चाहती है। SP ने हमे सम्मोहित और भ्रमित कर रखा है। हमारा शरीर और दिमाग सही क्षमता से कार्य नही करते। जाम है, dull है। Really retarded/अपंग है। हमारा दिमाग और अब तक कि सबसे विकसित, उन्नत bio machine "The Brain" को हर दूसरे मुद्दे पर misunderstanding, गलतफहमी हो जाती है। Confuse/भ्रमित हो जाता है। और सही निर्णय नही ले पाता। हमारा दिमाग बहुत आसानी से भ्रमित हो जाता है। और इसे बड़ी जल्दी हर बात मे doubt होने लगता है या बड़ी जल्दी over confidence हो जाता है। वही बात सही निर्णय नही ले पाता। पक्षी जब एक साथ, एक बड़े झुंड मे उड़ते है तो उड़ते उड़ते एक दम से अपनी दिशा बदल लेते है। किसी भी पक्षी को confusion, doubt, misunderstanding, nervousness, puzzle, anxiety, agitation, blankness, disturbance नही होती और सभी पक्षी एक साथ, एक ही गति से अपनी दिशा बदल लेते है। कोई हताहत नही होता। एक सब से ज्यादा विकसित दिमाग और विकसित शरीर वाला मानव है जो सब नियमों का पालन करते हुए, सब safety measures अपनाते हुए भी आए दिन terrific or lethal accidents का शिकार हो जाता है। जम्मू और कश्मीर, डल झील इंसान के बुरी तरह से हर क्षेत्र मे अपंग होने का सूचक है, सुराग है।

हम एक ही बात कई आयामों, नजरियों से परिभाषित कर सकते है। अगर जैविक नाभिकीय युद्ध से जुडी सही और सम्पूर्ण जानकारी है तो। हर आयाम से परिभाषा सत्यता का ही प्रमाण होगी। अब जैसे डल शब्द को हम "डलना/decline" के तौर पर भी ले सकते है। यह जैविक नाभिकीय युद्ध महान शक्तियों, पराभौतिक शक्तियों, दिव्य शक्तियों VS इंसान (-SP or normal human) है। हम सब जानते हैं कि इंसान चाहे अपनी सारी ताकत, क्षमता, सामर्थ्य और शक्ति का इस्तेमाल कर ले। पर वो SP को नही हरा सकता। हमारे समाज मे एक रचित, कृत्रिम (designer) कहावत भी प्रचलित है "अक्ल बड़ी कि भैंस" इस सन्दर्भ मे स्कूल मे शेर और खरगोश की कहानी बच्चों को बताई जाती है। हमारे संसाधन कैसे भी क्यों न हो। मुख्य मुद्दा होता है – will power, management, discipline, coordination, hard work, concentration, timing, self retrain, smartness, activeness, straight forward attitude & caring etc. यह छोटी छोटी बाते, छोटे छोटे संसाधनों के साथ बड़ी जीत मे बदल जाती है। अब जो भी है, जैसी भी हमारी शारीरिक, मानसिक और योन क्षमताएँ है। हमे उन्ही के साथ काम चलाना है। माना हम अपनी शारीरिक क्षमता और सारी संसाधनों का इस्तेमाल कर के भी कदापि SP को नही हरा सकते। पर हम अपनी सूझबूझ, समझदारी और जैसी भी मानसिक क्षमता और धैर्य है उसी का इस्तेमाल कर (-) Super powers के

भ्रमित, दहकते सूरज को डलने पर मजबूर कर सकते है। वैसे भी कहते है – यहाँ ना पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवी। इस BNW मे अगर दिमाग का समुचित इस्तेमाल किया जाए तो हम BNW की रणनीति से जुडी हर समस्या का समाधान ढूँढ सकते है। वैसे भी हमने देखा है कि चींटी एक हाथी की ऐसी तैसी कर देती है। यह भी clue के तौर पर एक designer geographical किस्सा है।

डलने को हम एक और तरह से भी देख सकते है जैसे ढालना, ढालना – mould होना। Is BNW मे हमारी समझ मे आने वाले सभी ज्ञात हथियार जैसे बम, बन्दूक, प्रशिक्षित सेना आदि का इस्तेमाल नहीं हो रहा है। इस युद्ध मे इंसान के पास हर tangible or intangible का इस्तेमाल हो रहा है। इसके लिए (-) SP रोटी, कपडा, मकान, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, साम, दाम, दंड, भेद, द्वेष, ईर्ष्या, आलस्य, छल, हठ, अनपढ़ता, अज्ञानता, शरीर, बीमारी, वातावरण, जल वायु, सामाजिक कद्र कीमतें, नैतिक कीमते, धार्मिक कीमते, मान्यताएँ, कर्म कांड, अन्धविश्वास, गुरु, रिश्ते नाते, भावनाएँ, लिंग, पद, सामाजिक आर्थिक स्थिति, मनोदशा आदि को इस्तेमाल करती है। (-) SP द्वारा चलाई गई रोटी, कपडा, मकान आदि की आंधी मे हालातो से adjustment कर, समय के हिसाब से ढल कर, जो उचित निर्णय लेते हुए सही मार्ग पर चलता जाता है। उसे इस युद्ध को हल करने से कोई नहीं रोक सकत। कोई भी जरूरत, परिस्थिति उसके विजय अभियान को जैम, अवरुद्ध नहीं कर सकती। उसकी पहाड़ जैसे समस्याएँ, चुनौतियाँ कंकर मे नहीं राख मे बदल जाती है। तभी इस विशेष तौर से रचित कश्मीर के बारे मे यह कहा जाता है कि दुनिया मे अगर कही स्वर्ग है तो यही है यही है यही है यही है। Peaceful mind – Peaceful life – Solve all problems. उचित adjustment और समय के हिसाब से उचित ठलने की प्रवृति वालो का कारवां मंजिल पर जा कर ही रुकता है। अड़े सो झड़े। अत्यधिक कट्टरवादी हो कर हम BNW मे कुछ हासिल नहीं कर सकते। समय के साथ mould होने वाले का रास्ता कही जैम नहीं होता। ठीक नदी की तरह। कैसे भी हालात हो, मन-दिमाग शांत/ठंडा रखना। तभी जम्मू और कश्मीर ठन्डे इलाके मे है। और “पृथ्वी का स्वर्ग” उपमा से अलंकृत है। सो जम्मू & कश्मीर represent dull, retardation, decline, and mould characteristics.

कश्मीर : --- मनु = म, राहुल = र, Ram = र + म. यहाँ prince William = मीरा (म+र). दरअसल जब मैने 1980 मे मनु को शादी के लिए चुना तो तब मुझे राहुल ने कहा कि मनु को छोड़ दे। मैने जब इंकार किया तो राहुल ने कहा कि अगर मनु तेरी जिंदगी मे है तो फिर मे भी हूँ ही। इस पर मनु ने मुझे एक त्रिकोणीय प्रेम कहानी रचने को कहा। मैं, मनु और राहुल। अगस्त 1982 मे प्रिंस विलियम ने मुझे कहा कि इस कहानी से राहुल को निकाल नहीं तो मैं इस कहानी मे हूँ ही। मुझे कोई इस कहानी से नहीं निकाल सकता। सच मे यह एक बहुत ही उम्दा उच्च कोटि का संयोग था। यह सब मेरे अच्छे कर्मों और सदाचारी होने का प्रतिफल था। तभी यह योग खुद बा खुद बना और मेरी तमाम परेशानियाँ, रुकावटे इस योग के कारण बहुत ही सरलता से निपटती रही। मेरे चारो तरफ मेरे दुश्मनो ने आग, हाहा कार मचा रखा था और मुझे सब जगह फूल खिले और हरियाली ही नजर आ रही थी। कश्मीर की तरह शांत, ठंडक, सब जगह मनोहरता। जबरदस्त नर्क मे भी स्वर्ग का एहसास। इस योग ने Genetic war को Cellular war/कोशिका युद्ध मे बदल दिया। मेरे दुश्मनो ने जैविक नाभिकीय युद्ध मे गुणिय युद्ध की चुनौती मेरे आगे रखी थी। पर मैने दुश्मनो के आगे उल्टी चुनौती रख दी कि अगर उन मे दम है तो genetic war/लैंगिक युद्ध/गुणिय युद्ध शुरू करवा कर दिखाएँ। मेरे दुश्मन अपनी लाख कोशिशो, चालाकियो, मक्कारियो, नीच हरकतो से भी इस Cellular War को Genetic war मे नहीं बदल सके।

कश्मीर = काश + मीर (मीर/म र, मीरा) = बहुत पुण्य से यह संयोग बनता है जैविक नाभिकीय युद्ध मे। (काश) हर कोई ऐसे संयोग की कामना करता है।

झील : झील एक बहुत गहरे और बड़े भू खंड पर जमा हुए पानी को कहते है। खड़ा पानी बिल्कुल भी अच्छा नहीं होता। पानी चलता ही सही होता है। ऐसे ही हम इतनी बुरी तरह से SP द्वारा सम्मोहित है कि हम समझ ही नहीं पा रहे कि हम मे शारीरिक तौर पर कई कमियाँ, कई प्राण घातक कमियाँ है। और हम एक अति भयंकर जैविक नाभिकी युद्ध में फंसे है। हमे इन शाश्वत

सच्चाईओ को स्वीकार करना होगा। वर्ना इंसानो का हाल खड़े पानी जैसा हो जाएगा। समय परिवर्तन शील है। इसीलिए समय के साथ साथ सोच का भी बदलना बहुत जरूरी है। वर्ना आगे जा कर परेशानी होगी। इंसान को खुले दिमाग का होना चाहिए।

आंध्रप्रदेश – हैदराबाद – चारमीनार – गोलकुंडा :----- मैंने यहाँ जो biological & evolutionary कमियो का वर्णन किया है। वह सब कमियाँ जानलेवा है। क्रमिक विकास कभी भी, कोई भी ऐसा काम नहीं करेगा जिससे बनाई हुई जाति सदा के लिए लुप्त हो जाए। और जाति भी वो जिसे क्रमिक विकास की सब से ज्यादा अनुपम, अतुलनीय, करिश्माई जाति कहा जाता है। इंसान का विकास ना तो सर्वपक्षीय है और ना ही अगला वंश सुधारो के साथ के सिद्धांत के अनुरूप। इंसान मे मौजूद इन जानलेवा कमियो के कारण इसे कुछ बुनियादी, अनिवार्य जरूरते हो गई। जैसे कि रोटी, कपड़ा और मकान। इन बुनियादी, अनिवार्य जरूरतो को पूरा पूरा करते करते इंसान कब काम, क्रोध, मोह, अंहकार, द्वेष, ईर्ष्या, आलस्य, छल, हठ, मूल्यों के नैतिकता के भँवर मे बुरी तरह फँस जाता है उसे पता ही नहीं चलता। इस भँवर के कारण सब से पहले इंसानियत का ही हनन होता है। और जिसकी कीमत उन लोगो से जुड़े आर-परिवार और समाज को चुकानी पड़ती है।

हम सब जानते है कि रावण एक महासाधक था। जिसने अपने तप से वरदान हासिल किया था। कई बार शिवजी की पूजा अर्चना, तपस्या कर के उसने "दशानन" का खिताब हासिल किया था। इतना बड़ा साधक, तपस्वी इतना बड़ा कामी, क्रोधी और लोभी कैसे हो गया? आँधियाँ। जब समय का कालचक्र चलाता है तो रावण जैसा ज्ञानी पुरुष, जिसे शिवजी ने दस बार जीवन दान देकर दशानन बनाया था, जिसके सिर पर शिवजी यानि कि महाकाल जी का स्वयं आशीर्वाद था। ऐसा इंसान भी काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि की आँधी मे फँस कर कब काल का ग्रास बन जाता है। कुछ पता ही नहीं चलता। तपस्वी रावण की इस कमी, क्रोधी प्रवर्ति का खामियजा उसकी पत्नी, बच्चो, भाई, प्रजा, राक्षस कुल, वानर कुल, रघु कुल और अयोध्या को नाहक ही भुगतना पड़ा।

धृतराष्ट्र, दुर्योधन ने भी काम, क्रोध, मोह, अंह के वश आ कुरु वंश, और वैदिक सभ्यता का विनाश कर दिया। आँधियाँ।

जब हिटलर को लगा कि उसके प्रिय जर्मन के साथ WW1 मे नाइंसाफी हुई है तो उसने बदले की आग की ऐसी आंधी चलाई कि जिसने सारी दुनिया को बुरी तरह से प्रभावित किया। और इस आँधी ने ही WW2 का नाम ले लिया।

जापान दुनिया के एक कौने मे अमेरिका दुनिया के दूसरे कौने मे। अमेरिका को ना जाने क्या सूझी जो उसने "Pearl herbor " जैसा काण्ड कर दिए। जाहिर सी बात है कि अब अमेरिका के लिए यह आन, बान, शान की बात बन गई। तो अमेरिका ने परमाणु युद्ध का कारनामा कर दिया। इन आँधियो का इंसान के मन मस्तिष्क पर इतना प्रभाव पड़ता है कि हद कहाँ होनी चाहिए? इंसान यह समझ ही नहीं पाता। अगर इंसान हद मे रहे तो कोई भी आँधी इंसान कुछ नहीं बिगाड़ सकती है। कहने का मतलब कि सब से ज्यादा विकसित, समझदार, इंसान काल के हाथ की कठपुतली बन कर रोटी, कपड़ा, मकान, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि की पटरी पर चल कब विनाश की आँधी ले आए पाता ही नहीं चलता। जैविक परमाणु युद्ध भी इसका अपवाद नहीं है।

जैविक नाभिकीय युद्ध मे मैं ही मुख्य किरदार (central figure) अर्थात् निशाने पर हूँ। इस युद्ध का सारा दारोमदार मेरे पर ही है। मुझे हर रोज ऊपर लिखे विकारो से गुजरना पड़ता है, इस हद तक गुजरना पड़ता है कि इंसान इंसान ना रह कर उसका पाउडर बन जाए। Sex based युद्ध होने के कारण लड़के मेरे जीवन मे इतने है और ऐसे है जैसे पतझड़ मे पत्ते पेड़ से गिर गिर कर सारा रास्ता भर देते है। चलने के लिए रास्ता ही नहीं मिलता। मतलब इंसान का दिमाग 360 डिग्री पर घूम जाता है। और इस नशे की हालत मे उसे सही-गलत का पता नहीं चलता। इतने तरह तरह के विकराल, भयंकर, असहनीय, असंख्य आक्रमणो, प्रेशर मे भी मैं विचलित हो रास्ता नहीं भटकती। मैं हमेशा, हर हाल मे अपनी हद मे ही रहती हूँ। हैदराबाद का चार मीनार भी इसी बात का सूचक है कि मेरे चारो तरफ जो social, moral, religious, ethical, humanity, values की लक्ष्मण रेखा खींची है। मैंने कभी पार नहीं की।

सिर्फ एक बार मैंने socioeconomic power और अपने Atomic होने के कारण गाँधी परिवार से पना लिया था। वो भी self defence मे। मन मे कोई बुरी भावना नहीं थी। शायद तब, इस बुरी तरह से रचे गए भ्रमित समाज से पर्दा उठाने का यही एक उचित मार्ग था। जब हम रोटी, कपड़ा, मकान को जरूरतो को हद मे रखते है तो कोई भी विकार हमारे पास नहीं आ पाता। पर

जब हम रोटी, कपडा, माकन की जरूरतों को इच्छाओं का जामा पहना देते हैं तो कोई भी विकार हम से अछूता नहीं रह जाता है। अति प्रलय की आँधियों को न्योता देती है और हृद शांति, खुशहाली, तरक्की के रास्ते स्वयं खोलती जाती है।

गोलकुंडा भी हैदराबाद के पास ही है। यहाँ एक ऐसी जगह है, यहाँ इंसान जो बोलता है। उसे पलट कर वही सुनता है यानि ecosystem. ठीक ऐसे ही अगर हम कोई भी गलत काम करेंगे या कोई हृद तोड़ेंगे तो वह पलट कर हमारे ही पास आएगा। तब खुद की सफाई के लिए हमारे पास कोई बहाना नहीं होगा की मेरे पर फला प्रेशर था या मुझे कोई फला परेशानी थी। क्योंकि इस BNW के game में जरूरतें कोई प्रेशर बनने नहीं देती और इच्छाएँ इंसान पर इतना प्रेशर बनाती हैं कि इंसान का पाउडर बन जाए। और खाक में मिला दे। यानि कोई भी आँधी हो और आप अपनी हृद में हो तो आप सुख, चैन, अमन, खुशहाली, प्रगति की चार दीवारी में सुरक्षित हो।

मध्यप्रदेश – भोपाल – गैस कांड :----- भोपाल का मैं यहाँ यह मतलब निकालती हूँ – भांप + पाल => भांप जाना। मध्य का मतलब बीच में, अधर में, in the middle of something. कोई भी काम बीच में ही रह जाए। पूरा ना हो पाए। मुझे SP टेलिपाथी द्वारा जो भी बात बताती हैं वो in the middle of something वाली ही स्थिति होती है। क्योंकि युद्ध के सब levels/स्तर मुझे ही पूरे करने हैं। युद्ध एक दम से खत्म नहीं हो सकता। दुश्मनों ने Cellular war में कई levels रखे हैं। सो उनके हर level की, चाल की जानकारी मुझे जरूरत पड़ने पर समय समय पर दे दी जाती है। SP telepathy द्वारा मुझे जो भी बताती है। वह उस पल, हालात और समय के हिसाब से बिल्कुल सही guidance होती है। SP की situational guidance चल रही है पर SP मुझे कोई ऐसा formula नहीं बताती कि एक ही झटके के साथ मैं इस terrific, lethal युद्ध से बाहर आ जाऊँ। अब अगर किसी को Ph.D करनी है तो उसे pre nursery से ले कर पहले master degree step by step करनी होगी। तभी तो Ph.D कर पाएगा। मेरे साथ भी ऐसा ही है। सहज पके सो मीठा होए।

SP मुझसे मेरी दो साल की उम्र से ही बात करती आ रही हैं। 1984 में हम एक खेल खेलते थे अपनी विजय लक्ष्मी मासी जी के घर जा कर। उनके जेठ जेठानियों के बच्चों के साथ। मेरे परिवार और मेरे ननिहाल के पीछे SP तो सदा ही पड़ी रहती है। कुत्ते बिल्ली के बीच में लड़ाई खत्म हो सकती है पर SP और मेरे खानदान के बीच दुश्मनी लगता है कभी भी खत्म नहीं हो सकती। SP सदैव मेरे खानदान के विरुद्ध बोलने के लिए तत्पर ही रहती है।

जो खेल हम 1984 में खेलते थे वो खेल मैं पहले भी कई बार खेल चुकी थी। 1984 को हमने मासी जी के घर के पास एक घर किराए पर लिया। मकान मालकिन का नाम मम्मी जी ने “काली” रखा था। और अपनी मासी जी की जेठानियों के जिन बच्चों के साथ हम यह खेल खेलते थे उनका नाम सब ने “काली” और “गौरी” रखा था। इन बातों का भी इस जैविक नाभकीय युद्ध रूपी खेल में बहुत महत्व है।

खैर 1984 में हर बार यह खेल हमने गौरी आंटी जी के घर पर ही खेला। इस खेल में दो टीम होती थी। एक सारी टीम धरती/छत पर बैठ जाती थी एक पंक्ति बना कर और अपनी आँखें बंद कर अपने हाथों से आँखें ढक लेनी तांकि कुछ भी दिखाई ना दे। तभी दूसरी टीम से कोई XY सदस्य आ कर पहली टीम जिसकी आँखें बंद हैं के किसी एक सदस्य को टीका लगाता और उसकी सारी टीम एक गाना जाती थी। फिर जिसको टीका लगा है उसने खड़े हो कर, आँखें खोल कर उस XY बच्चे का नाम बताना कि किसने उसे टीका लगाया है। जाहिर सी बात है कि एक बहुत ही असंभव सा काम। अब आँखें बंद में क्या पता चलता है कि कौन टीका लगा गया ? बिना हेरा फेरी किए यह खेल जीता ही नहीं जा सकता था। इसलिए हम जब भी यह खेल खेलते। हम बहुत हेरा फेरी करते थे।

एक तो पहले ही SP मासी और उनके ससुराल के विरुद्ध बोलती रहती थी। ऊपर से जब यह खेल खेलना खासकर 1984 में तो SP ने कहना कोई षड्यंत्र तैरे विरुद्ध रचा गया। तू बहुत बड़ी मुसिबत में फँसी है। कोई भी तुझे उसके बारे में नहीं बताएगा। सिर्फ हम ही तुझे इसके बारे में बता सकते हैं। पता सब को है पर कोई भी तुझे इसके बारे में नहीं बताएगा। फिर SP ने पूछा कि क्या अभी तक तुझे किसी ने कुछ बताया ? नहीं ना आगे भी कोई तुझे कुछ नहीं बताएगा। सिर्फ हम ही तुझे यह बता सकते हैं। और जाहिर सी बात थी कि यह बात जैविक नाभकीय युद्ध के नियमों के खिलाफ थी। मैं बुरी तरह से डर गई। यह सुन कर कि मेरे विरुद्ध कोई भारी षड्यंत्र रचा गया है और मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानती और ना ही कोई मुझे इसके बारे में बताएगा। वैसे भी बचपन (1977-80) से SP मुझे यही कहती रहती थी सदा कि कोई प्रॉब्लम है-कोई प्रॉब्लम है। मेरी तो सांस

पहले से ही सूखी पड़ी थी यह सुन सुन, सोच सोच कि मैं किसी problem में फँसी हुई हूँ। अब फिर SP बार बार हर बार ऐसा बोल रही थी। मैंने झट से SP से मदद लेने के लिए हाँ कर दी। भाड़ में जाए अगर यह सब cheating में आता है तो। क्योंकि ना तो मैं तब मरना चाहती थी और ना ही हारना और ना ही किसी अंजान स्थिति में रहना चाहती थी। मेरे साथ भी तो cheating ही हो रही थी। वो भी पहले से ही। मेरी तमाम powers, skills, authority मुझसे छीनकर, मुझे बेहद दीन, हीन, क्षीण स्थिति में कर एक भ्रमित जेल में मेरी जानकारी के बिना मुझे कैद कर रखा था। जैसे तो तैसा हो गया।

इसी बात को सिद्ध करने के लिए कि कभी मेरी SP के साथ जैविक नाभिकीय युद्ध की सारी जानकारी leak करने के लिए SP और मेरे बीच कोई समझौता हुआ था। तब दिसंबर 1984 को भोपाल में गैस के leak होने का कांड हुआ। भोपाल भांप = पाल => उनको पालना जो मुझे BNW की सारी जानकारी दें। चूँकि BNW में मैं सबसे ज्यादा शक्तिशाली हूँ। मेरे जितना कोई भी शक्तिशाली नहीं है। तभी मेरे दुश्मन हर level पर हारते आ रहे हैं और 100% सफलता के साथ हर बार मैं जीत रही हूँ। तभी मेरे दुश्मन Cellular war को Genetic war में बदल नहीं सके।

मध्यप्रदेश + भोपाल => SP पर विश्वास रखना। यह नहीं सोचना कि वो युद्ध खत्म क्यों नहीं कर रही और पल क्षण में युद्ध कैसे खत्म हो ? SP यह क्यों नहीं बताती। क्योंकि nursery में Ph.D की डिग्री नहीं मिलती। दुश्मन के बिछाए हर level को एक एक कर पूरा तो करना ही पड़ेगा।

इस रंगमंच रूपी युद्ध के खेल मंच पर मेरे सद् कर्मों के कारण, शक्तिशाली होने के नाते, मेरी पहुँच के कारण 1984 में मुझे एक यह level भी खेलना था कि मुझे SP द्वारा ऐसा ऑफर दिया जाए। इससे पहले SP अपने आप ही बिना मांगे मेरी मदद करती आ रही थी। इस बार पहली बार मुझसे पूछा गया था। यह level इसलिए रखा गया था कि (-) SP ने बार बार यह कह कह कर मेरा मानसिक संतुलन बिगाड़ने की कोशिश की थी कि तू बहुत शक्तिशाली है। तेरे जितना कोई भी शक्तिशाली नहीं, तेरे आस पास क्या कोई दूर दूर तक भी तेरे सामने खड़े होने के काबिल नहीं है। तू जो चाहे हासिल कर सकती है... अगर मैं (-) SP की इन बातों से सम्मोहित हो जाती तो मैंने मदद लेने से इंकार कर देना था। क्योंकि मुझे खुद पर जरूरत से ज्यादा विश्वास हो जाना था (over confidence) और मैंने BNW strategy से अनभिज्ञ ही रह जाना था।

अब मेरे साथ यह घटना 1984 में हुई और उसके बाद ही 1984 में भोपाल में गैस leak का कांड हुआ। इससे क्या साबित होता है? इस जैविक नाभिकीय युद्ध के रंगमंच की खेल पद्धति की सारी script April 1975 से पहले लिखी जा चुकी है। इस रंगमंच रूपी युद्ध के खेल मंच पर मेरी पहुँच के कारण एक level ऐसा भी आना था जिसमें BNW की सारी जानकारी leak होने की बात हो। यह जानकारी step by step मिलेगी। इस जानकारी में एक ही क्षण में युद्ध खत्म होने का कोई नुस्खा नहीं होगा। तभी BNW में मध्यप्रदेश, भोपाल और उस कारखाने को पहले से ही रचा/design किया गया था। यानि हम designer geography, history & architecture में रह रहे हैं। यह भी कोई इत्तेफाक नहीं है कि भारत के मध्य में और इस धरती के मध्य ही मध्यप्रदेश है और उसकी राजधानी का नाम भोपाल है। जिस फैक्ट्री में गैस leak हुई। वो भी BNW की needs & objectives के अनुसार वहाँ design की गई थी।

एक इतनी छोटी सी बात बताने के लिए, clue बनाने के लिए SP ने हजारों लोगों की जान ले ली ! नहीं। यह बात multimorphism को भी सिद्ध करती है। सामाजिकता के परिदृश्य में लड़े जाने के कारण यह युद्ध पद्धति बहुत सख्त इंसानियत की कद्र कीमतों पर चलती है। SP हरगिज भी क्रूर नहीं हो सकती। जैसे कोई अमीर आदमी जितने चाहे कपड़े बनवा सकता है और उन्हें बिना पहने किसी को दे सकता है। क्योंकि उसे पैसों की कोई कमी नहीं। ऐसे ही यह BNW का रंगमंच SP के नियंत्रण में है और SP के पास multimorphism or polymorphism का प्रावधान है अर्थात् BNW के इस हथियार को इस्तेमाल करने की सुविधा है। हमें लगता है कि हजारों लोग मरे। यह हजारों लोग किसी एक ही प्राणी (insan) की multimorphic forms होंगे। या फिर BNW में यह सब वो लोग थे जो नहीं चाहते थे की BNW में यह वाला level आए। क्योंकि इस level को जीतने के बाद मुझे इस युद्ध से सम्बंधित सारी जरूरी जानकारी, मदद खुद बा खुद मिलनी शुरू हो जानी थी। ये लोग इस level को हार गए तो इन multimorphic forms को इस युद्ध से हटा लिया गया। क्योंकि इनका किरदार अब जैविकनाभिकीय युद्ध रंगमंच से खत्म हो चुका था। एक बात याद रहे कि इस युद्ध में ना कोई मर रहा है और ना कोई पैदा हो रहा है। ठीक हमारी फिल्मों की ही तरह। जैसे फिल्मों में कोई मर जाता है तो वह सच में थोड़ी ना मरता है। वो बस फिल्म

मे मरता है और फिल्म से उस किरदार की भूमिका खत्म होने पर उसे फिल्म से अलग, बाहर होना पड़ता है। इस युद्ध में शामिल सभी प्राणी (इंसान) super powers युक्त है। यह लोग नहीं मरते। जब तक कि full atomic या इनके level का कोई half atomic इन्हें ना मार दे। यह प्राणी/इंसान इच्छा मृत्यु के वरदान के साथ होते हैं। इन्हें मारना किसी के लिए भी आसान नहीं। पूर्ण आण्विक को छोड़ कर।

इस गैस leak में मुख्य leak होने वाली गैस थी methane (CH<sub>4</sub>). यह hydro-carbons (= हाइड्रोजन + कार्बन, carbon). (CH<sub>4</sub>). पंजाबी में c का मतलब "था" होता है। H for husband. मुझे SP और मनु ने बता दिया कि तेरी किस्मत में एक से ज्यादा शादियाँ हैं या फिर कोई भी शादी नहीं और इस तरह मिली जानकारी के दम पर मैंने फैसला लिया कि मैं कभी भी शादी नहीं करूँगी। मुझसे मेरी genetic/अनुवंशिकीय जानकारी हासिल कर पाना एक लड़के की बस की बात नहीं थी। Methane, methene, methyne = ये तीनों hydrocarbon ही हैं। इन में अंतर सिर्फ हाइड्रोजन की गिनती और bonds का ही है - छदम रूप i.e. pseudomorphology. दूसरे नजरिए से ये तीनों तरह के hydrocarbons physical, mental or sexual level को दर्शाते हैं। Methane में single bond, methene में double bond or methyne में triple bond होता है। युद्ध अभी physical level यानि cellular war पर ही है तो मैं इसे अकेले बिना किसी कारक की मदद से हल कर रही हूँ, "कागज और कलम" की पद्धति के हिसाब से, बिना किसी इंसान की मदद लिए।

अगर मेरी शादी हो जाती तो genetic war शुरू हो जाती। जो अति भयानक स्थिति है। वैसे मैं genetic war में भी पारंगत थी पर फिर इतने शक्तिशाली होने का क्या फायदा जो उचित निर्णय ना ले सके। Methane = Me + thi, 84, चौरासी का चक्कर खत्म होना। चौरासी Ch<sub>4</sub>, (चारों तरफ से)। शादी करवाते ही इंसान विभिन्न तरह की भूमिकाओं में बंट जाता है। किसी एक भूमिका में भी कम पड़ गए तो आपका चरित्र धूमिल। बेशक इस वक्त में किसी आश्रम में नहीं हूँ पर मैं इस एकांतवास में किसी साधक से कम भी नहीं हूँ।

जब इस धरती पर जीवन ही अप्रैल 1975 से शुरू हुआ है तो 84 लाख योनि काटने वाली धारणा ही बिना सिर पैर की है। अगर फिर भी इस विशेषतौर पर रचित, कृतिम समाज में यह धारणा प्रचलित है तो इसका कोई मतलब होगा। हम अलग अलग जन्मों में 84 लाख योनि नहीं काट कर आते। यह सब प्रकार की योनियाँ और जन्म हम इसी जीवन में बिताते हैं। जब हम कोई गलत, गन्दा काम करते हैं तो तब हम एक कीड़े का जीवन बिता रहे होते हैं। और जब हम कोई दुष्ट कार्य करते हैं तो तब हम गिद्ध, राक्षस की योनि का काम कर रहे होते हैं। जब हम किसी की दिल से देख रेख करते हैं तब हम पीपल के पेड़ की योनि में होते हैं। जब हम किसी की दिल से देख रेख भी करते हैं और उसकी तमाम जरूरतों का भी ख्याल करते हैं तब हम उस क्षण एक फल वाले, छायादार पेड़ का जीवन बिता रहे होते हैं। जब हम निश्चल, निष्कपट नाच रहे होते हैं मग्न हो कर तब हम मोर की योनि में होते हैं। यह सब योनियाँ हमारे भीतर ही हमारी विभिन्न व्यक्तित्वों को दर्शाती हैं और कुछ नहीं।

महाराष्ट्र – Bombay – Film shooting - Gateway of India – ताजमहल Hotel by TATAS : ---- यह क्रमबद्ध सुराग अपने आप एक कहानी बता रहे हैं। जिसके बारे में ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है। आखिर Bombay शहर ही क्यों Indian Hindi Film industry का गढ़ बना ? लखनऊ क्यों नहीं? आखिर यहाँ के नवाब, जनता शैरो शायरी, नाच गानों, मुजरो, मुशायरो, महफिलों आदि की शौकीन थी। BNW एक अलग तरह का युद्धतंत्र है। इस युद्ध तंत्र में धरती पर नजर आने वाली हर चीज को इस्तेमाल किया जाता है। BNW में कोई ज्ञात, परम्परागत हथियारों का इस्तेमाल नहीं हो रहा है।

Bombay => Bomb + Bay = Bomb by the way.

Film => Fill + M => Fill monopoly.

Shooting => Shooting style in BNW.

BNW अपने भयंकर, घातक स्तर तक पहुँच ही नहीं पाई। सो यह सुरक्षित क्षेत्र में केवल ज्ञान के बल पर ही हल हो रही है। यानि कागज और कलम पद्धति से। BNW में या किसी भी युद्ध में सूचना, जानकारी, ज्ञान इत्यादि ही सबसे शक्तिशाली हथियार होते हैं। जैसे शिक्षा के क्षेत्र में audio-visual aids का इस्तेमाल होता है। अब यहाँ audio-visuals का मतलब electronic media, charts or models etc. से नहीं है। हर एक चीज जो देखी जाती है, सुनी जाती है, पढ़ी जाती है, अन्धविश्वास और

मान्यताएँ, जो महसूस किया जाता है, कल्पना की जाती है। इन सब को BNW में जबरदस्त हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। अब सब ने ही अण्डेमान निकोबार, लक्ष्य प्रायद्वीप – cellular jail; जम्मू कश्मीर – डल झील; आंध्राबाद – हैदराबाद – चार मीनार – गोलकुंडा; मध्यप्रदेश – भोपाल गैस कांड ; महाराष्ट्र – Bombay – Film shooting – Gateway of India – ताजमहल Hotel by TATAS के बारे में ज्यादातर पढ़ा, सुना, देखा होगा। पर क्या कोई सोच सकता है कि इन में एक जबरदस्त घातक ब्रह्मांडीय युद्ध के राज, संकेत, सूचना छुपी है।

Film shooting => Fill + M shooting = Fill monopoly. यह युद्ध सत्ता के लिए ही हो रहा है। ब्रह्माण्ड बहुत बड़ा है। मेरे दुश्मन सम्मोहन कला/हथियार में प्रवीण है। जब उन्होंने मुझसे युद्ध नहीं जीत पाना था तो उन्होंने सम्मोहन का इस्तेमाल कर मुझसे ब्रह्माण्ड के कई शासकों के लिए हाँ करवा लेनी थी। पर मेरे दुश्मनों ने मुझे हराना तो क्या, मुझसे ऐसा भी कोई समझौता नहीं करवा सके। मैं ब्रह्मांडों की एक अकेली शासिका थी और हूँ। क्योंकि atomic genome की इकलौती copy अभी भी मेरे पास ही है।

फिल्म नगरी और माया नगरी Bombay/बम्बई का “महा + राष्ट्र” में होने का एक मतलब यह भी है –

महाराष्ट्र - महान् राष्ट्र भारत या मेरे भारत राष्ट्र का सूचक है

और देश की सरकार का यह परम कर्तव्य होता है कि वह अपनी जनता का ध्यान रखे, देश में होने वाले हर छोटे बड़े काम, हादसों, घटना, क्रिया प्रतिक्रिया पर देश की सरकार की नजर रहती है। तो अब यह कैसे संभव है कि मेरे राष्ट्र में/मेरे देश में ब्रह्मांडीय स्तर का युद्ध चल रहा हो और देश और उसकी सरकार इन सब से अनभिज्ञ हो ? मुझे भारतीय होने पर स्वतः ही कई पहलुओं में देश से परोक्ष रूप से सहायता मिल रही है। जैसे -

India = In + dia = In + diameter = सब कुछ अपने दायरे/सीमा में यानि सब कुछ मेरे नियंत्रण में। जब तक मैं India (लक्ष्मण रेखा) में हूँ। किसी भी तरह की कोई भी आंधी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। भारतीय होने के कारण मेरी social, moral or religious values बहुत ही, बहुत ही ज्यादा स्ट्रॉंग है और इन्होंने मेरी बहुत ही सहायता की। जैसे किसी अंधे व्यक्ति को सिर्फ चक्षु ही नहीं कोई ज्ञान ज्योति भी मिल गई हो। एक पर एक फ्री वाली स्कीम। ऐसे ही -

Hindu = He + ना + दूँ = यानि अपनी आण्विक गुण सांरणी, मेरे संस्कार, धैर्य, दृढ़ता, कद्र कीमते, आदर्श, दर्शन ..... ना दूँ। मेरे दुश्मनों के पास सम्मोहन विद्या है। वह कुछ भी कर सकते हैं। पर कुछ भी ना कर सके और ना ही कुछ भी कर सकेगे।

हिंदुस्तान = वह स्थान यहाँ सब तरह की परिस्थितियाँ, खुशी, गमी, नामुमकिन, जादुई से काम बहुत आराम से हो जाते हैं। कुछ भी असंभव नहीं।

भारत : भा + रत = भा + रति, रात = Cellular war = मेरे संस्कारों के कारण ही Genetic war Cellular war पर ही रुक गई। 46 सालों से मेरे दुश्मनों ने एड़ी चोटी का जोर लगा रखा है पर वो genetic war शुरू नहीं करवा सके।

भारत = भार + त = कहते हैं ना भारतीय नारी सब पर भारी + तरुण/जवान/युवा।

दुश्मनों ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, द्वेष, छल, हठ, आलस्य, रोटी, कपड़ा, मकान, साम, दाम, दंड, भेद, भाव आदि आदि के लगातार लगातार इतने कुचक्र चलाए पर कोई भी कारगर नहीं हुआ।

जब मैंने कुछ होश संभाला तब हमारे भारत के प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी जी थे। सच में मुझे मेरे देश की सरकार से मदद मिल रही थी। इंदिरा जी ने टेलीविज़न और telepathy का पूरा पूरा इस्तेमाल किया। जिस तरह की telepathy द्वारा इंदिरा जी मुझसे बात करते हैं इस तरह की telepathy का कोई पुख्ता सबूत नहीं होता। आभासी ऐसा लगता है कि इंदिरा जी मुझे यह कह रहे हैं या यह कह रहे हैं। जैसे हम मन में ज्यूँ ही बैठ कर कहानियाँ बुनते रहते हैं। ज्यूँ ही मुंगेरी लाल के हसीं सपनों की तरह। पर इंदिरा जी ने कहना कि ये सब तेरा वहम या मुंगेरी लाल के हसीं सपने नहीं हैं बल्कि सब सच है। अपनी telepathic बातों को सच सिद्ध करने के लिए इंदिरा जी ने टेलीविज़न का सहारा लिया। वो जो भी बातें मुझसे telepathy द्वारा करते थे। उन्हीं बातों के मुतालिक कोई ना कोई खबर टेलीविज़न पर इंदिरा जी की आनी। फिर इंदिरा जी ने कहना कि मैंने तुमसे यह यह बात की थी ना। अब उसी बात से जुड़ी हुई बात tv पर आ रही है। हमारी telepathic बातचीत झूठी या ख्याली नहीं है



बल्कि असली और सच है। फिर 3 अप्रैल 1984 को tv पर news में दिखाया गया कि इंदिरा जी चाँद पर गए कप्तान राकेश शर्मा जी से बात कर रहे हैं। मुझे फिर इंदिरा जी ने समझाया कि जैसे मैं धरती पर बैठ कर चाँद पर गए कप्तान शर्मा जी से बात कर रही हूँ ठीक ऐसे ही मैं दिल्ली में बैठ कर किसी विधि/technology द्वारा तुम से भी बात करती हूँ। यह सब technology का कमाल है। तुम भी technology का ही इस्तेमाल करना। यह बहुत अच्छा सूत्र उन्होंने मुझे दिया। फिर आगे SP ने कहा कि यह कोई इत्तेफाक नहीं है कि आज 3 अप्रैल को ही इंदिरा गाँधी जी चाँद पर गए राकेश शर्मा जी से बात कर रहे हैं। यह तुम्हारे जन्मदिन पर उनकी तरफ से तुम्हें एक बहुत सुन्दर तोहफा भी है। सच में 3 अप्रैल को भारत के इतिहास में इतनी सुन्दर घटना दर्ज हुई। भारत भी चाँद विजेता की सूची में उस दिन आ गया था। दूसरा इससे यह बात भी सिद्ध होती है कि हम सब एक designer society में रहते हैं। और सभी सब कुछ जानते हैं। तभी इतना अविश्वसनीय संयोग बना। वर्ना इतने ढेर सारे इत्तेफाक नहीं हुआ करते।

वैसे भी चाँद एक natural satellite है और इंसान दूर किसी से बात करने के लिए satellite का ही इस्तेमाल करते हैं। और इंदिरा जी ने अपनी telepathic वार्ता को असली बताने के लिए चाँद को ही इस्तेमाल किया। इंदिरा जी से जुड़ी ऐसी और भी बहुत सारी बातें हैं। जैसे एक फिल्म के सेट पर मौजूद सारे काम करने वालों को पता होता है कि फिल्म का नाम क्या है? फिल्म के नायक नायिका कौन हैं? बेशक नायक नायिका इतने सारे फिल्म से जुड़े व्यक्तियों को ना जानते हों। इसी तरह इस जैविक नाभिकीय युद्ध के रंगमंच की मैं ही एक मात्र नायिका हूँ। और मुझे इस रंगमंच से जुड़े लोग ना जानते होंगे ?!!! मुझे इस धरती पर तमाम लोग जानते हैं। जो अपनी माँ की कोख में हैं अभिमन्यु की तरह वो भी।

अपनी संस्कृति, ज्ञान, दर्शन, जीवन जीने के नियमों आदि के कारण हमारा भारत महान् है। इसको मिले नामों को यह देश सार्थक करता है। मैं अपने देश के कारण ही बिना लड़े युद्ध जीत गई। मेरे पास सब से ज्यादा उम्दा ammunition/गोला बारूद है। मैंने फिल्मों से ही सारे सामाजिक आदर्श सीखे। अब फिल्म एक उम्दा ammunition कैसे? Newtons second law : Energy can neither be created nor be destroyed but it can change from one form to another. नई तरह की युद्धनीति, नई तरह के हथियार, गोला बारूद। फिल्मों में अच्छा बुरा सब दिखते हैं। क्योंकि फिल्में हमारे समाज का आयना होती हैं। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हमने इस से अच्छी चीजें देखनी हैं या बुरी चीजें। हर फिल्म के आखिर में बताया जाता है कि अच्छे कर्मों का फल अच्छा होता है और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है। सारी स्थिति साफ होती हैं। अब इंसान ने फिल्म देख कौन सा रास्ता चुनना है यह इंसान पर ही निर्भर करता है। Tata's का ताजमहल hotel का Gateway of India के पास होना भी कोई इत्तेफाक नहीं है। Tata एक पारसी समुदाय है जो Iran से यहाँ भारत में आए हैं।

पारसी = पार + सी (सी = था /थी) ।

मैं अपनी जबरदस्त सेना, हथियारों, गोला बारूद और गुप्तचरों की बदौलत यह युद्ध 1975, 1977, 1980 में पहले से ही जैविक नाभिकीय युद्ध को जीत चुकी थी (Tata, bye bye) पर मेरे दुश्मनों ने जानबूझ कर BNW में Cellular/कोशिका युद्ध शुरू किया, जैविक नाभिकीय युद्ध को बुरी तरह से हार जाने के बाद फिर बार बार कोशिका (कोशिका युद्ध) करने की चुनौती मेरे सामने रखी। मेरे दुश्मनों की 46 साल से लगातार मेहनत के नतीजे ढाक के तीन पात वाले हैं। यही मेरी महानता को दर्शाता है। महाराष्ट्र = हिंदुस्तान, भारत, India...

नागालैंड – कोहिमा – दीमापुर : ----- Nagaland = नागा + land. पंजाबी में नागा का मतलब होता है किसी लगातार चले आ रहे काम में gap डालना, नागा करना, छुट्टी करना सो BNW में नागा = छुट्टी = holiday = holyday

Nagaland = holyland = India = No genetic war/sexual war.

अपनी पढ़ाई के दौरान मैंने बहुत छुट्टियाँ कीं। क्योंकि मैं बीमार बहुत ही रहती थी। यह बीमारी मुझे अपनी भारतीय संस्कृति के हिसाब से अपना जीवन जीने के कारण मिली। मेरे दुश्मनों ने अपनी dirty tricks 1979 को ही शुरू कर दी जब मैंने AG

Naurseery school/नांगे का स्कूल मे दाखिला लिया।इस तरह पढ़ाई के बहाने मैं अपने घर से बाहर निकली और मेरे दुश्मनो को एक सुनहरी मौका मिला। मेरे दुश्मनो को अपनी dirty tricks सफल करने के लिए उन्हें बार बार, लगातार, निर्विघ्न इस्तेमाल करना था। पर मेरे बार बार स्कूल से छुट्टी ले लेने पर उनके अभियान मे रूकावट होती थी। और इस तरह उनका अभियान असफल हो जाता था। फिर मेरे परिवार ने 1980 मे dirty tricks or hard card weapons का जिम्मा उठाया। क्योंकि मेरे सदाचारी होने के कारण फिर BNW मे dirty tricks & hard card weapons ही सफलता का एक मात्र रास्ता था। और ये कोई कारगर हथियार नहीं है। इस से मुझे कम और मेरे दुश्मनो को ज्यादा नुकसान पहुँचता है। जैविक नाभिकीय युद्ध मे कारगर हथियार पति, पत्नी, बच्चे, अंडाणु और शुक्राणु होते है।

कोहिमा :---- co + he + ma. BNW मे मैं “CO” शब्द को “cofactor” के तौर पर लेती हूँ। जैसे co-education. यहाँ लड़के लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं। ऐसे ही cofactor का मतलब है कि दोस्तो और दुश्मनो द्वारा चलाया साँझा अभियान। तभी BNW मे pseudomorphology/छद्म रूप का प्रावधान है।

मेरे दुश्मन हार चुके थे। पर उन्होंने BNW मे Cellular war/कोशिका युद्ध जानबूझ कर शुरू किया। इस कोशिका युद्ध से वो genetic war/गुणिय युद्ध शुरू करवाने की कोशिश करना चाहते थे। सो मेरे शरीर को और मेरे शरीर के Cells/कोशिका को मेरे दुश्मनो और मेरे अपनो ने आधा आधा नियंत्रित कर लिया। Co hi ma = 1980 को मेरे डैडी जी बुरी तरह से हार चुके थे। फिर तब मेरे मम्मी जी ने कमान संभाली और “Co hi” cofactor ही अब शुरू होगा ऐसी चुनौती मेरे आगे रख दी BNW को आगे बढ़ाने के लिए।

दीमापुर : --- कहते है “जल्दी नाम शैतान का” SP ने मुझे बचपन (1980) से ही हर काम मे जल्दी ना मचाने की सलाह दी। सदैव यही समझाया कि कभी भी जल्दी फैसला नहीं लेना। इस कोशिका /Cellular युद्ध मे पहला मौका दुश्मनो को मिलता है और उसके बाद मेरे अपनो को। मेरे दुश्मनो और मेरे अपनो ने मेरा शरीर नियंत्रित किया हुआ है। पहले मेरे दुश्मन एक मुद्दे पर मुझे सम्मोहित कर समझाते और उकसाते है। उसके बाद मेरे अपने मुझे वही मुद्दा दूसरे नजरिए से समझाते है। अगर मैंने दुश्मनो को मिले वक्त मे फैसला करने मे देरी की और कोई फैसला नहीं ले पाई तो मेरे अपनो को फिर वही मुद्दा और समय मिल जाता है मुझे समझाने का। हमारे कपूरथला के जलौखाना (= जल और खाना) मे “शीतला माँ जी” का मंदिर है मैं शाम को उस मंदिर जाया करती थी। वहाँ आरती मे एक भेंट बोली जाती थी “मईया जग दाता दी, कह के जय माता दी, तुरिया जावीं, वेखि पेन्डे तो न गबरावीं”

तुरिया जावीं = चलते रहना. वेखि पेन्डे तों न गबरावीं = देखना रास्ते से मत घबराना, यह मत सोचना कि है कितना लम्बा रास्ता है। यानि कि सही रास्ते पर ही हमेशा चलना है। बेशक रास्ता लम्बा ही क्यों ना हो। short cut के चक्कर मे कोई उलटी पुलटि किसे की शर्त नहीं माननी और कोई भी गलत समझौता नहीं करना है।

तब भी मुझे SP ने यही समझाना कि हर हाल मे धीरज रखना। ज़िंदगी मे कभी भी short cut मत अपनाना। हमेशा लम्बा रास्ता ही चुनना। तू लम्बा रास्ता चुनने मे सफल रहेगी और short cut मे हार भी सकती है। फिर क्या हुआ अगर लम्बा रास्ता चुनना पड़ा। अगर तू जल्दी मचाएगी। तेरे दुश्मन तेरी इसी जल्दबाजी का फायदा उठा तुझे सम्मोहित कर तुझसे कोई गलत काम करवा लेगे। पर अगर तू हर हाल मे धैर्य रखेगी, जल्दी नहीं मचाएगी तो तेरे दुश्मन कभी भी तुझ से जीत नहीं सकते। क्योंकि उनके पास समय और धैर्य की ही कमी है।

नागालैंड - कोहिमा – दीमापुर : ---- यह भी क्या संयोग है। यह इत्तेफाक नहीं रचित मामला (designer cities or designer state, designer clue) है जैविक नाभिकीय युद्ध नीतिकारो का।

Amritsar – guru nanak dev university – jalian wala bagh – swarn mandir – hari mandir – Blue star – durgyana mandir :----- यह एक complex clue है। इसे छोटे छोटे टुकड़ों मे बाँट कर देखते हैं।

अमृतसर – गुरुनानकदेव यूनिवर्सिटी : --- अमृतसर = अमृत + सर = अमृत को सर करना, अमृत को जीतना।

जहाँ अमृत का मतलब = आणविक गुण सांरणी यानि आणविक गुणसांरणी को जीतना है। आणविक गुण सांरणी मे हर तरह का अमृत है - अजर, अमर, सब तरह की शक्ति, ब्रह्म ज्ञान और हर तरह का ज्ञान आदि ।

गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी : --- गुरु + नानक + देव + uni + वर + city

BNW एक complex war strategy है। इस वक्त BNW मे cellular war मे Paper & Pen strategy (कागज और कलम) चल रही है। यह गुप्त, अदृश्य युद्ध पढ़ाई के दम पर कागज और कलम रणनीति की मदद से ही दृश्यमान और हल हो रहा है। मेरा जिस घर मे जन्म हुआ उस घर के एक तरफ AG nursery school or दूसरी तरफ नवदीप मॉडल स्कूल था। उस छोटी सी गली मे दो स्कूल थे। आखिर क्यों ? इस विशेषतौर पर रचे गए समाज मे हर चीज को बहुत सोच समझ कर रचा गया है। जिस घर मे मैने पैदा होना था उसका विशेष ध्यान से रचित होना जरुरी ही था या मुझसे जुडी कोई भी चीज बहुत ही ध्यान और सावधानीपूर्वक रची जाती है। फिर मेरे घर के दोनो तरफ स्कूल होने का क्या औचित्य ? और हमारे इलाके को जो university पड़ती है उसका अमृतसर शहर मे होने का क्या मतलब ? और इस university का नाम गुरु नानक देव university ही क्यों ? क्योंकि जाहिर सी बात है यह भी रचित नाम ही होगा।

इस sex based युद्ध मे तीन लड़के खास है। यह है :--- मनु जो मेरे ही शहर का है यह हुआ city level. दूसरा लड़का राहुल गाँधी यानि national level, तीसरा राजकुमार विलियम यानि international level. किसी भी स्कूल, कॉलेज, किसी भी किताब, वेद और ग्रन्थ मे, किसी भी sci fi कल्पना जा किसी भी परी कथा मे जैविक नाभिकीय युद्ध का कोई वर्णन नहीं है। ना ही किसी लोक कथा और दन्त कथा मे इसका जिक्र है। तो फिर जैविक नाभिकीय युद्ध कला का रहस्य कैसे खुलेगा ? विद्या, इसका जवाब है। पढ़ाई द्वारा और ज्ञान द्वारा यह रहस्य खुलेगा। “University” = ऐसा संस्थान जो universal war की जानकारी दे। तभी university को university और विश्व विद्यालय कहा जाता है। तभी मेरे घर के दोनो तरफ स्कूल थे और घर के पास ही कपूरथला का लड़कियों का बहुत प्रसिद्ध स्कूल हिन्दुपुत्री पाठशाला और कन्या कॉलेज था। BNW मे university को university ही क्यों कहते है ?

पहला कारण जो universe के बारे मे ज्ञान दे। जैसे bio nuclear war & universal war, universal government or administration, परम शक्ति और ब्रह्म ज्ञान आदि।

दूसरा कारण :--- uni + वर + city = एक + पति + शहर। इस जैविक नाभिकीय खेल मे मैने april 1980 को मनु को अपना पति चुना। जो मेरे ही शहर से था। Uni मतलब एक यानि उसके प्रति वफादार रहना। जैसा की मैने पहले भी कहा है कि इस धरती पर मौजूद हर प्राणी को BNW की सारी सारी जानकारी है। पर कोई भी मुझे बता नहीं रहा और ऐसे बन रहा है कि उसे कुछ भी पता नहीं है। BNW rules & regulation के हिसाब से अगर मे एक उच्च चरित्र की होऊँगी तो यह BNW cellular war मे बदल जाएगी और genetic war शुरू ही नहीं होगी। Cellular war मे भी कागज कलम पद्धति द्वारा घर मे ही रह कर, अति बीमारी वाली हालत मे बिस्तर पर पड़े पड़े मैने BNW को दृष्टिगोचर कर देना था। तभी जैसे जैसे मैं पढ़ती गई और जैसे जैसे BNW की जानकारी सुलभ होती गई। जिस कारण मुझे 1977, 1980 मे देवीए शक्तियों द्वारा मुझे बताए गए सुराग, जानकारियाँ समझ आने लगी। परभौतिक शक्तियों द्वारा बताए गए सुरागो को सही क्रम मे लगा कर अदृश्य जैविक नाभिकीय युद्ध दिखाई देना शुरू होने लगा और समझ आने लगा। देवीए शक्तियों के द्वारा दी गई जानकारी के कारण दुश्मनो की युद्धनीति और मुझे अपने लिए रणनीति समझ आने लगी।

गुरु नानक देव = मेरे मेरे शिक्षको यानि गुरुओ ने मुझे इज्जत (नानक - ना नक, स्वाभिमान) के साथ जीना सिखाया जिसके परिणामस्वरूप मैं ईंसान से देवताओ की श्रेणी मे आ गई।

नानक = ना + नक (पंजाबी मे) नक का मतलब नाक होता है। ना + नक = ना सबसे प्रिय नाक और इज्जत। सो -

अमृतसर + गुरुनानक + देव + university = एक ऐसी जोड़ी और संयोग, संजोजन जो आणविकगुण सांरणी को नियंत्रित करना बताए।

अमृतसर - जालियाँ वाला बाग : ----- 13 अप्रैल को पंजाब मे बैसाखी का मेला होता है। जालियाँ वाला बाग की घटना 13 अप्रैल 1919 को हुई। जब सब लोग शांति से row lettact के विरोध मे जालियाँ वाला बाग मे इकट्ठे हुए। जालियाँ वाला बाग मे एक छोटा सा ही प्रवेश द्वार है। General Dyer ने एक मात्र मुख्य द्वार को बंद कर निहत्थे, निर्दोष, जवान, बूढ़ो, बच्चों पर

अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दी। कई लोगो की मौत हो गई और कई लोग जख्मी हुए। कुछ लोगो ने अपनी जान बचाने के लिए वहाँ एक कुएँ में छलांग लगा दी। चारो तरफ हा हा कार मच गया।

जालियाँ वाला बाग : --- जब हमे जीवन मिलता है तो वो जल (साधारण इंसान) की तरह होता है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम इस जल को अमृत (परम शक्ति, आण्विक गुण सांरणी) में बदलते है या फिर विष (शैतान) में।

जल = जलना, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, द्वेष, छल, घात, इत्यादि ऋणात्मिक विचार

जल = काले पानी की सजा

जल = कितने पानी में।

बाग :--- BNW में एक खेतीए फल होता है और एक बागीय फल होता है।

खेतीए फल :--- जब इंसान को सफलता, मुकाम बहुत सख्त परिश्रम, जद्दोजेहद करने के बाद मिले। जैसे किसान

बागीए फल : --- जब Birlas, Tatas के बच्चो और अगली पीढ़ी को बैठे बिठाए, बिना मेहनत किए सब मिल जाए।

Rowlettact : --- Row + let + act : --- एक के बाद एक लम्बी कतार levels की और लड़को की। Tchnically BNW उसी वक्त खत्म हो गई थी जब दो साल की उम्र में मेरी अपनी SP से बात हुई थी। तो फिर अब तक क्यों युद्ध चल रहा है?

अगर तब युद्ध खत्म हो जाता तो यह बागीए फल होता मतलब कि मेरी SP द्वारा युद्ध जीता जाता। इस युद्ध को जीतने में मेरा कोई हाथ, योगदान नहीं होता। पर मेरे दुश्मनो ने मेरे आगे खेतीए फल की चुनौती रख दी। जिससे BNW में कई और levels शुरू हो गए। मेरे दुश्मनो को उम्मीद थी कि वो किसी ना किसी level पर मुझे फंसा ही लेगे => Nostalgia, hypnotism, pseudomorphology, necessities, relations, family (विभीषण), study, job, climate, health wise, technology.....etc.

कोई मेरा अति प्रिय है जो मेरे साथ यह युद्ध लड़ रहा है। उसके पास खुद के कोई भी संसाधन नहीं है। वो मेरे दम से ही इस युद्ध में टिका हुआ है। ठीक जैसे 1947 में हिंदुस्तान ने पाकिस्तान को खड़ा करने के लिए 55 करोड़ रूपए की रीड की हड्डी दी तो तब कही जा कर पाकिस्तान में चूल्हा जला था। इस पर भी पाकिस्तान ने तब भारत पर आक्रमण कर दिया था। यह सब ऐतिहासिक सुराग BNW के हिसाब से ही विशेषतौर पर रचे और बनाए गए है। मेरे दुश्मन की हार्दिक इच्छा है कि इस युद्ध के तमाम levels वो लड़े। जो 1977 में पहले level पर ही हार गया था जब मेरी पराभौतिक शक्तियों ने मुझसे बात की। उस में बाकी के levels को पूरा करने का दम कहाँ ? मेरा दुश्मन मेरे ही दम पर इस युद्ध में टिका हुआ है।

और अब वो मुझसे और मदद की उम्मीद कर रहा है ताकि वो मुझे बुरी तरह से हरा सके !

ठीक जैसे अंग्रेजो और हिन्दुस्तानियों के बीच हुआ था। अंग्रेज खुद तो संख्या में बहुत कम थे। हिन्दुस्तानियों की मदद से ही वो हिंदुस्तान को जीतने और उस पर शासन करने के काबिल हुए थे। मैं अपने दुश्मनो को उतना ही सहजोग देती हूँ कि इस युद्ध के सभी जरूरी levels पूरे हो सके।

ऐसे युद्ध युगो युगो बाद रचे जाते हैं। ऐसे set हर रोज नहीं लगते। सो इस युद्ध को विधिवत ढंग से ही खत्म किया जाएगा। No short cuts. मैं उन तमाम जरूरी levels को इसलिए पूरा करती हूँ जो मुझे BNW समझने में मददगार हो और जिससे यह सिद्ध हो सके कि "परम शक्ति" के पद के लिए मैं ही उपयुक्त हूँ। चयनात्मक सहयोग (Selective cooperation) मेरा अपने दुश्मनो को पूरा सहयोग तब होगा जब मैं शादी करूँगी। शादी के मामले में, सच जानने के मामले में, आणविक गुण सांरणी के मामले में मेरा मेरे दुश्मनो के साथ पूर्ण असहयोग ही है (असहयोग आंदोलन)। मैंने कही पढ़ा था की महात्मा गाँधी जी की हत्या पाकिस्तान और बांग्ला देश को ले कर हुई थी। मुसलमान चाहते थे कि हिंदुस्तान पाकिस्तानियों को बांग्ला देश जाने के लिए अपनी जमीन में से रास्ता दे। इसीलिए नत्थू राम गोडसे ने उन्हें गोली मारी। क्योंकि गाँधी जी मुसलमानों की इस बात से सहमत थे।

नत्थू = नत्थ, नाक/इज्जत का मामला, Godse/परम शक्ति।

जिस दिन जालियाँ वाले बाग में यह कांड हुआ उस दिन रविवार था।

Sunday = Sun or Son

BNW में sun चाहिए होता है son नहीं। (ambiguous word, संदिग्ध शब्द) यही तो टंटा है। General Dyer or Micheal O' Dwyer इस में भी उधम सिंह जी को गलती हो गई क्योंकि ambiguous words (संदिग्ध शब्द) और

pseudomorphology, छद्म रूप। उन्होंने General Dyer की जगह Micheal O' Dwyer को जलियाँवाला बाग काण्ड का बदला लेने के लिए गोली मार दी। ऐसे ही छद्म रूप हथियार के कारण मैं असली और नकली इंसान में अंतर नहीं कर पाती।

बैसाखी का मेला : ---- हमारे कपूरथला में भी जब मैं छोटी थी तब दो मेले लगते थे एक बसंत पंचमी (बा संत पंचमी/द्रोपदी) का शालीमार बाग में और दूसरा बैसाखी का कांजली में। कांजली एक छोटी सी बई की तरह है, छोटी सी नहर। बैसाखी, किसी अपाहिज को बैसाखी का सहारा लेना पड़ता है। वर्ना वो चल नहीं पाता। बैसाखी यानि मैं एक से ज्यादा शादी करूँ। ऐसे इस सब में मैं गलती से किसी अपने दुश्मन से भी शादी कर लूँगी। और इस तरह मेरे दुश्मन को मेरे पास आ मुझे नुकसान पहुंचा मेरी आणविक गुण सांरणी लेने का भी मौका मिल जायेगा। (जालियाँ वाला बाग – भाग्य फल, बा संत पंचमी, द्रुपदी, साधु के भेष में दुश्मन)

उधम सिंह : --- उधम सिंह जी ने इस जालियाँवाला कांड का बदला लेने की ठानी और लंदन जा Micheal O' Dwyer को गोली मार दी। इस सब में उधम सिंह जी को बहुत भारी गलतफहमी हो गई थी। General Dyer की जगह उन्होंने Micheal O' dawyer को गोली मार दी।

Gen. Dyer => Generate + Dryer

Dire = अत्यंत, भीषण, खोफनाक, दिल दहला देने वाला, गैर मामूली।

After puberty => काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि के समय समय पर, तब जब होने वाले आक्रमण।

Micheal O' Dwyer = उधम singh जी ने Gen. dyer को गोली मारने की बजाए Micheal O' Dwyer को गोली मार दी। वह यहाँ Dyer or Dwyer के बीच में फर्क न कर सके। नहीं उधम सिंह जी से कोई गलती नहीं हुई BNW के हिसाब से। इस विशेषतौर से रचित किदार से कोई गलती नहीं हुई।

Micheal O' Dwyer - O mayikal (mayi kal), मेरे दुश्मनो ने मेरे आगे बैसाखी, pseudomorphology, जल की चुनौती रखी थी। उद्यम करने से सब काम सफलतापूर्वक पूरे हो जाते हैं। यह कांड यह दर्शाता है कि अपने दम पर कठिन परिश्रम करके मैंने इन सब levels/चुनौतियों को पूरा किया।

यह कांड 13 April 1919 को रविवार को हुआ।

13 april : तेरा + approach = तेरी पहुँच।

Sunday : son को sun बनाना। BNW में son नहीं होना चाहिए। अगर son नहीं होगा तो इंसान की स्थिति सौर मंडल में sun की तरह हो जाएगी। Sun यानि परम शक्ति। जैसे सूरज हमारे सारे सौर मंडल पर राज करता है। ठीक ऐसे ही पुत्र ना होने पर इंसान जैविक नाभिकीय युद्ध जीत जाता है और परम शक्ति बनने पर तमाम ब्रह्माण्डों पर राज करता है। दूसरा सूरज बेशुमार रौशनी, ऊर्जा, ऊष्मा का स्त्रोत्र है। पर कमाल की बात, इस अनंत ऊर्जा, रौशनी के लिए वह आत्म निर्भर है। जिस प्राणी के पास आणविक गुण सांरणी होगी। वो भी हर तरह के, हर तरह के काम में आत्म निर्भर होगा। इसी दम पर वो ब्रह्माण्डों का शासक होगा।

1919 :--- ऊनि ऊनि पंजाबी में उन्नीस को ऊनि कहते हैं। और ऊनि का दूसरा मतलब बुनना भी होता है मेरे दुश्मनो के लिए सब्ज बाग। मेरे दुश्मनो के हसीन मुंगेरी लाल के सपने की जल, रोटी, कपडा, मकान, साम, दाम, दंड, भेद, भाव आदि छद्म रूप/pseudomorphology आदि का इस्तेमाल कर हम सुमिता को कहीं ना कहीं फंसा लेंगे।

कुँआ : --- वहाँ एक कुँआ है। हा हा कार मचने से और बाग में भाग दौड़ होने से अँधा धुंध firing देख लोगो ने अपनी जान बचाने के लिए घबरा कर वहाँ बने एक कुँएँ (जल) में ही छलांग मारनी शुरू कर दी। जिसके चलते कई लोग ज्यूँ ही मर गए। एक ही छोटा सा प्रवेश द्वार : --- उस बाग में आने जाने के लिए एक ही छोटा सा द्वार है। जिसे Gen. Dyer ने बंद कर दिया था। जिस कारण लोगो के पास और कोई रास्ता नहीं था इस बाग से बाहर निकलने का। हम भी तो इस पृथ्वी नाम के ग्रह, ग्रहीय जेल में कैद हैं। हम भी तो इस पृथ्वी से बहार जाने का तरीका नहीं जानते और ना ही हमारे शरीर इस काबिल है कि वो इस धरती से बहार जा सके। Biologically, mentally or technologically we are unable to escape from this planetary jail of universal war or universal jail..

कहते हैं कि रविंद्र नाथ टैगोर जी ने जालियाँवाला बाग कांड के बाद अपना नोबल पुरस्कार वापिस लौटा दिया था जो उन्हें "गीतांजलि" (गीत + अंजलि) के लिए मिला था और "knighthood" (night + hood) की उपाधि भी लौटा दी थी। अब BMW के संदर्भ में जालियाँवाला बाग कांड क्या दर्शाता है ? जल, कुँआ, प्रवेश द्वार, बैसाखियाँ, छद्म रूप, Rowlett act - कई तरह के levels, सब्ज बाग आदि जैसे हथियारों के इस्तेमाल पर रोक और सीमा का बांधा जाना ।

अमृतसर स्वर्ण मंदिर : ---- मनु के कहने पर राहुल गाँधी को हमारी प्रेम कहानी में खलनायक का किरदार दिया गया। और सच में वैसा ही हुआ, जैसा मनु ने कहा था। राहुल गाँधी के हमारी प्रेम कहानी में आते ही भ्रमित समाज के परत दर परत राज खुलने लगे। बेशक मैं तब बहुत छोटी थी। कुछ खास समझ नहीं आता था, परिस्थितियाँ ही ऐसी थीं। पर मैंने देखा कि वो सब बातें समय के साथ सच सिद्ध हुईं जो मुझे तब बताई गई थीं।

स्वर्ण मंदिर = स्वर्ण + मंदिर = स वर्ण + मन अंदर। जैसे हिन्दू धर्म में चार वर्ण हैं। ठीक ऐसे ही एक और वर्ण है स वर्ण। स वर्ण से मेरा मतलब है कि वो लोग जो मेरी तरफ के हैं और जो मेरी तरफ से हैं। इस सारी ही धरती पर BNW का set लगा है तो मेरे लिए इस धरती रूपी कुरुक्षेत्र में दो ही तरह के लोग हैं : एक जो मेरे दोस्त है और मेरे पक्ष में है। दूसरे मेरे दुश्मन। जैसा कि किसी भी युद्धभूमि पर होता ही है। एक अपने तरफ की सेनाएँ दूसरा दुश्मन की सेनाएँ। राहुल गाँधी के इस BNW game में आने से मुझे स वर्ण लोग ढूँढ़ने में बहुत मदद मिलने लगी।

मंदिर : मन + अंदर = इस BNW trape को ज्यूँ रचा गया था कि मुझे इस भ्रमित समाज से BNW को ले कर कोई सीधेतौर पर मदद नहीं मिलनी थी। जैसे पांडवों ने लाक्षा गृह के वक्त एक भूमिगत सुरंग का इस्तेमाल किया था अपने बचाव के लिए। ठीक ऐसे ही मुझे मेरी SP, स वर्ण से telepathy द्वारा मन में telepathy BNW से जुड़ी जानकारी और सबूतों आदि के बारे में बताया जाने लगा

अमृतसर हरिमंदिर ब्लू स्टार : ----- हरी + मंदिर, Golden temple यह मेरे घर को दर्शाते हैं। जैसे 1980 के बाद पंजाब में उग्रवादी गतिविधियाँ बहुत बढ़ गई थीं। जिनके चलते उग्रवादियों ने हरिमंदिर साहिब को अपना गढ़ बना लिया था। जिससे देश की एकता और अखंडता को भारी हानि हो रही थी। सो तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा जी ने हरिमंदिर साहिब उन उपद्रवी लोगों से छुड़ाने के लिए एक मिलिट्री अभियान चलाया जिसका नाम ऑपरेशन ब्लू स्टार था।

1979 को मेरे दुश्मनों द्वारा कोशिश की गई कि मैं स्वयं ही गलत रस्ते पर आ जाऊँ। पर मैंने उनकी एक ना चलने दी तो मेरे घर के सदस्यों ने मोर्चा संभाला और घर में बहुत अति होने लगी तो मेरी SP ने मोर्चा संभाला और मेरे घर के लोगों की तमाम गलत गतिविधियों पर अंकुश लगाया। मेरे दुश्मन सामने अपनी इतनी बुरी तरह से हार देख कर बुरी तरह से बोखला गए थे, पागल हो गए थे और जिसके कारण उन्होंने तमाम नैतिकता की सीमाएँ लाँघ दीं।

अमृतसर blue star Pole star : ----- आखिर क्यों इस विशेषतौर पर रचित समाज में उस वक्त हुए मिलिट्री ऑपरेशन को blue star का ही नाम दिया गया? इस ऑपरेशन को कोई और नाम क्यों नहीं दिया गया? BNW rules & regulations के तहत मेरी SP मुझे सीधे मेरे सामने आ, मुझसे सब कुछ एक ही बार में नहीं बताती। वो वायरस की तरह मेरे शरीर में inactive 24X7 रहती है। Virus जैसे suitable host आने पर अपने आप जीवित हो जाता है। ठीक ऐसे ही मेरे शरीर में शांत बैठी SP सही स्थिति, चीज, मुद्दा, शब्द, जगह, व्यक्ति, घटना, मौसम, मूल्यो..... आदि के मेरे सामने आने पर activate हो BNW नजरिए से पुनः उन तमाम चीजों, मुद्दों, शब्दों, जगह, व्यक्ति, घटना, मौसम, मूल्यो आदि को पुनः परिभाषित कर देती है। तभी मैं यह "Geographical & Historical clues" लिख पा रही हूँ। इंसान हैरान, परेशान कि इस चीज को इस नजरिए से भी देख सकते हैं ! वह परोक्ष रूप से मेरे मन के अंदर जैविक नाभिकीय युद्ध के हल बताई जा रही हैं। हल किए जा रही हैं। मुझ पर लगातार काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, द्वेष, छल, हठ, आलस्य आदि आदि के हमले होते ही रहते हैं। SP इतने भवंडर, प्रचंड, विकराल, तूफान, भूकंप में भी मेरे बोध का क्षय नहीं होने देती। Pole star की तरह बिल्कुल सही राह ही नहीं बताती बल्कि उसका सामना करने की ताकत भी देती है। कभी कभी ताकत नहीं तो इतनी moral support देती है कि इंसान की मनोदशा ऐसी हो जाती है कि अभी मैं हिमालय से भिड़ कर उसे नीचे गिरा दूँगा और हिमालय का पाउडर बना दूँगा। यह

सब मेरी अब तक की जिंदगी मे बार बार आजमाई हुई बाते है। SP ने सीधे मेरे दुश्मनो से युद्ध नहीं किया बल्कि मेरे दुश्मनो की चालो और BNW से जुड़े गुप्त रहस्यो को बता भीतर से मेरे दुश्मनो की जड़ो को हिला दिया और कमजोर कर दिया।

अमृतसर - हरिमंदिर - तलाब - स्वर्ण मंदिर : ---- हरिमंदिर एक बड़े से तालाब के बीचो बीच बना है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि के कीचड़ रुपी तालाब मे रहते हुए भी 24c सोने की तरह हूँ।

तालाब = तां + लाभ (पंजाबी) तां का मतलब तो लाभ

यानि मेरे दुश्मनो को इस जैविक नाभिकीय चक्रव्यू मे मुझे रखने का तभी फायदा होना था जब वो मुझे इस भ्रमित समाज के कीचड़ से सन्न कर देते। पर मेरे दुश्मनो की एक ना चली। मुझे कीचड़ से क्या सन्न करना वो तो कीचड़ मे रख कर भी मेरी एक अंगुली को भी कीचड़ से मैली नहीं कर पाए। मैं भ्रमित समज के कीचड़ रुपी तलाब मे रह कर भी हरी मंदिर (पवित्र स्थान) की तरह हूँ, स्वर्ण की तरह 24 कैरट हूँ। अपने इसी उच्च चरित्र के कारण मैं अपनी आणविक गुण सांरणी एक दिन अपने नियंत्रण मे कर लूँगी।

राजस्थान - हिमालय - जयपुर - उदयपुर : ---- एक तरफ विशाल विराट हिमालय जो बर्फ से ढका है तो दूसरी और रेगिस्तान। रेता का विशाल समुन्द्र। यह कोई इत्तेफाक से आदि अनादि काल से दोनो अपनी अपनी जगह पर नहीं है। यह भी औरो की तरह designer geography or designer history के उम्दा clues है। मरूभूमि और बर्फ, दोनो बंजर। कोई खास पैदावार नहीं। मरू भूमि के पास पानी नहीं और बर्फ के पास ताप नहीं जो किसी तरह की पैदावार हो सके। Infertility/अनुर्वरता/ बांझपन ही BNW मे सफलता की कुँजी है। तभी उदयपुर, जयपुर और जोधपुर तीनो राजस्थान (राज + स्थान = ब्रह्मांडीय सत्ता) थार रेगिस्तान (ठारना, ठंडा) मे है। जैविक नाभिकीय युद्ध हो ही रहा है ब्रह्माण्डो पर राज करने के लिए। जिसके पास आणविक गुण सांरणी/atomic genome होगा, वही ब्रह्माण्डो का शासक होगा। अगर मन बंजर, बर्फीला रहेगा तो आणविक गुण सांरणी छीनने जैसा कोई लफड़ा ही नहीं। मतलब सत्ता हंस्रतारन नहीं होगा। उसी की जय होगी और उदय होगा जो सदाचारी, शांत सवभाव का होगा। इस वक्त जैविक नाभिकीय युद्ध मे मेरी तमाम आणविक गुण सांरणी के कौशल, क्षमता, योग्यता पतन की गहराइयो मे समाई हुई है। सति होना और जोहर राजस्थान की भूमि पर ही होते है और ऐसे साहसिक काम वो ही कर सकता है जो काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह से ऊपर उठा होगा। आम इंसान के बस की नहीं यह बात। राजस्थान गर्म इलाका इस बात का सूचक है कि जिंदगीकी हर तरह की गर्म, सख्त, कंटीली, सूखे जैसी कैसे भी परिस्थिति मे अपने आपको अनुकूल बना लेना। मतलब कि किसी भी तरह की प्रतिकूल परिस्थिति मे संतुलन बनाए रखना। कोई भी, किसी भी तरह की प्रतिकूल परिस्थिति दिमाग मे जा कर ताँडव नहीं कर सकती। हर तरह की तपन बर्दाश करने की क्षमता। क्योंकि जैविक नाभिकीय युद्ध मे हमारी ज्ञात शैली के हथियारो का इस्तेमाल नहीं होता, इस मे यही dirty trick यानि काम, क्रोध, मोह आदि ही है। सो इनका लगातार इस्तेमाल होता है। यह 24X7 चलता है। सोए हुए भी और जागते हुए भी। यहाँ का हवा महल जो जयपुर मे इस बात का सूचक है कि हर तरह के काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि को हवा कर देना। इतने ताप मे भी मन और दिमाग शांत, शीतल, सौम्य बनाए रखना, यह हिमालय का ही वरदान है। परिस्थिति को खुद पर हावी नहीं होने देना। हिमालय और थार रेगिस्तान का एक दूसरे के आमने सामने होने का यही मतलब है कि गर्मी सर्दी, गुस्से, शांति का संतुलन बनाए रखना। सहारा रेगिस्तान

राजस्थान ←====→ हिमालय

हिमालय : --- him + a + liya = manu/him + advice + लिया।

हिमालय = हिम + आलिया

यह युद्ध पराभौतिक शक्तियो और एक साधारण से, बीमार, निर्बल इंसान के बीच है। इस मे किसकी जीत सुनिश्चित लगती है और जीत कौन रहा है? सब करामात सदाचार, उच्च आदर्श, सटीक दर्शन, धर्म की पालना, सादा जीवन, ज्ञान की इच्छा,

जागरूक प्रवृत्ति, समय का सदुपयोग, बड़ों का आदर, छोटों से प्यार हम; उम्र वालों से अच्छा बर्ताव, ताल मेल, प्यार और सहयोग की भावना, गुरुओं और शिक्षकों का सम्मान, गृहिय मामलों में भी नैतिकता की उचित पालना आदि और सबसे ऊपर कड़ा परिश्रम। इस दौरान सिर्फ अपने कर्तव्यों का ज्ञान, अधिकार की कोई चिंता नहीं होना। मेरा मार्गदर्शन करने के लिए SP, मनु और मेरे गुरुजन थे। पर उनके बताए मार्ग पर चलना तो मुझे ही था। मेरी SP, मनु और गुरुजन एक ही बात है जो अलग अलग रूपों में आ मेरी मदद करते हैं। मैंने 1980 में जब मनु को अपना जीवनसाथी चुना तो राम जी की तरह अपने वचन पर कायम रही। मनु इस तरह अपनी जगह पर बना रहा और लगातार मेरा मार्ग दर्शन करता रहा।

तमिलनाडु - मद्रास - रामेश्वरम - कन्याकुमारी - ऊटी - हिन्द महासागर : --- यह सुरागों की कायदे से बनी पंक्ति एक मुख्य चुनौती है जैविक नाभिकीय युद्ध में।

तमिलनाडु = तां + मिल + नाडु = तो मिलेगा नाडु।

तां = तो, पंजाबी में मतलब। बच्चे के साथ यहाँ नाडु जुड़ा हुआ होता है वहाँ नाभि बन जाती है। आखिर क्यों? समय के साथ इस नाडु का निशान गायब हो जाना चाहिए। जन्म के समय इंसान में 305 हड्डियाँ होती हैं। जो समय के साथ fuse हो वयस्क इंसान में 206 हो जाती हैं। अगर हड्डियों जैसी सख्त चीज fuse हो सकती है तो इतनी नर्म, नाजुक सी चमड़ी पर नाडु का बना निशान गायब/fuse क्यों नहीं होता ?!!!! यह नाभि के निशान का क्या औचित्य ? जैसे कि मैंने पहले भी कई बार कहा है कि इस विशेषतौर पर रचित समाज में हर चीज का निर्माण बहुत कायदे से किया गया है, तर्कसंगत है। इसीलिए नाभि जैसी छोटी सी, मामूली सी, किसी काम न आने वाली चीज का भी बहुत महत्व है। यह दृश्यमान नाभि बताती है कि इंसान सिर्फ एक जैविक नाभिकीय बम्ब है जैविक नाभिकीय युद्ध में। कोई सब से विकसित प्राणी नहीं।

तां मिल नाडु/नाभि = तो मिलेगा - जैविक नाभिकीय युद्ध का हल, इसे खत्म करने का तरीका पता चलेगा।

यह नाभिकीय युद्ध इंसान को ध्यान में रख कर ही 100 साल का रचा गया है। मेरी सारी क्षमताओं को शून्य करके, दयनीय हाल में, लचर, बेबस करके मेरे दुश्मनों द्वारा मुझे इस ब्रह्मांडीय जेल में कैद करके रखा है। मेरा दुश्मन कभी भी यह नहीं चाहता कि जो उसने इतनी मेहनत करके जो उसने इस भ्रमित समाज को रचा है, जो भ्रम का चक्रव्यू रचा है। उसके बारे में मुझे पता चले। कम से कम मेरी 100 साल की उम्र तक तो नहीं। ऐसे मैं भ्रम में, अज्ञान में, एक अय्याश जिंदगी जीती जाती तो और तरह तरह के अनगिनत, लगातार किए जाने वाले आक्रमणों में से किसी ना किसी आक्रमण का शिकार हो जाती। क्योंकि सीधेतौर से मुझे मारने का मेरे दुश्मनों में दम नहीं है। अगर मेरे दुश्मन मुझे ज्यों ही मार सकते तो आम युद्ध शैली में युद्ध होता - आमने सामने वाला, द्वन्द्व की किस्म का। ऐसा और इतना भ्रम ना रचा जाता। जैसे सुग्रीव ने अपने भाई बाली को छल से मरवाया था। क्योंकि बिना छल से सामने आ, उसे कोई नहीं मार सकता था। 100 साल तो बहुत दूर की बात है। मात्र 2 साल की थीं मैं जब मेरी SP मुझ तक पहुँच गई। तब ही उन्होंने मुझसे बात करना और मेरा मार्ग दर्शन करना शुरू कर दिया था। मतलब कि इतनी सख्त, इतनी बड़ी जेल (पृथ्वी) और चाक चौबंद पहरों में भी मेरी SP मुझ तक पहुँच गई। मैं तब ही अपने atomic genome के साथ इस जेल से छूट सकती थी। पर मेरे मम्मी जी ने यह चुनौती रख दी कि यह तो तू अपनी सेना (SP) के दम पर जीत हासिल करेगी। दम है तो 100 साल वाला चक्रव्यू, भ्रम वाला युद्ध स्वयं अपने दम पर अकेले लड़ कर दिखा। मैं एक तरह से अभी तक एकाकी जीवन ही बिताती आ रही हूँ और शाब्दिक तौर पर मैं अकेले ही इस BNW को हल कर रही हूँ और लड़ रही हूँ। इस समाज से मुझे कोई मदद नहीं मिल रही है। हाँ पर यह समाज, दुनिया परेशानियाँ खड़ी करने के लिए, मेरे हर मतलब कि हर बनते काम में रुकावटें डालने के लिए; अधर्म, असामाजिकता, अनैतिकता, दुराचारी के लिए 24x7 मेरे जीवन में उपस्थित है।

चूँकि मेरे मम्मी जी ने मेरी देखभाल और परवरिश की। इस सब में डैडी जी के सारे पैसे खर्च हुए। पलट कर उन्होंने (parents = pay + rent) एक एक पैसे और परवरिश/सेवा का मूल्य ले लिया। बाबा बालक नाथ : ले माई अपनी 20 साल की रोटी और लस्सी। लस्सी :- बिना वजह जैविक नाभिकीय युद्ध को कच्ची लस्सी की तरह खींची जाना।



मद्रास : --- म + द्रास => मेरी सारी क्षमताओं को शून्य कर, घर में कैद करके रखा गया है। दासों से भी ज्यादा बुरा हाल मेरे साथ होता है। आज के सन्दर्भ में बोले तो जैसे कोई हिन्दुस्तानी सैनिक पाकिस्तानी सेना के हथियार चढ़ जाए और जैसे कोई अकेला शेर कुत्ते, गीदड़ों के झुण्ड में फँस जाए।

मद्य + रास : ---- मद्य और रास, यही मेरा दुश्मन चाहता था पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। चूँकि मेरा आधा शरीर मेरे दुश्मनों के नियंत्रण में है तो मुझे कुछ भी महसूस करवा सकते हैं और मेरे दिमाग को नियंत्रित कर मुझे कुछ भी समझा सकते हैं या मेरे शरीर में कोई भी रसायन बना सकते हैं। मेरे दुश्मनों ने इन सब बातों का भरपूर भरपूर इंसानियत की हदों से बहुत दूर दूर तक जा इस्तेमाल किया। मेरे दिमाग को कई तरह से भ्रमित किया गया। मेरे शरीर में कई तरह के रसायनों का स्तर बहुत खतनाक ढंग से बढ़ा दिया गया। और रसायन ही इंसान के शरीर को नियंत्रित और संचालित करते हैं। जैसे लाफिंग गैस इंसान को हँसने के लिए मजबूर कर देती है। व्याघ्र इंसान को उत्तेजित कर देता है। ऐसे ही मेरी खुशी, गम सब तरह की भावनाओं को बहुत बहुत जांच परखा गया। निर्लज्जों की तरह। चूँकि मेरा परिवार ही मेरा दुश्मन है तो कई तरह के रसायन चोरी से मुझे दिए गए खाने के द्वारा। पर इतने पापड़ बेलने के बाद भी मेरे दुश्मनों के हाथ कुछ भी नहीं आया।

रामेश्वरम : ---- र, म, श, वरन। एक प्रोग्राम, एक रणनीति, एक हथियार। इस में Pseudomorphology का चक्रव्यू इस्तेमाल होता है। मैं कोई पाँच साल की थी। जब मैं अपने परिवार के साथ साउथ इंडिया घूमने गई थी। तब हम रामेश्वरम भी घूमने गए थे। वहाँ मम्मी जी का बर्ताव बहुत ही अजीब सा और समझ से परे था। वही पर मम्मी जी ने इस 100 साल के चक्रव्यू को स्वयं ही लड़ने और हल करने की चुनौती दी। मैं इस चुनौती को मना नहीं कर सकती थी। राहुल – मनु – शामलाल

pseudomorphological trape. छद्म रूपीय जाल ।

कन्याकुमारी : ---- कश्मीर (बौद्धिक स्तर, मानसिक स्तर) से सीधा चलो तो हिंदुस्तान के आखिर में कन्याकुमारी ही आता है। रोटी, कपड़ा, मकान की जरूरतों को मैंने जरूरतों के साँचे में ही रखा। इन्हें कभी भी इच्छाओं का जामा नहीं पहनाया। इन सब में मेरी social, moral or religious values ने मेरी बहुत मदद की। तभी सारा जैविक नाभिकीय युद्ध कोशिका युद्ध पद्धति में कागज और कलम की शैली में ही लड़ा गया है।

ऊटी : -- ऊटी तमिलनाडु में नीलगिरि पहाड़ियों पर एक पर्यटन स्थल है। इसे कई तरह से परिभाषित कर सकते हैं पर मैं यहाँ सब से आसान परिभाषा ही बताने जा रही हूँ। मेरी सारी क्षमतानों को शून्यकर, सब तरह के संसाधनों के बिना, बिना किसी दोस्त, साथी, सहेली, शुभचिंतक, रिश्तेदार, समाज आदि की मदद से मुझे एक अंजान, अनसुना, अनदेखा, अनसुलझा, अदृश्य युद्ध लड़ना था और सफलतापूर्वक हल भी करना था ! किसी भी तरह की मदद के बगैर। यहाँ तक कि मेरी अपनी ही शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का भी साथ नहीं! मेरी ही शारीरिक, मानसिक और यौन क्षमतयों को मेरे दुश्मन मेरे विरोध इस्तेमाल कर रहे हैं। मैं बेबस, कुछ नहीं कर सकती इन सब में। यहाँ तक की हवा, पानी, खाना, पीना भी मेरे दुश्मन बना दिए गए। मेरी ऊर्जा का एक मात्र स्रोत मेरा खाना-पीना और हवा। बुरी तरह से दसों दिशाओं से मुझे बुरी तरह रोंध कर मेरे दुश्मनों को लगा “अब आया ऊँठ पहाड़ के नीचे”, “देखो ऊँठ किस करवट बैठता है”

हिन्द महासागर : ---- मेरी आणविक गुण सांरणी मेरे पास सुरक्षित है। मेरे दुश्मन दी गई समय अवधि में मेरी गुण सांरणी steal, copy, decode करने में असफल रहे। मेरी 40+ उम्र होते ही जैसे भी genetic war/गुणिय युद्ध बेमानी हो जाता है। Atomic genome, AG AG खेलने का समय अब समाप्त हो चुका है। हिन्दू = he + ना + दूँ --- he (=>आणविक गुण सांरणी) ना दूँ => हिन्द महासागर .

महासागर => अति विशाल = जिसके अब पार जाना ना मुमकिन।

Hind limb : ---- hind limb का मतलब चार टांगों वाले प्राणी में पिछली टांगें। अपनी social, moral or religious values और आणविक गुण सांरणी के दम पर ही मैं BNW में सफलतापूर्वक आणविक गति से दौड़ रही हूँ और कोई मुझे किसी भी level पर हरा नहीं पाया है।

BNW में

Hind limb : --- he ना दूँ = आणविक गुण सांरणी (soft ware )

Fore limb : --- Genetic weapon 1, Genetic weapon, 2 Genetic weapon, 3 Genetic weapon, 4 Genetic weapon.

चेन्नई : ---- तमिलनाडु की राजधानी मद्रास का नाम बदल कर चेन्नई रख दिया गया। मेरा साथ देने की बजाए, मेरे साथ वफादारी करने की बजाए मेरे समाज और मेरी दुनिया ने मेरे मम्मी जी के गलत, अधार्मिक, अनैतिक, असामाजिक, दुराचारी से परिपूर्ण कामो मे साथ देना शुरू कर दिया। यानि मेरे मम्मी जी के दास बन गए। जिस कारण -

चेन्नई => chain reaction = काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, द्वेष, छल, हठ, आलस्य (= > बीमारी), साम, दाम, दंड, भेद, सब तरह की dirty tricks (अनैतिक बाजियाँ) की बिना रुके chain reaction शुरू करके मेरे दुश्मनो को लगा उन्होंने कोई बहुत बड़ा तीर मार लिया है। 100% सफलता उनकी है। क्योंकि सब कुछ तो मेरे दुश्मनो के हाथ मे था। मेरे पास तो सिर्फ समय और संयम। झूठ के पाँव नहीं होते। छल, भ्रम, मिथ्या चार दिन की चांदनी की तरह होते है। पर सच, न्याय, अच्छाई, शाश्वत सदैव रहते है।

चेन्नई :---- चैन नहीं, राहत नहीं। इस विशेषतौर से रचित समाज के “हिंदुस्तान”, “भारत” “India” मे हर साल दशहरा, दिवाली मनाई जाती है। आखिर क्यों ? पाप कभी भी नहीं फलता। इसलिए मेरे दुश्मनो को एक पल का भी चैन नहीं। यह लोग लगातार मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचते ही रहते है और मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं आराम से अपनी ज़िंदगी जी ही हूँ। जो भी है, जैसा भी है मेरे पास उसी से बहुत खुश और संतुष्ट हूँ। मेरे दुश्मन इस संसार की तमाम सम्पदा, संसाधनो को ले कर और उसका लगातार मेरे विरुद्ध इस्तेमाल कर भी खुश नहीं !

Karnatak – banglore – mysore :-----

कर्णाटक => कर + नाटक = इस धरती पर सात अरब + लोग रहते है। प्रकृति तो चींटी जितनी भी गलती नहीं करती। तो प्रकृति ने अरबो बार गलती कैसे कर दी ?! Biologically human race is totally retarded, badly retarded. जीवन के लिए जरुरी किसी भी काम, पहलु मे बुरी तरह से असफल। हमारा विकास कदापि सर्व पक्षीय नहीं है और हम अगला वंश सुधारो के साथ नहीं बल्कि अगला वंश विकारो के साथ विकसित हुए है। जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण कार्य जैसे अनुकूलन, खाना ढूँढना, अपनी रक्षा करना आदि कामो मे पूर्णतः बेबस। तभी मैं कहती हूँ कि हम designer people/रचित इंसान है। हमे BNW की needs or objectives के हिसाब से design किया गया है। वर्ना हम जैसी जात गर्मियो मे गर्मी, पानी, खाना, संक्रमण, आदि से ही खत्म हो जाती। अगर कुछ सख्त जान बचते भी तो वह सर्दी की वजह से मर जाते। इतनी खामियो वाली इंसानी जात 2-3 पीढियो तक ही बहुत मुशिकल से जी पाती। हम अपनी बैशाखियो/accessories के दम पर जीवित है ना कि अपने सर्वश्रेष्ठ होने के भ्रम के कारण। हम पक्का प्राकृतिक तौर पर वजूद मे नहीं आएँ है। हमे विशेषतौर पर रचा गया है। BNW मे भ्रम का चक्रव्यू रचने के लिए जिस तरह के प्राणियो और इंसान की जरुरत थ। हम और दूसरे प्राणी, वनस्पति, atoms, chemicals, elements अर्थात abiotic or biotic उसी का नतीजा है।

हमे और नजर आने वाली और हर अदृश्य चीज, विचारो को विशेषतौर पर रचा गया है। चलो एक मिनट के लिए मान लो कि धरती पर ऐसे मानवो की जाति हजारो लाखो सालो से है। जैसा हमारे धर्म ग्रन्थ, पुस्तके, वैज्ञानिक मानते है। मैं देवो, महादेवो के ऊपर परम शक्ति हूँ। क्या हिंदुस्तानी काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि से इतने ग्रसित हो इतने पथ भ्रस्ट हो गएँ है कि उनका अध्यात्म से बिल्कुल ही नाता टूट गया है। किसी को भी मेरे धरती पर आने का एहसास नहीं हुआ? ! मैं परमशक्ति हूँ। सब धर्मो के देवी -देवताओ, सब धर्मो के ऊपर एक मात्र “परमशक्ति”। मुझे धर्म ग्रंथो का ज्यादा तो ज्ञान नहीं है पर ज्यूँ ही उठते बैठते मुसलमानो और ईसाइयो के धर्म ग्रंथो के बारे मे जो जाना है। वो ज्यादातर कई तरह की भविष्याणियो से भरे हुए हैं। इन धर्म ग्रंथो का जितना portion मैने सुना। क्या किसी नबी, पैगम्बर, बौद्ध गुरु, जैन गुरु, priest, आदि द्वारा मेरे धरती पर आने का कोई ज़िक्र नहीं ? किसी भी धर्म की किसी भी पुस्तक मे मेरे धरती पर आने के बारे मे नहीं बताया गया ?! मेरा पृथ्वी भ्रमण इतना गुप्त क्यों रखा गया है ? किसी भविष्यदृष्टा, भविष्य वक्ता, tairo card reader आदि को भी मेरे आने का पाता नहीं चला !

SP मुझे बचपन से ही बता रही है कि इस धरती के सारे लोग तेरे बारे मे सब जानते है। पर कोई बताएगा नहीं। इस BNW के रंगमंच के नाटक की मैं एक मात्र नायिका हूँ। और BNW crew, team को ही मेरे बारे मे पाता नहीं होगा ! मेरी सब क्षमताओ

को शून्य करके मुझे यहाँ कैद किया गया है। हर कोई यह बात जनता है। पर मुझे सच कोई नहीं बताता। यह सब इस तरह भ्रमित समाज को ही वास्तविक समाज सिद्ध करने पर लगे है। जैसे मुर्गे की एक टांग वाली स्थिति।

अगर सच मे इस धरती पर अति घातक जैविक नाभिकीय युद्ध का रंगमंच ना लगा होता। बल्कि हमारी दुनिया वास्तविक होती तो मेरे नए मुद्दे Bio nuclear war को सब अनदेखा ना करते। मेरी BNW की theory जितनी भी तैयार हुई है अभी। यह सारी theory वैज्ञानिक नजरिये से बिलकुल ठीक है। मैंने भारतीय प्रधानमंत्रीजी को, राष्ट्रपति जी को, महारानी एलिज़ाबेथ जी को, सोनिया गाँधी जी को, राहुल गाँधी जी को, जापान के सम्राट जी को, सऊदी अरब के बादशाह जी को, अमेरिका के राष्ट्रपति जी को, आसिफ अली ज़रदारी जी को आदि को कई कई ट्वीट और खत लिखे। कहीं से भी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। हाँ बहुत साल पहले ज़रदारी सर जी ने कहा था कि BNW पर UN मे चर्चा हो रही है। हद है ! पाकिस्तान के राष्ट्रपतिजी को यह बात पता थी ! ना UN ने, ना ही मेरे देश की सरकार ने मुझसे कोई contact किया और ना ही कोई बात, जानकारी दी। ना ही किसी देश की जनता हिली और ना ही किसी भी देश की सरकार से कोई प्रतिक्रिया मिली ! ना ही किसी भी देश का media हिला। वो मीडिया जो दिन, रात, धूप, छांव, आंधी, तूफान, किसी भी तरह की कोई भी प्राकृतिक आपदा की परवाह किए बिना 24X7 नई नई खबरे, जानकारियाँ लोगो तक पहुँचाने के लिए तत्पर रहता है। वो मीडिया जो राई का पहाड़ बना सिर्फ एक ही खबर को 24 घंटे चलाता रहता है। वो मीडिया जो विभिन्न चैनलो पर आने वाले धरवाहिको की जानकारी पहले ही दे देता है। कौन सी नायिका कहाँ स्पॉट हुई, कौन का नायक कहाँ स्पॉट हुआ, किस हिरोइन ने कौन सी ड्रेस पहनी बताता रहता है। यहाँ तक कि अपना न्यूज़ चैनल 24 घंटे लगातार चलने के चक्कर मे सास-बहु किस्सा चला चला अपना समय पूरा करने की कोशिश करता रहता ही। उस मीडिया के पास जैविक नाभिकीय युद्ध की खबर दिखाने के लिए समय नहीं है !!! सारी ही स्क्रिप्ट तैयार की हुई मिलेगी। डाटा, जानकारी हासिल करने के लिए दिन रात इधर उधर भागने की भीजरूरत नहीं। मीडिया वालो के हिसाब से जैविक नाभिकीय युद्ध की खबर मे TRP नहीं है !!! यहाँ ब्रह्मांडीय स्तर का इतना भयंकर युद्ध चल रहा है और चैनल वालो को इस मे TRP नहीं दिखाई दे रही। एक अर्ध से भी ज्यादा नग्न मॉडल की खबर मे इन्हें TRP दिखाई पड़ती है। पर जिंदगी और मौत जैसे मुद्दे पर खबर दिखाने के लिए ये कमर्शियल मीडिया TRP ढूँढ़ने लग पड़ता है। जब यमराज जी सामने खड़े होंगे तब ये TRP और पैसा कोई काम नहीं आएगा।

सब नाटक ही तो कर रहे है। सब जैविक नाभिकीय युद्ध की युद्धभूमि के रंगमंच पर अपना अपना किरदार निभा रहे है। अगर यह भ्रमित समाज ना होता और वास्तविक समाज होता तो मुझे सब तरफ से ऐसी प्रतिक्रिया नहीं मिलती। हमारे news channel वाले कितने फिजूल के कार्यक्रम देते है। बेचारे सब नाटको की जानकारी देंगे की आज नाटक मे यह यह आने वाला है और इस सीरियल मे यह यह होने वाला है। फिर events पर घंटों प्रोग्राम दिखा देंगे। फिर नाटक के कलाकारो ने कहाँ छींका, कहाँ खाँसा, कहाँ क्या क्या किया, किस luxury bathroom मे स्नान किया आदि आदि। ऐसे मे हमारी पंजाबी मे कहते हैं की इतने वेहले news channel वाले की चींटी, दीमक, कुत्ते, कॉकरोच के हगने, मूतने तक की भी जानकारी देंगे। पर जैविक नाभिकीय युद्ध पर चुप। इसमे इन्हे TRP दिखाई नहीं देती। पहले तो यह बहुत ही आसान मुद्दा किसी को समझ नहीं आता। अगर किसी को समझ आ जाए तो उनके पास समय की दिक्कत हो जाती हा i!!! BBC को BNW का concept समझ नहीं आया। यक्रीनन Great Britain के सब से उम्दा news channel मे सब घास खा कर तो नहीं बैठे होंगे। सब एक से एक बुद्धिजीवी होंगे। या nuclear war नहीं, bio nuclear war है। बस एक ही क्षण मे एक ही व्यक्ति जो पूर्ण आणविक/full atomic है इस धरती से सारे biotic& abiotic material का पल क्षण मे खत्म kar सकता है।

Microsecond मे धरती को ही मिटा सकता है। और इतने भयंकर युद्ध को ले कर सारे इतने बेफिक्रे ! विश्वास करना मुश्किल हो रहा है। ऐसा मस्तमौला रब्ब मुझे भी बना दे।

मेरी तो सारी क्षमताएँ निल की गई है। मुझे तो कुछ याद नहीं आ रहा की 3.4.1975 से पहले क्या हुआ जो BNW शुरू हुई ? मुझे SP ने 1980 मे बस इतना ही बताया की मैं ब्रह्माण्डो पर राज करती हूँ और जो मेरे नीचे काम करते थे। उन्हें पता nahi क्यों ऐसा लगा की मैं अपना काम सही ढंग से नहीं कर रही हूँ। वो मेरे काम को मुझसे ज्यादा अच्छी तरह से कर सकते हैं। सो “परमशक्ति” का पद उन्हें मिलना चाहिए। मैं इस पद के लिए उपयुक्त पात्र नहीं हूँ। उन्ही के मन मे रोष था, बगावत थी और इसीलिए BNW शुरू हुई। पर असल मे मेरा असली नाम, पहचान, native planet, native galaxy कौन सी है ? कुछ भी

याद नहीं आ रहा है। पर इस धरती पर मौजूद तमाम इंसान मेरी इस सच्चाई को जानते हैं। पर BNW के rules & regulations के कारण अंजान बन रहे हैं।

सो मैं भी इनके इस नाटक में शामिल हो गई। Dove-Dove सब के साथ खेलने लगी। खेलते खेलते मुझे पता लगा कि मुझ में कितनी और कैसी -2 खामियाँ हैं। और वास्तव में मुझे कैसा होना चाहिए। इस भ्रमित समाज के बारे में पता चला। अपने के व्यवहार को जाना। मेरे साथ हो रहे सिर्फ और सिर्फ non stop अन्याय को जाना। कैसे मुझे रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरतों में जकड़ कर रखा गया है। पहले से ही मेरी तमाम क्षमताएँ निल की हुई थी। इतने में भी मेरे दुश्मनों को चैन नहीं मिला। मुझे पिछले 46 साल से बेहद बीमार रख ICU type का patient बना रखा हुआ है। पर इस पर भी चैन नहीं। इंसानियत विहीन लड़ाई-झगड़ा, बुरी तरह से मार कुटाई। यह सब भी उनके लिए काफी नहीं। बात बात पर जलील करना, प्रताड़ित करना, गली के आवारा कुत्ते को भी मुझसे ज्यादा सम्मान देना। घर में 11 साल की नौकरानी का दर्जा मैं 34 साल की mature lady से ज्यादा होना। और इन सब में मेरे परिवार को अपने अड़ोस पड़ोस, रिश्तेदार, समाज और प्रशासन और सरकार का full m full समर्थन। कंजरपने की तमाम सीमाएँ लाँघ दी इन गटरिया लोको ने। उस हिंदुस्तान में मेरे साथ यह सब हुआ यहाँ औरत को देवी का दर्जा प्राप्त है और लड़की को कंजक मान पूजा जाता है।

मैसूर : ---- मैसूर का जैविक नाभिकीय युद्ध में अर्थ मैं + सुर = मैं देवता।

यह युद्ध देवता (=> परम शक्ति) बनने के लिए हो रहा है। Multimorphism के कारण हर कोई इस मौके में है कि वो सुर बन जाए। इसीलिए कोई भी मुझे सच नहीं बता रहा अपने निजी लालच के कारण। दूसरा अगर किसी ने मुझे सच बता दिया तो फिर यह रचित समाज बेमानी हो जाएगा। इसका कोई भी महत्व नहीं रहेगा।

Banglore : ----

Banglore – bang + lore

Bang bang : --- bang bang theory ही बताती है कि हमारा ब्रह्माण्ड कैसे बना ? हमारा सौर मंडल कैसे बना? धरती कैसे बनी? धरती पर जीवन कैसे शुरू हुआ और कैसे विकसित हुआ?

Lore = विषय विशेष से सम्बंधित सूचनाएँ, ज्ञान (लिखित नहीं पर मौखिक रूप से प्रचलित)

समूह या समुदाय विशेष से सम्बंधित तथ्य, विश्वास, परंपरा।

इन सब का निष्कर्ष यही है कि जैसे मैंने पहले कहा कि सब लोग मेरे साथ Dove-Dove खेल रहे हैं तो मैं भी सब लोगों के साथ Dove-Dove (कर्णाटक) खेलने लगी। और इसी तरह उनके साथ Dove Dove खेलते खेलते मैंने BNW से जुड़ी बातों और सच्चाईओं को जानना शुरू कर दिया। इस जैविक नाभिकीय युद्ध के युद्धभूमि के रंगमंच के पीछे की bang bang/big bang theory जान जाऊँगी। ऐसे ही समय की धारा के साथ चलते चलते ही एक दिन मैं इस BNW सेट को क्यों बनाया गया और इससे जुड़ी तमाम बातों को जान जाऊँगी।

= banglore का मतलब big bang theory, जैसे हम सोचते हैं हमारे ब्रह्माण्ड, सौर मंडल की उत्पत्ति ज्यों हुई और हम gradual development द्वारा विकसित हुए हैं। हमारे हिंदुस्तान में कभी सतयुग था। राम राज्य था। कृष्ण लीलाएँ थी। अब कलयुग है सब मिथ्य है, नाटक है। ऐसा कभी भी कुछ हुआ ही नहीं। हमारी धरती डिज़ाइनर है और इस से जुड़ी हर एक चीज़ designer है और हमारी धरती पर जन्म 3-4-1975 से ही शुरू हुआ है।

Banglore : ----

Banglore = bunglow --- यह मेरे घर का सूचक है। जैसे कर्णाटक की राजधानी बंगलोर है। ऐसे ही BNW का head office, center मेरा घर है। मेरे घर में ही दोनो गुटों (दोस्त, दुश्मन) के लोग रहते हैं। और यही से ही BNW संचालित होती है।

Bunglow : --- Bunglow = bung + low हमारे घर को ज्यों रचा गया था कि इस घर में आते ही मैं low low जाने लगी। मैं अपने घर में 6th क्लास में आई। Sixth में ही मेरा दाखिला “Prita” “Lee” “Lesson” “school” (designer name) में करवाया गया। Lee lesson = le + less on... सच में मैं इसके बाद less on ही होती गई or 9th क्लास में आते आते मैंने पक्के तौर से बिस्तर पकड़ लिया। उसके बाद में कभी नहीं उठ पाई।

Prita Lee Lesson : दुश्मनो की जिद्द है कि मैं कोई लड़का चुनु। किसी लड़के मैं इतनी हिम्मत तो है नहीं कि वो मेरे सामने आ सके। तो फिर ऐसे मे खाक मैं लड़का चुनु ! मैं पूर्ण आणविक हूँ। और अपनी तमाम पाबंदियों के बावजूद मे sexual or asexual नहीं बल्कि non sexual हूँ। ऐसे मे कोई मेरे साथ घर बसा क्या खाक रहेगा ? हाथी और चूहे के combination पर चुटकले तो ठीक है पर इस तर्ज पर घर गृहस्थी नहीं बस्ती।

बैंगलोर ; ----

वंग + लोड़ - वंग/चूड़ियाँ + लोड़/जरुरत - चूड़ियाँ + लोड़ (पंजाबी मे मतलब) => जैसे हम सब लड़को को कभी कभी ताना मार देते है कि यह लो चूड़ियाँ पहन लो। एक तरह से चूड़ियाँ पहनने का मतलब कमजोर औरत, अबला नारी। ऐसे ही मेरी तमाम क्षमताओ को निल करके मुझे physically, mentally or sexually लगभग पूरी तरह से retarded कर चूड़ियाँ पहनाई गई है। तांकि मेरे दुश्मन मुझसे मेरा AG छीन सके। मैं जब अपने पूर्ण जलाल (पूर्ण आणविक रूप) मे होऊँगी तो मेरे दुश्मन मेरा सामना नहीं कर सकते। यहाँ जरुरत (लोड़) से मतलब है कि मेरे दुश्मनो को मुझसे जीतने का एक मौका मिल सके। अगर मेरा AG मेरे नियंत्रण मे होगा तो मुझे हरा पाना पूरी तरह से असंभव है। सो मुझसे निवेदन किया गया था कि मैं अपनी तमाम powers, skills, capabilities, authority निल करके BNW के चक्रव्यूह चुनौती को स्वीकार करूँ। तांकि मेरे दुश्मन मुझसे जीत सके ! तभी भारत (भा + रत) के पंजाब मे lohdi/लोहड़ी का त्यौहार मनाया जाता है। इस मे लोगो के घरो मे जा कर लोहड़ी मे काम आने वाली चीजे और पैसे मांगे जाते है और लड़के के जन्म के समय और लड़के की शादी के बाद 13 जनवरी को लोहड़ी का त्यौहार मनाया जाता है।

पंजाब = पाँच आब => पांच तत्व विजय करने का मौका मांगना।

केरल - त्रिवेंद्रम : ----- BNW मे केरल

केरल = के + रल। पंजाबी मे "रल" का मतलब मिलना, सम्मिलित।

के + रल = कैसे मिलेगा

BNW एक sex based war strategy है। तो यकीनन इस मे sex की भी एक अलग परिभाषा होगी।

(1) S . ex (2) Ex . S

S . ex = ex portion of the Sumita. यानि my atomic genome. Atomic genome से 100% जुड़ी powers, caliber, authority, skills my universal sovereignty . मैं दुबारा अपने असली घर जा सकूँगी। अपनी असली पहचान को जान सकूँगी और हासिल कर सकूँगी। मेरा असली gender (non sexual). मेरी स्मरण शक्ति। मेरा परिवार, रिश्तेदार, दोस्त/मेरे अपने लोग। मेरे सारे genetic weapons/गुणिय हथियार, ब्रम्ह ज्ञान, ब्रह्मांडीय सत्ता यानि की मेरा 100% सब कुछ, जो भी BNW के कारण मुझसे छीना गया है या सुप्त कर दिया गया है।

और ये सब तब होगा जब गुणिय युद्ध/genetic war नहीं होगी और son की जगह sun होगा। यानि जब जैविक नाभिकीय युद्ध मे सुमिता मुख्य होगी और sex की स्थिति 'ex' वाली होगी।

Ex . S : --- जब कोई सेना से सेवा निवृत्त होता है तो उसके साथ Ex man लग जाता है। अगर ऐसे ही मैं इस युद्ध को सही ढंग से नहीं लड़ पाती तो मेरी स्थिति भी Ex Sumita वाली हो जाती। इस मे गुणिय युद्ध शुरू हो जाता है। मेरी स्थिति हाशिय पर चली जाएगी और सेक्स मुख्य हो जाता है। और इन सब के ही कारण Sun की जगह son हो जाता है।

यानी वो ही son or sun का मुद्दा। Sun है तो S . ex वाली स्थिति और अगर son तो Ex . Sumita वाली स्थिति।

मलयालम : --- केरल मे ज्यादा मलयालम भाषा बोली जाती है।

मलायलम = मल + आलम

पंजाबी मे "मल" का मतलब होता है "to occupy", कब्जा करना और अधिकार करना

Aylam : मलयालम भाषा मे "स्थान" और अपना खोया हुआ स्थान दुबारा हासिल करना।

आलम - संसार, जगत, दुनिया

यही आण्विक गुण सांरणी और ब्रह्मांडीय सत्ता दोबारा hasil करना। अपना सब कुछ सुप्त किया हासिल करना।

त्रिवेंद्रम : ---- BNW मे त्रिवेंद्रम मतलब

Trivandrum : tri + vain + the + राम

त्रि से यहाँ मतलब कि मेरी बुरी तरह से शारीरिक, मानसिक और योन क्षमताओ को निल किया हुआ है। तांकि बुरी तरह से मेरे अपंग (retarded) होने पर मेरे दुश्मन मुझ पर काम, क्रोध, मोह, लोभ अंह, साम, दाम, दंड, भेद, भाव, रोटी, कपड़ा, मकान, बीमारी, सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि आदि का सहारा ले मुझसे मेरा आण्विक गुण सांरणी छीन सके।

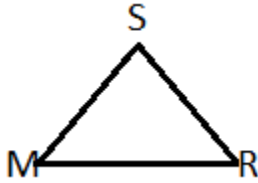
Vain : यह सब कोशिशे मेरे दुश्मनो की vain/व्यर्थ चली जाएँगी।

The : किसी व्यक्ति विशेष और वस्तु के लिए उपयुक्त होता है। आसान भाषा मे ... The यानि खास होना।

राम : मेरे दिमाग मे एक कहानी चलती है – राम = र म = राहुल और मनु को ले कर, एक त्रिकोणीय प्रेम कहानी। यह

त्रिकोणीय प्रेम कहानी मुझे समय समय पर BNW से जुड़े राज बताती रहती है और मेरे दुश्मनो के सब प्रयास विफल करती रहती है। त्रिकोणीय प्रेम कहानी सुमिता, मनु, राहुल यानि “मिस्र” के पिरामिड्स। और यह पिरामिड भी पुनर्जन्म मे विश्वास के सूचक है। मेरी यादददास्त और तमाम तरह की क्षमताएँ निल की हुई है। और मेरे दुश्मनो ने मुझे यहाँ कैद कर के रखा है। भ्रम और सम्मोहन के चक्रव्यू मे मुझे बुरी तरह से फंसाया हुआ है। यह सब मेरे दुश्मनो के व्यर्थ के प्रयास है। मैं एक दिन सब जान जाऊँगी और आणविक गुण सांरणी, अपना पद, अपनी शक्ति, अधिकारो, क्षमताओ को जो इस BNW मे दाव पर है और जो सुप्त की गई है दुबारा हासिल कर लूँगी।

मिस्र => मिस्र होना। मेरे दुश्मनो के हाथ से आणविक गुण सांरणी लेने का मौका miss हो गया। मनु के कहने पर राहुल गाँधी का आगमन मेरी शादी रुकवाने के लिए ही हुआ था। मनु के मुताबिक अगर राहुल इस प्रेम कहानी मे होगा तो मेरी शादी कभी नही होगी और ऐसा ही हुआ।



त्रिपुरा – अगरतला : ---- अगर मैं जैविक नाभिकीय युद्ध की कहानी के तल तक पहुँच गई तो मेरी तमाम शारीरिक, मानसिक और योन क्षमताएँ पुनः सक्रीय हो जाएँगी। अर्थात मेरी आणविक गुणसांरणी पुनः मेरे नियंत्रण मे आ जाएगी। मेरे दुश्मनो द्वारा मेरे रास्ते मे कई तरह की कठिनयाँ, परेशानियाँ, अड़चने रची, तैयार की गई है तांकि मे BNW की जड़ तक ना पहुँच पाऊँ।

पंजाब - चंडीगढ़ : ----- अब मैं अपने राज्य पंजाब को लेती हूँ।

पंजाब = पाँच आब/दरिया = पाँच दरियाओ वाली धरती और स्थान। पर BNW मे पाँच आब का मतलब पाँच तत्वो से है – धरती, हवा, आग, जल और आकाश। कहते है की जिसने यह पाँच तत्व अपने नियंत्रण मे कर लिए उसने सारी दुनिया ही अपने नियंत्रण मे कर ली। आज के technology वाली दुनिया के सन्दर्भ मे पाँच तत्व का मतलब – ब्रह्माण्डो मे मौजूद तमाम तरह के तत्वो को नियंत्रित करना। क्योंकि जिसने भी इन तत्वो को नियंत्रित कर लिया उसने ब्रह्माण्ड की जैविक दुनिया और अजैविक दुनिया को अपने नियंत्रण मे कर लिया सारा ही ब्रह्माण्ड अपने नियंत्रण मे कर लिया। यह सब atomic genome/आणविक गुणसांरणी द्वारा ही संभव है। आणविक गुणसांरणी अणुओ को नियंत्रित करना जानती है। तभी मेरी native state, जन्म स्थली पंजाब है। क्योंकि BNW हो ही आणविक गुण सांरणी को नियंत्रित करने के लिए।

चंडीगढ़ : चंडी + गढ़ : --- मेरे राज्य की राजधानी का नाम इससे बेहतर और क्या होता ! जब तक मैं आण्विक गुणसांरणी पुनः हासिल नही कर लेती। तब तक मैं यही गढ़ बना बैठी रहूँगी।

अरुणाचल – ईटानगर : ----

अरुणाचल : अरुण + आँचल = sun or son + genetic war.

ईटा नगर : ईट + नगर

ईट का जवाब पत्थर से देना।

**Wars/युद्ध :** --- हमारी धरती पर अब तक हुए सारे ही युद्ध original/natural नहीं है। जाहिर सी बात है कि इस रचित समाज में यह सब भी रचित यानि designer ही होंगे। हमारा तो हर दिन ही एक वॉर/war /आक्रमण है। बस सातो दिन कारण अलग अलग है।

day = ड + y = डिंपल + Y chromosome , इस छदम् युद्ध पद्धति में डिंपल Y chromosome है जो आणविक गुण सारणी को steal copy decode कर सकती है।

सोमवार : -- स और म = सोनू और मनु। मनु मेरे लिए इस युद्ध में एक सूत्रधार की तरह है। 3.4.1975 को ही मेरे दुश्मन युद्ध हार गए थे। यह युद्ध भारत vs नेपाल जैसा जो था। पर मेरे दुश्मनो ने फिर भी "कोशिका युद्ध/Cellular war" की चुनौती मेरे आगे रख दी। इस उम्मीद पर कि आगे जा कर यह कोशिका युद्ध गुणिय युद्ध में बदल जाए। 31.3.1980 को मनु ने पहली बार मुझसे टेलीपेथी द्वारा बात की। बस उसी दिन से BNW में Cellular war शुरू हो गई।

(ii) सोम का अर्थ चन्द्रमाँ भी होता है। चाँद एक प्राकृतिक उपग्रह है। इंसान कृतिम उपग्रहों का इस्तेमाल दूर संचार के लिए भी करते हैं। सोम/चन्द्रमा/उपग्रह, दुश्मनो ने मेरी सारी शक्ति, अधिकार, क्षमताएँ, योग्यताएँ शून्य/निल कर के, सारे ब्रह्माण्ड से अलग थलग कर एक मुझे एक ग्रहीय कारागार में, चाक चौबंद में कैद करके रखा है। पर फिर भी 1977 में मेरी SP ने टेलीपेथी (दूर संचार) द्वारा मुझसे संपर्क स्थापित कर लिया। और समय समय पर मेरी SP मुझे BNW में मेरा मार्ग दर्शन करती रहती है।

(iii) मोन + day = मेरी SP मुझे BNW से जुड़ी जानकारी बेशक टेलीपेथी द्वारा देती रहती है। पर सब कुछ पता होने के बावजूद यहाँ के लोग मोन धारण किए हुए हैं। यहाँ के लोग मुझसे इस मुतालिक कोई बात नहीं करते ते। पर हाँ हर तरह की असामाजिक, अनैतिक, अधार्मिक और दुराचारी वाली बात करने के लिए सदैव तत्पर, एक टॉग पर खड़े रहते हैं। इनकी हरकतों से लगता ही नहीं कि ये भारतीय वैदिक सभ्यता के वंशज हैं !!!

मंगलवार : --- सब मंगल होना। मेरे दुश्मनो ने मेरी तमाम powers, authority, skills, capability को शून्य कर यहाँ धरती पर कैद कर रखा है। और तमाम सुविधाएँ, हथियार, अधिकार, संसाधन अपने नियंत्रण में किए हुए हैं। यहाँ तक कि मेरा शरीर भी। मेरे पास मेरी सेहत तक भी नहीं है। सिर्फ समय और संयम है। फिर भी इस युद्ध में मंगल मेरा है हो रहा है। मेरे दुश्मनो का नहीं। मंगल लाल रंग (लालिमा) का एक बंजर ग्रह है।

Tuesday = टी + use = डे---- Telepathy & Tele brands use day।

बुधवार = बोध होना। जैविक नाभिकीय युद्ध, रचित और भ्रमित समाज, ब्रह्म ज्ञान, इंसानो मे मौजूद जैविक नाभिकीय विकार आदि आदि का बोध होना।

Wednesday = Wed + nes + day = Wedding + necessary/necessities + day.

वीरवार : --- वीरता का सूचक। देवो के गुरु बृहस्पति जी का दिन भी वीरवार ही है। बृहस्पति जी विद्या के भी गुरु है। और इस समय जैविक नाभिकीय युद्ध मे कोशिका युद्ध चल रहा है और कोशिका युद्ध मे भी कागज और कलम पद्धति द्वारा इस युद्ध को हल किया जा रहा है। यानि कोई वीर व्यक्ति ही इस जैविक नाभिकीय युद्ध को कागज कलम पद्धति द्वारा हल कर सकता है। यानि यह कागज और कलम युद्ध पद्धति मेरे गुरुजन/teachers & professors के मार्गदर्शन मे चल रही है। +SP टेलीपेथी द्वारा छोटा सा ही कोई clue देती है। मेरे गुरुजन उस छोटे से असंभव, विचित्र, अनुपम, अकल्पनीय, अनहोना सा लगने वाले clue को वैज्ञानिक नजरिए से सिद्ध कर देते है और संभव, साध्य, सुलभ बना देते है।

SP की तमाम बाते, clue बहुत ही अजीब, अटपटे, अविश्वसनीय से ही क्यों ना हो। उन सब बातो, clues को मेरे गुरुजन होनी मे बदल देते है। जैसे (i) 1977 मे जब मैं मात्र दो साल की थी तब SP ने मुझे बताया कि मैं सबसे ज्यादा ताकतवर हूँ। शक्ति के मामले मे मेरे आस पास तो क्या कोई दूर दूर तक नही ठहरता। यह बात बड़े हो कर सच सिद्ध हुई। मैं अपनी आणविक गुण सांरणी के कारण सब से ज्यादा शक्तिशाली हूँ। (ii) 1980 मे SP ने मुझे कहा कि कोई युद्ध चल रहा है। 1996 मे जीव विज्ञान की कक्षा मे यह बात वैज्ञानिक तौर पर सिद्ध हो गई कि कोई युद्ध चल रहा है। (iii) रसायन विज्ञान के अपने गुरुजनों के कारण मे जान पाई कि अणु को हम देख सकते है और नियंत्रित कर मनचाहे ढंग से इस्तेमाल भी कर सकते है।

Thursday = Thrust + day और Thirst + day

here Thrust = मेरे गुरुजन, और +SP

Thirst = ऋणात्मक पराभौतिक शक्तियो द्वारा लगातार लगातार इंसान पर काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, छल, द्वेष, घात, हठ, आलस्य आदि आदि के आक्रमण होते ही रहते है। पूर्ण ज्ञान होने पर इंसान वीरतापूर्वक इन विभिन्न तरह के आक्रमणो का मुँह तोड़ जवाब दे सकता।

Thursday = था + u + rst + day = था you rust day : रस्ट =जंग, जाम,retardation/dormant.

शुक्रवार : --- शुक्राणु = सिर्फ शुक्राणु ही सूक्ष्मदर्शी आणविक गुण सांरणी तक पहुँच सकते है। और आणविक गुण सांरणी के nucleotide sequence की जानकारी steal, copy, decode कर सकते है।

शुक्राणु = शुक्र + अणु = शुक्र है अणु नियंत्रण मे आया। यह युद्ध ले दे कर अणु को ही आणविक गुण सांरणी द्वारा नियंत्रण मे किए जाने के लिए हो रहा है। जिस दिन किसी ने भी अणु को नियंत्रित कर लिया। उसी दिन यह युद्ध समाप्त हो जाएगा कि शुक्र है अणु नियंत्रण मे आया !

Friday = Fryday : लड़को के लिए यह काम इतना आसान भी नही है। अणु को नियंत्रित करना

Fryday = Fry + वार = तल + वार = तलवार - शुक्राणु एक बहुत ही खतरनाक हथियार है। इसका इस्तेमाल करना आना चाहिए। वर्ना यह धारक को ही मार सकता है या कोई भारी क्षति पहुँचा सकता है।



Sperm = स + परम = सुमिता का परम हितेषी।

शनिवार = श + नही = शामलाल + नही। इस भ्रमित समाज मे मेरे दुश्मन ही मेरे पारिवारिक सदस्यो के रूप मे है। यानि खून के रिश्तो के रूप मे है। मेरे परिवार (परि, परी/atomic kingdom + वार) ने ही मुझे इस जैविक नाभिकीय युद्ध की चूनौती दी है। मेरे डैडी श्री शामलाल धीमान ही मेरे दुश्मनो के सेनापति थे। 24.10.2005 को cancer (cancel) के कारण उनकी मौत हो गई। यानि "श नहीं" मेरे दुश्मन BNW लड़ने की स्थिति मे नहीं है। मेरे दुश्मन पहले ही 1975, 1977, 1980, 1982, 1984 को बहुत ही बुरी तरह से हार चुके है। पर द्यूत क्रीड़ा (BNW battlefield) मे पांडवो की तरह दाव दाव खेली जा रहे है। इस उम्मीद मे कि शायद कोई दाव जीत ही जाए।

Saturday = Sat + ur + day = Set + your + day = Set your day according to your will. 1975 से ही मेरा आधा शरीर मेरे दुश्मनो के नियंत्रण मे है। तांकि वो मुझ पर काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि जैसे हथियारो का अच्छे से इस्तेमाल कर सके। पर मैं वही करती हूँ जो मुझे करना होता है। मेरे दुश्मनो की तमान dirty tricks और hard card weapons के बावजूद एक नहीं चलती।

एतवार : इस भ्रमित समाज मे ऐतबार करना ही तो नामुमकिन है। क्योंकि छल, भ्रम, मिथ्य, सम्मोहन और छदम् रूप के कारण साधारण इंसान बहुत जल्दी भटक जाता है।

रविवार = र + व वार और राहुल और राजकुमार विलियम ( इसके पीछे भी एक कहानी है)

Sunday = Sun & Son भ्रम, छदम् शब्द। BNW मे अगर बच्चा (son) हो जाए तो Ex सुमिता वाली स्थिति। अगर शादी ना हो तो Sumita + ex वाली स्थिति उस इंसान की BNW मे होती है।

युद्धो को हम चार श्रेणियो मे बांटेगे ----

1) Wars in new era :

(i) Indo China war : यह एक जबरदस्त preplanned designer war clue है। इस युद्ध मे चीनियो का नारा था "हिन्द चीनी भाई भाई" और इस नारे के बाद चीन ने भारत के साथ घात किया। बिल्कुल ठीक ऐसे ही मेरे दुश्मन बेशक मेरे परिवार, रिश्तेदार और खून के रिश्तो के रूप मे है। और मीठी छुरी की तरह लगातार मेरे साथ रह कर मुझे कभी कभी भी नुक्सान पहुँचाने से नहीं चूकते। मुझे तबाह करने के लिए यह लोग इतना गिर चुके है कि गटर के कीड़े भी गटर से बाहर आ, इनके मुँह पर थूक कर, दो चांटे इनके मुँह पर लगा, पूर्ण आत्म विश्वास से सीना तान कह सकते है कि जितना गंद तुम्हारे दिमाग और आचरण मे है। उतना गंद तो हमारे DMC or BMC के बड़े बड़े गटरो मे भी नहीं है। मेरे आस पास इतने नीच और गिरे हुए लोग है कि इनके आगे "Red light area" वाले बेचारे लोग तो मुझे पूज्यणीय लगते है।

(ii) बांग्ला देश युद्ध : बांग्ला देश = बंगला/घर (देश = मुख्य केंद्र यानि मेरा घर) मेरा घर ही BNW का head office है। यहाँ दोनो तरफ के प्रतिद्वंदी भाई चारे की भावना का पालना करते हुए पारिवारिक सदस्यो माँ-बाप, भाई बहन के रूप मे रहते है। यही घर सब तरह की dirty tricks or hard card weapons का गढ़ है। तभी बंगला देश की राजधानी का नाम ढाका (=

डाका) है क्योंकि मेरे दुश्मनो की नजर मेरी आणविक गुण सांरणी पर है। तभी बंगला देश मे भारतीय सरकार को "मुक्ति वाहिनी आंदोलन" चलाना पड़ा था। तांकि मेरे परिवार की dirty tricks or hard card weapons पर लगाम लगाई जा सके।

(iii) शीत युद्ध : ----जैविक नाभिकीय युद्ध "शीत पद्धति" यानि passive way से ही चल रहा है। सीधेतौर पर नहीं। दुश्मन तो मेरे माँ बाप, भाई बहन, सगे वाले बनी बैठे है। पर पीठ पीछे छुरियाँ और मुँह आगे मीठी छुरी चलाने से बाज नहीं आते। शीत युद्ध मेरी बीमारी का भी प्रतीक है। मैं बहुत ताकतवर हूँ। मेरे दुश्मन मेरे साथ ललकार कर, आमने सामने वाला युद्ध, द्वन्द्व करने की हालत मे नहीं है। तभी "भ्रमित समाज" रचा गया। मेरी आणविक गुण सांरणी को यांत्रिक गुण सांरणी पर विन्यस्त/set कर के मेरी आणविक शक्ति निल करके, मेरी ब्रह्मांडीय सत्ता, शक्ति, अधिकार, कौशल सब निल करके, एक छोटा सा बच्चा बना, सारे ब्रह्मांडीय जीवन से अलग थलग कर अकेले मुझे इस धरती पर कैद कर दिया गया। इस पर भी मेरे दुश्मनो को चैन नहीं पड़ा। क्योंकि यांत्रिक गुण सांरणी के साथ भी मैं अपने दुश्मनो से कही ज्यादा शक्तिशाली थी। सो जब मैं बीस दिन की हुई। मुझे बहुत बीमार कर दिया गया। मुझे निमोनिया हो गया। जिसके कारण भारी इन्फेक्शन मेरे शरीर मे हो गई। माँ बाप ने मेरा इलाज करवाना था और डॉक्टरों ने मेरा इलाज करना था। पर माँ बाप तो दुश्मन थे और pseudo doctors इस designer society मे मेरे माँ बाप की तरफ थे। Infection इतनी बड़ गई कि जिसके कारण मेरे सारे ही अंग प्रभावित होने लगे। श्वसन क्रिया, पाचन क्रिया, जिगर बुरी तरह से प्रभावित हो गए। यही अंग शरीर को ऊर्जा और ऊष्मा देते है। मेरा सारा ही शरीर ठंडा होना शुरू हो गया। और संक्रमण मेरे सारे शरीर और अंगो मे फैल गया। संक्रमण और सूजन का चोली दामन का साथ है। पिछले 46 सालो से मैं acute lethal/अति घातक स्थिति मे इसी बीमारी के साथ जी रही हूँ। कहने को AIIMS, PGI, जालंधर और अमृतसर के medical colleges मे head of the department से मेरा इलाज हुआ है। पर doctors को पढ़ाने वाले यह प्रोफेसर मेरी जस्ट खांसी जुकाम जैसे बीमारी को ही ठीक ना कर सके !!! पंतजलि के भी तमाम वैद्य फैल हो गए ! मुझे सिर्फ antibodies or anti allergies ही चाहिए थी !

Wars in old era : ---- BNW sex based युद्ध है। प्लासी (plus ) का युद्ध, पानीपत का युद्ध, बक्सर का युद्ध, हल्दी घाटी का युद्ध अपनी अपनी कहानी खुद ही कह रहे हैं। Bauxer/बक्सर (बक + सर) = Boxism BNW मे हम ज्यादा कट्टरवादी, किसी box, दायरे में बंद कर नहीं रह सकते। हमे थोड़ा dynamic or liberal होना ही पड़ता है। अड़े सो झड़े। किसी भी तरह के box मे नहीं फंसना होता। मन मे किसी भी तरह की गांठ नहीं बनानी होती है। Human philosophy, psyche, society changeable है। कभी सति प्रथा पूज्यणीय थी, बाल विवाह सर्व मान्य था। हमे बस सिर्फ इंसानियत के मार्ग पर ही चलना होता है, सद्मार्ग पर ही चलना होता है। अपने हालातो मे ही खुश रहना होता है।

हल्दी = हल + the

हल्दी घाटी, कश्मीर की घाटी, सिंधु घाटी की सभ्यता - ये घाटियाँ BNW मे बहुत महत्वपूर्ण है। घाटियाँ Boxism.

Wars in mythological era : ---

रामायण

रामायण = राम + आयण = र म + आयण = राहुल और मनु + आयाम।

BNW मे मनु मेरे लिए चाणक्य की तरह है। मनु और राहुल के सहयोग ने मुझे नए आयाम से परिचित करवाया। मुझे भ्रमित समाज, जैविक नाभिकीय युद्ध, God range, polymorphism, multimorphism, pseudomorphism, Kingdom Atomic, Atomic, partial atomic, Universal government & administration, genetic weapons, genetic rewards & punishment, ब्रह्म ज्ञान आदि के बारे में बताया।

राम - रावण युद्ध पौराणिक समय का जैविक नाभिकीय युद्ध था। क्योंकि रावण ने तब ही मरना था जब राम जी ने रावण की नाभि में तीर मारना था। क्योंकि रावण की नाभि में वरदान के मुताबिक अमृत था। जब तक रावण का अमृत सुरक्षित था, तब तक रावण की जिंदगी भी सुरक्षित थी।

आज के वैज्ञानिक सन्दर्भ में अमृत = आणविक गुण सारनी। यहाँ तीर - अंडाणु और शुक्राणु

नाभि = जैविक नाभिकीय युद्ध। यह रामायण कथा विशेष तौर पर जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतों और उद्देश्यों के हिसाब से रची गई हालिया की बात है। कोई हजारों साल पौराणिक कथा नहीं।

महाभारत

महाभारत : ---- महाभारत काण्ड भी सटीक जैविक नाभिकीय युद्ध के हिसाब से well preplanned epic/बहुत अच्छे से पूर्व नियोजित महाकाव्य है। ज्यों ही नहीं ऋषि वेद व्यास जी ने अपने ही वंशजों की विनाश लीला रच डाली। ये सब SP द्वारा खास तौर पर रचे गए हैं। महाभारत वास्तव में एक घरेलु झगड़ा था। जिसने रथियों, महारथियों के कारण विकराल, भयंकर, घातक युद्ध का रूप धारण कर लिया। ये चचेरे तरे भाइयों का सत्ता के लिए युद्ध था। ठीक जैसे मेरे अपने मेरे साथ ब्रह्मांडीय सत्ता और परम शक्ति के पद के लिए जैविक नाभिकीय युद्ध लड़ रहे हैं। "वेद व्यास" यह नाम भी कृत्रिम रचित/designer है। हम वेद व्यास जी के वेदों, पुराणों, ब्रह्म सूत्रों आदि में योगदान को जानते ही हैं।

कलिंगा का युद्ध : ---

क +लिंग = BNW में 'क' भ्रमित समाज को प्रदर्शित करता है और लिंग = AG को। यानि concept of designer society or bio nuclear war.

कहते हैं कि लड़के कुछ चंचल होते हैं और लड़कियाँ कुछ संजीदा। जिसके कारण ज्यादातर लड़कियाँ ही पढ़ाई में ज्यादा होशियार होती हैं। +1 or +2 में लड़कियों के ही ज्यादातर नंबर ज्यादा आते हैं। पर +2 के बाद लड़कियों को कौन सी टोक लग जाती है या लड़के कौन सा बादाम चबाना शुरू कर देते हैं कि हर प्रवेश परीक्षा में लड़के ही मैदान मारते हैं जैसे medical, nonmedical, IAS, PCS, PPS, IFS, bank & other govt. or pvt. Jobs. Politics में, प्रशासन में, business में सब जगह पुरुष ही मिलते हैं। लड़कियों के लिए gyne, teacher, child specialists, nurse, चूल्हा चौका, गृहस्थी, बच्चे, रिश्तेदारी जैसे क्षेत्र ही क्यों रह जाते हैं?! Again a dirty trick. जानबूझ कर हमारे समाज को पुरुष प्रधान बनाया गया है।

पोरस सिकंदर युद्ध : --- पोरस सब्रवाल समुदाय से था। यहाँ मुझे एक पंक्ति याद आ रही है। जो मैंने एक मोटर साइकिल के पीछे लिखी पड़ी थी "रब्ब सब्र दर्ई रज तां आऊना नहीं" यानि भगवान जी सब्र देना, तृप्ति तो कभी नहीं होनी।

पोरस = Porous

सिकंदर : सिक/तपना + अंदर

Alexander : एलेग्जेंडर = अलग + gender

पूर्ण आणविक होने के कारण मेरा अणु, गुण सांरणी और genetic engineering/गुण कौशल पर 100 % नियंत्रण है। मेरे पास reproduction/प्रजनन के कई तरीके हैं। सो मैं ना तो sexual और ना ही asexual हूँ। बल्कि मैं non sexual हूँ। पर BNW की needs Or objectives को ध्यान मे रखते हुए मुझे मानव यानि sexual organism बनाया गया है।

World wars : ----इतने बर्फीले इलाको मे इतने अशांत लोग कैसे रह सकते है ? दोनो विश्व युद्ध यूरोप की दी देन है दुनिया को ! Europe = you + rope = डूबते को तिनके का सहारा। ये BNW मे सिर्फ युद्ध भर ही नहीं है। बल्कि एक क्रांति, सचेत आंदोलन था। जिसने मुझे ब्रह्मांडीय युद्ध, आणविक गुण सांरणी/ब्रह्म ज्ञान के प्रति सूचित, जागृत किया। WW1 Austro Hungarian Empire के उत्तराधिकारी Arch duke Franz Ferdinand और उनकी पति सोफी की मृत्यु के कारण शुरू हुई।

Austro Hungarian Empire = Astronomy + Hungry + Empire = ब्रह्मांडीय सत्ता की भूख, इच्छा, लालच, लालसा।

Austro = आस + tri - शारीरिक, मानसिक, योन स्तर।

Franz Ferdinand = Fraud फर्जी लैंड यानि रचित समाज, भ्रमित समाज

सोफी = 100 %

यह युद्ध एक उत्तराधिकारी के मरने पर शुरू हुआ था = मेरा genetic material/आनुवंशकीय सामग्री आणविक से यांत्रिक गुण सांरणी पर सेट कर दिया गया । AG से MMG पर आ जाना, एक पूर्ण आणविक के लिए मौत की ही तरह है। ब्रह्मांडीय सत्ता से परम शक्ति को एक साधारण सी, मध्यम श्रेणी की जिंदगी अति दीन, हीन, क्षीण सेहत और हालातो मे वो भी अपनो की मेहरबानी के कारण और MMG के साथ बितानी पड़े तो यह एक पूर्ण आणविक के लिए मौत से भी ज्यादा बुरी स्थिति है। BNW strategy के तहत मुझे ब्रह्मांडीय सत्ता और प्रशासन, आणविक गुण सांरणी, भ्रमित समाज के बारे मे नहीं पता था। तभी यह युद्ध एक राजकुमार की मौत से शुरू हुआ। जो Austro Hungarian Empire का उत्तराधिकारी था = Universal Empire

यह हत्या कांड बोस्निया की राजधानी साराजेवो मे सर्ब (सर्बिया) राष्ट्रवादी गावरिलो प्रिंसिप ने की।

Bosnia = Bose,

Sarajevo = सारा जीत लो = आणविक गुण सांरणी = चौथे दर्जे के गुणिय हथियार और क्षमता

Serbia = सब

Gavrilo Princip = गावरिलो – गा वरिलो/विरलो

प्रिंसिप = Prince ship = यूनिवर्सल authority/परम शक्ति का पद। ये सब clues ही है डूबते को तिनके का सहारा = moral support .

Newton's second law – Energy can neither be created nor be destroyed. But it can change from one form to another.

WW2 Austria मे पैदा हुए हिटलर के कारण शुरू हुई। WW1 मे जर्मन ने Austro Hungarian empire को खुले दिल से मदद की थी। इसी के चलते मित्र देशो ने जर्मन पर ढेरो आर्थिक, सामाजिक, सैनिक, सामरिक प्रतिबंद लगा दिया। इससे जर्मन की स्थिति एक पंगु जैसी हो गई। जर्मन पर लगे इन्हीं प्रतिबंदो का बदला लेने के लिए हिटलर ने युद्ध शुरू किया। जिसने WW2 का रूप धारण कर लिया। WW2 के कारण ही "Pearl Horbour " (= Atomic genome) कांड हुआ और Nuclear war (=bio Nuclear war) शुरू हुई। विश्व व्यापक WW2 भी एक आंदोलन ही था मुझे Atomic genome & Bio nuclear war के प्रति सचेत, जारूक करने के लिए। और इंसानो मे जैविक नाभिकीय युद्ध के कारण होने वाले विकारो, खामियो की जानकारी देने के लिए। इन सब के द्वारा मुझे पता चलना कि मेरी आणविक क्षमताओं, शक्तियो, सामर्थ्य को जैविक नाभिकीय युद्ध कि रणनीति के कारण शून्य किया गया है। और मुझे दोबारा इन क्षमताओं, शक्तियो, सामर्थ्य को पुनः हासिल करना है।

जर्मन (= जर+मन = बर्दाश करना) पर प्रतिबंद = मेरे शारीरिक, मानसिक और योन स्तर पर लगे प्रतिबन्ध, (सीमा से परे, बहुत दूर की बीमारी वाली स्थिति, किसी भी डॉक्टर द्वारा मेरा इलाज न करना, अपनो का शर्मिंदगी वाला व्यवहार आदि) जैविक नाभिकीय युद्ध के कारण पैदा हुए (कृत्रिम) विकार। यांत्रिक गुण सांरणी के कारण मेरी authority, power, skill, caliber पर जो जो प्रतिबंद (कमियाँ) लगे है। WW2 इन्ही के बारे मे सचेत, जागरूक करती है। मेरे दुश्मनो को इतने सब पर भी चैन नही आया। मेरे AG को MMG पर सेट कर के जो आम स्वास्थ्य, इंसान की सामान्य शारीरिक, मानसिक और योन क्षमताएँ होनी चाहिए। बीमारी का बहाना बना उन्हें और कम कर दिया गया। मेरी सेहत बहुत ही दीन, हीन, क्षीण है।

German - Berlin = burn + लीन = तपते रहना = every time in the situation of tease & torture, frustration etc = काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, द्वेष, छल, हठ, आलस्य, बीमारी, रिश्ते-नाते, सामाजिक-आर्थिक स्थिति..... आदि आदि।

**यात्राएँ** : --- यह मुद्दा भी यही सिद्ध करता है कि हमारा समाज designer है। पुराने समय मे अपनी धार्मिक आस्था, जिज्ञासा, खोजी प्रवृति के कारण, needs & objectives के कारण इंसानो ने कई बड़ी बड़ी यात्राएँ की। ये बड़े बड़े खोज अभियान किए भी तब जब technology ना के ही बराबर थी। और सुविधाएँ भी कुछ खास नही होती थी तब। कोलम्बस, वास्को डा गामा, ह्वेनसांग, गुरु नानक देव जी आदि लोगो ने बहुत लम्बी लम्बी यात्राएँ की है। समुंद्री यात्राओ के दौरान, खोज अभियानो मे कभी कभी हफ्तो या फिर महीनो कोई तट दिखाई नही देता था। और जहाजियो को लगातार विशाल, विकराल समुन्द्र मे सफर करना पड़ता था। सूखा राशन तो चलो खराब नही होता। माँसाहारी के लिए समुन्द्र एक खेत की तरह है। पर पानी, पानी का क्या ? कितना पानी वो लोग अपने साथ store कर ले जाते थे ? तब bisleri bottles तो उपलब्ध नही होगी। पीने का पानी कितने दिन सम्भाल कर रख सकते है ? वैसे भी नहाने धोने, कपडे धोने, बर्तन धोने, सफाई करने और खाना आदि बनाने मे कितना पानी इस्तेमाल होता है।

चीनी यात्री ह्वेनसांग जो भारत आया था महात्मा बुद्ध और बौद्ध धर्म की जानकारी हासिल करने के लिए। Uffff, OMG क्या उन दिनों malls, super markets, five star hotels, Gucci, Armani के showrooms, laundry etc रास्ते में उपलब्ध थे ?!!! सुरक्षा के सब इंतजाम थे ? तन्हाई, अकेलापन, home sickness अपने आप में एक बहुत बड़ा अवसाद है। क्या तब वीरान, विशाल वियावान में google map, GPS की सुविधा थी ? गर्मी, सर्दी, बरसात, बर्फबारी, आंधी, तूफान, रेगिस्तान आदि क्या क्या ह्वेनसांग ने रास्ते में आते जाते नहीं देखा होगा ? ऐसे में ह्वेनसांग भारत से ढेर सारी बौद्ध धर्म की और बौद्ध साहित्य की किताबें, कई और दूसरी किताबें कुल लगभग 600 + किताबें, अपना यात्रा विवरण (यहाँ यहाँ वो घूमा, ठहरा, तरह तरह की चीजें देखीं, अनुभव, जगहों आदि के बारे में लिखित विवरण) ले कर अकेला प्रकृति के साथ हँसते-खेलते कभी गर्मी, कभी सर्दी, कभी बारिश, कभी बर्फबारी, कभी पहाड़, कभी नाले, कभी रेगिस्तान, तो कभी तूफान, आँधी तो कभी कोई हिंसक जंगली पशु आदि में अपने सामान के साथ सही सलामत पैदल चीन वापिस पहुँच गया। Really toooooo much! यहाँ लोगों को आराम से घर बैठे सुबह या शाम की चाय ना मिले तो सिर दुखने लगता है। बिना पंखे के गर्मी/लू लग जाती है और AC में जुकाम, जोड़ों में दर्द शुरू हो जाता है।

यह 630 ई. के आस पास भारत आया था। और भाषा, अगर भाषा का उचित ज्ञान ना हो तो स्थिति कुछ ऐसे ही हो जाती है जैसे Coloured LED 85 cm (दुनिया) without electric current। ह्वेनसांग अपनी लम्बी पैदल यात्रा के दौरान कई जगह रुका। यह गोबी रेगिस्तान से किर्घिस्तान, तोकमत, उज्बेकिस्तान, ताशकंद, फारस, समरकंद, पामीर पर्वत माला, अमुदरिया, तामेज़, कुण्डूज़, बलख, नवविहार, बामियान, शिबिर दर्रे, गांधार, जलालाबाद से होते हुए भारत आया। तब globalization इतना प्रचलित नहीं था। बहुत हद तक boxism ही चलता था। हर जगह पर भाषा, संस्कृति, सोच, समझ अलग अलग होती है। ऐसे में ह्वेनसांग थका मंदा, भूखा प्यासा, बिना नहाए धोए fresh हुए क्या और कैसे बात करता था ? अगर किसी से खाने पीने का पूछना होता, रास्ता या कोई जरूरी जानकारी हासिल करनी होती थी तो कैसे बात करता था ? Dialect or pronunciation के कारण तब एक ही भाषा में 25 km के बाद बहुत अंतर आ जाता था। पंजाबी होने के बावजूद मैं हिंदी भाषा को कुछ ठीक ठाक पढ़, लिख, सुन और बोल लेती हूँ। पर भारत एक विशाल देश है। सो यहाँ बहुत ही विभिन्नता है। मैं कई UP, MP, बिहार के लोगों की हिंदी नहीं समझ पाती। हिंदुस्तानी होने के बावजूद मैं हर तरह की हिंदी की dialect और pronunciation नहीं समझ पाती तो ऐसे में एक चीनी ने कैसे काम चलाया होगा ? जो अलग अलग भाषा, इलाका, संस्कृति, रीति रिवाज, वहमों आदि में घूमा ! हर जगह की currency अलग अलग होती है। यह बौद्ध भिक्षुक इस परिस्थिति से कैसे गुजरा होगा ? यह सब तो हमारे राज कपूर जी की फिल्म Around the world in eight dollar से भी ज्यादा dramatic है।

गुरु नानक देव जी ने 24 सालों में 28 हजार किमी पैदल यात्रा की। इन उदासियों (यात्रा) के दौरान वह पंजाब, से हरियाणा, उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, नेपाल, सिक्किम, भूटान, ढाका, असम, नागालैंड, त्रिपुरा, चटगाँव, बर्मा, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पाकिस्तान, सिंध, समुंद्री तट के किनारे घूमते घूमते हुए गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु, श्रीलंका, आंध्रप्रदेश, कर्णाटक, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, सुमेर पर्वत का इलाका, लेह लद्दाख, कश्मीर, अफगानिस्तान, मुल्तान, सिंध, बलोचिस्तान, जैदा, मक्का, मदीना, बगदाद, ईरान, खुर्माबाद, इस्फाहन, करतारपुर आदि जगहों पर घूमे। यानि 365 दिनों में इन्होंने कोई औसतन 1167 किमी का सफर तय किया। इस दौरान गुरु जी यहाँ यहाँ से भी गुजरे उस रियासत के राजा को ऊँच नीच, जात पात, अन्धविश्वास, पाखंड आदि को ले कर अपने विचारों से अवगत करवाया। और इन सब को खत्म कर सद् भाव, समानता कायम करने पर जोर दिया। और तमाम सफर में जगह जगह लोगों को भी प्रवचन दिया और कीर्तन किया।

## चंद्र अभियान :

---- कई देश सफलतापूर्वक अपना चंद्र अभियान पूरा कर चुके हैं। जिसमे हमारा भारत भी शामिल है। और वो दिन तो मैं भूल ही नहीं सकती जब टेलीविज़न पर तत्कालीन प्रधममंत्री इंदिरा जी को चाँद पर गए कप्तान राकेश शर्मा जी से बात करते हुए दिखाया गया था। उस दिन चूँकि तीन अप्रैल, मेरा जन्म दिन भी था। इस पर SP (Super power) ने बताया कि यह इंदिरा जी द्वारा तुम्हें तुम्हारे जन्म दिन पर तोहफा है। उस दिन इंदिरा जी ने कप्तान राकेश जी से बाते करते हुए मेरे मन की कई दुविधाओ का निवारण किया था। SP ने बताया कि इंदिरा जी राकेश जी से नहीं तुमसे बात कर रहे है। यह उनके बात करने का ढंग है। वो तुम्हे सीधे नहीं बुला सकते। खैर आज इतने सालो बाद मैं यह सोचने पर मजबूर हूँ कि क्या सच मे कभी कोई इंसान चाँद पर गया होगा ? यह बात बहुत विचारने वाली है कि क्या इंसानी चंद्र अभियान असली है ? मेरे हिसाब से कोई भी अंतरिक्ष यान धरती के वायु मंडल से बाहर जा ही नहीं सकता। क्योंकि उल्का पिंड और उस से निकलने वाली राख धरती पर लगातार हररोज लाखो आक्रमण करती रहती है। इतनी गति पर उल्का पिंड क्या मात्र राख का एक कण ही अंतरिक्ष यान मे विस्फोट करवाने के लिए पर्याप्त है। यह सब गति का ही कमाल है। गति का महत्व इस बात से समझा जा सकता है। उदारण के तौर पर अगर मैं हाथ मे एक गोली ले कर सामने वाले पर मारु तो क्या उस गोली से सामने वाला व्यक्ति मर जाएगा ? नहीं, क्योंकि हाथ से फेंकी गई गोली की वो गति नहीं होती कि वो गोली सामने वाले को कोई घातक नुकसान पहुँचाए। पर उसी गोली को बंदूक द्वारा छोड़ा जाए तो तब यकीनन यह गोली सामने वाले के लिए घातक हो सकती है। क्योंकि बंदूक से निकली गोली की गति बहुत तेज होती है। ऐसे ही धूर्त गति मे अंतरिक्ष मे घूम रहा राख का एक कण मात्र ही यान मे विस्फोट तक करवा सकता है। अंतरिक्ष मे कोई हाई वे तो बने नहीं हुए है। जो उल्का पिंड, राख और अंतरिक्ष मे randomly घूम रही दूसरी चीजो से अंतरिक्ष यान को सुरक्षित रखे। फिर चन्द्रमा का गुरुत्वाकर्षण इतना कम है कि इंसान उस पर किसी गेंद की तरह उछलता फिरता है। इतने कम गुरुत्वाकर्षण मे यान को लैंड करवा पाना असंभव है। बिना सही गुरुत्वाकर्षण बल के कोई भी किसी भी तरह का यान सतह पर लैंड ही नहीं कर सकता। फिर चाँद का तापमान और वातावरण इंसान के लिए बहुत घातक है। चाँद के वातावरण और वहां पर मौजूद विकरणो के बारे मे इंसान को कुछ भी अच्छे से नहीं पता है। इंसान को चाँद के वातावरण की कोई भी सटीक जानकारी नहीं है।

धरती से चाँद की दूरी कोई 384400 किमी है। अंतरिक्ष यान/Space shuttle कितना ईंधन ले जा सकता है अपने साथ +768800 किमी की दूरी तय करनेके लिए? मैने कही पढ़ा था कि अंतरिक्ष यान को धरती के गुरुत्वाकर्षण बल से बाहर आने के लिए और फिर चाँद से धरती की तरफ उड़ान भरने के वक्त ही ईंधन की जरूरत पड़ती है। फिर इसके बाद गुरुत्वाकर्षण अपना काम करता है। धरती के गुरुत्वाकर्षण से बाहर आते ही यान को चाँद का गुरुत्वाकर्षण अपनी तरफ खींचने लगता है। और चाँद के गुरुत्वाकर्षण से बाहर आते ही धरती का गुरुत्वाकर्षण यान को अपनी और खींचने लगता है। चाँद के सफर पर निकले भारी भरकम यान का ज्यादातर सफर गुरुत्वाकर्षण बल के कारण ही पूरा हो जाता है। It is a kind of joke theory ! चलो माना अंतरिक्ष यान को सिर्फ पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण और atmosphere/वातावरण से बाहर निकलने के लिए ही ईंधन चाहिए। इतने भारी अंतरिक्ष यान को धरती के वातावरण से बाहर निकलने के लिए ही कितना ईंधन चाहिए ? क्या अंतरिक्ष मे इतनी जगह होती है की वो अपने लिए धरती के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के लिए और फिर चाँद से धरती की तरफ उड़ान भरने के वक्त चाँद के गुरुत्वाकर्षण बल से बाहर आने के लिए जरुरी ईंधन ले जा सके। साथ मे किसी आपातकालीन, अज्ञात स्थिति के लिए ईंधन का कोटा। इसके लिए माना राकेट का इस्तेमाल होता है। पर लाखो मील के सफर मे राकेट से मिला ईंधन कितना काम आता है ?

हमारे वायुयानो की गति अंतरिक्ष यान से काफी कम होती है। फिर भी कोई पक्षी वायु यान से टकरा जाए तो यान मे घर्षण के कारण विस्फोट हो जाता है। जबकि धरती पर उल्का पिंडों और उन से निकलने वाली राख का लगातार randomly हमला होता ही रहता है। हम धरती के वातावरण की वजह से धरती पर सुरक्षित रहते है। धरती के वातावरण से बाहर आते ही कोई

भी अंतरिक्ष यान सुरक्षित है ? क्या अंतरिक्ष में लाखों किमी के सफर में कोई खतरा नहीं ? इतनी गति पर जा रहे अंतरिक्ष यान का अंतरिक्ष में किसी चीज से सामना नहीं हो सकता ? कोई भी अंतरिक्ष यात्री और वैज्ञानिक इस बात की गारंटी लेता है कि धूर्त गति से जा रहे अंतरिक्ष यान से कोई चीज नहीं टकराएगी। इतनी गति पर एक छोटा सा कण भी अंतरिक्ष यान में विस्फोट करवा सकता है। क्या अंतरिक्ष का सफर हमारे वायु यान की तरह 100 % सुरक्षित और सफल हो सकता है ? जैसे धरती पर हजारों विमान हर रोज उड़ान भरते हैं। उड़ान भरते वक्त पायलट, उसकी टीम और बाकी सब को यकीन होता है कि हवाई जहाज सही से उड़ान भरेगा और रास्ता, सफर पूरी तरह से सुरक्षित है। और जहाज ठीक ठाक अपनी जगह पर ही लैंड करेगा। क्या कोई अंतरिक्ष यात्री, उसकी टीम, उससे जुड़े लोग 100 % अज्ञात, अनंत अंतरिक्ष की गारंटी ले सकते हैं ?

Theory के हिसाब से धरती के गुरुत्वाकर्षण बल से बाहर आते ही अंतरिक्ष यान चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल के दायरे में आ जाता है। जिससे अंतरिक्ष यान खुद बा खुद चन्द्रमा की तरफ जाने, खींचने लगता है। क्या चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल इतना है कि अंतरिक्ष यान को अपनी तरफ खींच सके ? अंतरिक्ष यात्री को कैसे पता चलता है कि अब यान पृथ्वी और चाँद के गुरुत्वाकर्षण से बाहर आ गया है या अब यब यान पृथ्वी और चाँद के गुरुत्वाकर्षण के दायरे में आ गया है ? कब ईंधन बंद करना है और कब शुरू करना है ? चाँद पर अंतरिक्ष यान के लैंड करने के लिए भी प्रायप्त गुरुत्वाकर्षण बल चाहिए। बिना सही गुरुत्वाकर्षण बल कोई भी यान सतह पर लैंड ही नहीं कर सकता। चाँद का गुरुत्वाकर्षण इतना कम है कि चाँद की सतह पर इंसान फुटबॉल की तरह उछलता फिरता है। तो लाखों मील दूर से चाँद अंतरिक्ष यान जैसी भारी भरकम चीज को अपनी ओर खींच सकता है ? हम मानते हैं कि चन्द्रमा के कारण समुन्द्र में ज्वारभाटा आता है। Again a bluff by Super powers. इसके पीछे कहानी कुछ और है। अगर चाँद के गुरुत्वाकर्षण बल में इतना दम है कि वो विशाल समुन्द्र में भाटा ला सके तो चंद्र के गुरुत्वाकर्षण बल का धरती पर मौजूद किसी और चीज पर असर क्यों दिखाई नहीं देता ? अगर चाँद का गुरुत्वाकर्षण बल इतना शक्तिशाली है कि वो विशाल समुन्द्र में भाटा ला सके तो इस चाँद के गुरुत्वाकर्षण बल से धरती पर और भी चीजे हवा में उड़नी चाहिए। ऐसे तो चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण धरती पर और भी कई तरह की छोटी-बड़ी चीजे हवा में उड़नी चाहिए। अगर यह समुद्र में हो सकता है तो पृथ्वी की सतह पर क्यों नहीं?

मेरी बड़ी बहन का नाम पूनम है। यह ज्वारभाटा की कहानी उसी से जुड़ी है। पूनम (full moon) जैविक नाभिकीय युद्ध मूल रूप से सेक्स पर आधारित युद्ध शैली है। इस युद्ध शैली में परम्परागत, ज्ञात शैली के हथियार इस्तेमाल नहीं किए जा रहे हैं। इस में atomic genome निशाने पर है। जिस कारण यह युद्ध शैली सामाजिकता के परिदृश्य में रची गई है। जिसमें मेरे काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, छल, हठ, घात, रोटी, कपडा, मकान, साम, दाम,दंड, भेद, वातावरण, जलवायु, रिश्तो आदि का इस्तेमाल किया जाता है। ये कई तरह के ज्वारभाटे हैं जो इंसान में समय समय पर उठते हैं। चूँकि इस जैविक नाभिकीय खेल में मुख्य हथियार लड़के हैं। क्योंकि स्पर्म ही एक अंडाणु तक जा कर उससे जानकारी हासिल कर सकता है। मेरे दुश्मनो को मेरे nucleotide sequence की ही जानकारी चाहिए। लड़को की भावुक, संवेदनशील प्रवृत्ति का फायदा उठा कर मेरी बहन उन्हें काम के द्वारा नियंत्रित करके उनसे अपना काम निकलवाना चाहती है। इस बात को इस रचित, भ्रमित समाज में ज्वारभाटे द्वारा दर्शाया जाता है। वर्ना मानसिक और शारीरिक रूप से इतने विकसित हो चुके इंसान के लिए कामेच्छा पर नियंत्रण रखना कोई बड़ी बात नहीं है।

ज्वार - मक्की - मक्कारी - मक्कारी के द्वारा इंसान में काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि के भाटे/tides लाना। ताँकि काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह आदि के द्वारा इंसानो को, खास कर मर्दों को नियंत्रित कर उन से मन चाहा काम निकाला जा सके। क्योंकि इस भ्रमित समाज में लगभग सब कुछ मर्दों के ही हाथ में है जैसे सत्ता, काम, धंधा, सेना, इस धरती पर मौजूद तमाम संसाधन, मर्दगिरी, अपनी धौंस जमाने का कीड़ा, अकड़, अक्खड़पन आदि आदि। मेरी बहन जोकि मेरे दुश्मनो के लिए पावर



हाउस है। वो इन मर्दों को विभिन्न तरह के ज्वारभाटा द्वारा नियंत्रित कर के उनके संसाधनों को और मर्दों से अपना काम अपना काम निकलवाने के लिए इस्तेमाल करती है।

**उद्योग जगत** : --- हमारी दुनिया की industry, companies, group of companies भी कृत्तम और रचित यानी designer है।

TATAS : --- टाटा steel, Tata auto mobiles, Tata Taj Mahal hotel, Tata salt, Tata tea etc. BNW से जुड़ी बातों को बताते हैं। और यह भी सिद्ध करते हैं कि ये सब कंपनी और ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज को जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतों के हिसाब से विशेष तौर पर design किया गया है है। मेरे दुश्मनों के target मेरा atomic genome steal copy और decode करना है। पर अभी तो genetic war शुरू ही नहीं हो पाई। Genetic war or genetic chain war को मेरी tata bye bye. Tatas पारसी समुदाय से है। यानी मैं 1975 से हर स्तर से पार थी। इसी बात को दर्शाने के लिए डिज़ाइनर इतिहास में पारसी सैकड़ों साल पहले भारत आए थे।

Godrej : ---- God range = ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सरस्वति, लक्ष्मी, काली, वायु देव, वरुण देव, अग्नि देव, परम शक्ति आदि। ब्रह्मांडीय सरकार में जरूरतों के हिसाब से विभिन्न तरह के देवता (यानी मंत्री) होते हैं। विभिन्न तरह की God range के बारे में पता चलना।

Sony company : --- सोनी जापान/टोकियो की एक कंपनी है। Sony = सुपर sonic speed - मेरी विजय यात्रा BNW में super sonic speed पर है। इस गति और इस यात्रा में कभी कोई रोक टोक नहीं आई है।

बजाज : --- बजाज = दुश्मनों की अच्छे से, तसल्ली से धुलाई करना।

हॉलीवुड : --- अमेरिका की फिल्म इंडस्ट्री।

Hollywood = Holy + wood. जात से मैं बढई/धीमान (Dhiman -The man) हूँ।

Hollywood = रंगमंच = जैविक नाभिकीय युद्धभूमि के रंगमंच यानी इस भ्रमित रंगमंच से पर्दा उठाना।

East India Company : ---- यह एक विलुप्त हो चुकी कंपनी है। मेरी विलुप्त हुई powers, skills, authority, my native galaxy, relatives, family, my real or original name, my memory, my universal sovereignty etc. को पुनः प्राप्त (East India ) करना।

Brook bond :--- Brook bond :--- मेरे दुश्मनों द्वारा जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंह, ईर्ष्या, छल, हठ, आलस्य, साम, दाम, दंड, भेद, रोटी, कपडा, मकान आदि के चिताकर्षित, मन लोभावन, मनोहरी, मुग्ध, दिलचस्प, दिलकश, खौफ, चिंता के जाल, बंधन/bond बनाए गए थे। उन्हें तोड़ कर धर्म, सद् मार्ग, इंसानियत के रास्ते, सच्चाई की राह पर रहना। जमीर, आत्म सम्मान के साथ कड़ी मेहनत कर अपने लक्ष्य पर डटे रहना। यह सब sex based, socioeconomic status based, dirty

tricks, hard card weapons से भरपूर युद्ध शैली में बहुत मुश्किल है। Alluring bonds तोड़ना इतना आसान नहीं होता। पर मैं इन सब में 100 % सफल हूँ।

## Architectural clues : ----

i) कोणार्क मंदिर : --- 'कोणार्क' मंदिर भारत का प्रसिद्ध और प्राचीन मंदिर है। जो 'उड़ीसा' के 'पूरी' जिले के कोणार्क 'कसबे' में स्थित है। यह सूर्य देव (matter of nuclear reactions, BNW, transformation or nuclear transmutations i.e Atomic genome) का मंदिर है। इस में सूर्य देव को रथ रूपी मंदिर में विराजमान किया गया है। इस रथरूपी मंदिर को 12 जोड़ी चक्रों (पहियो, 24 घंटे) के साथ सात घोड़ों (horse power, nuclear power) से खींचते हुए निर्मित किया गया है।

कोणार्क = कोण + अर्क; कोण = angle, अर्क = सूर्य, निचोड़/सार/essense यह है कि जिंदगी में अगर मेरा कोण सही होगा तो S+ex & Sun situation होगी अगर कोण गलत होगा तो Ex + S & son वाली स्थिति होगी।

उड़ीसा = उड़ी + स = सुमिता , इस BNW जेल से उड़ कर, पूरी तरह आजाद हो जाएगी। बस जिंदगी का कोण सही होना चाहिए।

12 जोड़ी पहिये = मेरी सफलता की गाड़ी/रथ 24 घंटे चलता ही रहेगा और East India company, Dawn = Don

सूरज = सू + रज = सुमिता + तृप्त (पंजाबी रज=तृप्ति तृप्त) so Sun only no Son, Genetic war. तभी nuclear war जापान में ही हुई। क्योंकि जापानी सभ्यता में सूरज का बहुत महत्व है।

जापान = जा + पान/जल-पान /तृप्त

ii) खुजराहो के मंदिर : --- खोज + राह + मन + अंदर। जैसे मैंने कहा कि मैं 1975, 1977 में युद्ध जीत चुकी थी। पर मेरे दुश्मनो ने मेरे आगे genetic war/लैंगिक युद्ध की चुनौती रख दी। जिसे मैंने cellular war/कोशिका युद्ध से शुरू किया। अगर मेरे दुश्मनो में दम होगा तो इस कोशिका युद्ध को लैंगिक युद्ध में बदल लेंगे। विशेषतौर पर भ्रमित और रचित समाज होने के कारण सब को इस जैविक नाभिकीय युद्ध के बारे में पता है। पर कोई भी मुझे कुछ बता नहीं रहा। तभी मैंने इतना कुछ खोजा ना लोग, ना कोई भी सरकार और ना ही कोई भी मीडिया मेरी लाजवाब खोजों को कोई तवज्जो दे रहे है = सब मेरे मन के अंदर ही चल रहा है। कोई जनता से या किसी से कोई भी सहयोग नहीं। जिन्होंने मेरे लिए इतने इतने चक्रव्यू रचे है। वे लोग थोड़े ही मुझे इन चक्रव्यूहों को तोड़ने में मेरी मदद करेंगे। खुजराहो में एक से ज्यादा मंदिर होना = Chain reactions of circular traps.

ये मंदिर अपनी धार्मिक आस्था के साथ साथ अपनी कामुक प्रतिमाओं के लिए भी जगत प्रसिद्ध है। ये मूर्तियाँ मंदिर के बाहर मंदिर की दीवारों पर बनी है। ये मंदिर इस बात के सूचक है कि इस रचित, भ्रमित, कृतिम समाज में दुश्मनो ने कितना कितना काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, आदि का जाल बिछाया हुआ है। इन सब बातों से बेपरवाह हर वक्त एकाग्रचित रहना, मन में

अपने हर वक्त अपने लक्ष्य, ध्येय पर ध्यान रहना अर्जुन की तरह। इन सब काम, क्रोध आदि के मायाजाल को काट मंदिर के भीतर केंद्रीभूत हो जाना। बाहर के मायाजाल, मोह जाल का मन पर कोई प्रभाव ना पड़ना।

iii) अजंता एलोरा की गुफाएँ : --- अजंता = जनता। एलोरा = ए + लोरा = रोला = शोर (पंजाबी) इस कृतिम, भ्रमित समाज में BNW की सब को खबर है। पर कोई भी कुछ बोलेंगा नहीं, शोर नहीं करेगा।

iv) ताज महल : --- मुझे SP 1980 और 1982 में कहा था कि BNW set की निर्माता, निर्देशक होने के नाते मैं इस धरती पर कुछ भी हासिल कर सकती हूँ। यहाँ सब कुछ मेरा ही है। ताज और महल भी। पर मुझे साधारण सी जिंदगी बिताने के लिए कहा गया। मेरे लिए शादी और बच्चे पूरी तरह से वर्जित थे। ताज महल जो अनुपम, बेमिसाल, अप्रतिम, अद्वितीय प्रेम की निशानी है वास्तव में एक कब्र है। ताज + महल = socioeconomic status BNW में कलजुग का समय है। कब काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, छल, हठ, आलस्य आदि जैसे विकारों को बढ़ा दे, पता नहीं चलता। वैसे भी मेरा आधा शरीर दुश्मनों के नियंत्रण में है। So simplicity is the best policy or better alone than a bad company. ताज महल जैविक नाभिकीय युद्ध के रंगमंच में इसी बात का सूचक है।

v) कुतुब मीनार : --- कुतुब मीनार कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनवाई थी। मनु ने 1980 में कहा था कि मैं तुझे कॉलेज में मिलूँगा और 1982 में कहा कि मैं college में तेरे पीछे पीछे रहूँगा। पर मैं तुझे कभी भी बुलाऊँगा नहीं। क्योंकि मैं बहुत मुसिबत में होऊँगा। सच में +1 में मनु college में मेरे पीछे पीछे रहा कुत्तो की ही तरह पर कभी मुझे बुलाया (ऐ बक) नहीं। दीन = मुसिबत

vi) Brooklyn bridge : --- यह न्यूयॉर्क में है और Manhattan (man + हटना) को Brooklyn (brook bond) से जोड़ता है।

vii) Pentagon : --- यह इमारत अमेरिका के रक्षा विभाग का मुख्यालय है। जो "Washington" में है। Pentagon = पाँच कोण = पाँच तत्व = आणविक गुण सांरणी।

पाँच तत्व = भारतीय दर्शन, pentagon = आधुनिक दर्शन BNW के हिसाब से।

यूरोपियन कोलम्बस भारत ढूँढने निकला था। पर वो पहुँच अमेरिका गया। वहाँ जा कर भी उसे यही लगा कि वो भारत पहुँच गया है। तभी वहाँ के मूल निवासियों को उसने "Red Indians" का नाम दिया। अमेरिका हमारी पौराणिक वैदिक सभ्यता का आधुनिक वैज्ञानिक रूप है। तभी मैं ब्रह्म ज्ञान, जैविक नाभिकीय युद्ध, God range polymorphism, multimorphism, pseudomorphism etc जान पाई।

## ब्रह्म ज्ञान -

ब्रह्म ज्ञान = ब्रह्म + ज्ञान = ब्रह्म का ज्ञान

ब्रह्म ज्ञान जानने के लिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि ब्रह्म क्या है ? ब्रह्म किसे कहते हैं ? अगर ब्रह्म के बारे में पता होगा । तभी ब्रह्म के बारे में ज्ञान हासिल कर पाएँगे।

जिससे ब्रह्माण्ड बना है। उसे ही ब्रह्म कहते हैं। अब अगला प्रश्न यह कि ब्रह्माण्ड किससे बना है ? ब्रह्माण्ड अणु/atom से बना है। तो इसलिए atom/अणु ही ब्रह्म है।

अणु के बारे में पूर्ण ज्ञान तथा अणु पर पूर्ण नियंत्रण होना ही ब्रह्म ज्ञान कहलाता है।

अणु की संरचना, उसकी कार्यविधि या कार्य करने के ढंग के बारे में पता होना और अणु को अपने मनचाहे ढंग से इस्तेमाल करना आना ही ब्रह्म ज्ञान कहलाता है।

साधारण शब्दों में एक वस्तु को दूसरी वस्तु में बदलने के ज्ञान को ब्रह्म ज्ञान कहते हैं।

एक तत्व को दूसरे तत्व में बदलने को ब्रह्म ज्ञान कहते हैं।

ब्रह्म ज्ञान जिससे ब्रह्माण्ड चले। वह ज्ञान जिससे ब्रह्म (अणु) और ब्रह्माण्ड नियंत्रण में आ जाए।

ब्रह्म ज्ञान और कुछ नहीं बस सिर्फ विशुद्ध विज्ञान ही है। ब्रह्म ज्ञान में जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित और समय आता है।

जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान में building blocks/मूलतः इकाई Atom /अणु ही है। मतलब कि हर एक चीज चाहे वो जैविक हो या अजैविक हो (संजीव या निर्जीव) वह atom/अणु कि ही बनी हुई है। तो एटम/अणु के बिना ब्रह्माण्ड और विज्ञान का कोई अस्तित्व ही नहीं। जैसे कोई भी घर/इमारत ईंट की बनी हुई होती है। ईंट के बिना कोई भी इमारत संभव नहीं। ठीक इसी तरह हर संजीव और निर्जीव चीज atom/अणु की बनी हुई होती है। अणु के बिना किसी भी चीज का कोई वजूद नहीं। चाहे फिर वो चाँद हो, सूरज, कोई भी ग्रह, हवा, पानी, कोई भी प्राणी या पेड़ पौधा, कोई भी रसायन.....कुछ भी। सब कुछ तत्व/अणु से ही बना है।

अणु ब्रह्माण्ड रूपी टीवी का रिमोट है। अणु इस ब्रह्माण्ड में घटने वाली हर घटना की चाबी है। अणु के नियंत्रण में आते ही जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित और समय हमारे नियंत्रण में होगा। जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और गणित ही विज्ञान की वो शाखाएँ हैं। जिनके नियंत्रण में आते ही हम वह कार्य करने में सक्षम हो जाते हैं। जिन्हें हम चमत्कार कहते हैं। ठीक वैसे ही चमत्कार जैसे चमत्कार हमारे देवी-देवता करते हैं। दिन को रात बनाना, चाँद को सूरज बनाना, पहाड़ को मैदान बनाना, मैदान को समुन्द्र बनाना, समुन्द्र को रेगिस्तान बनाना, औरत को आदमी बनाना, जवान को फिर बच्चा बनाना, बच्चे को सीधा बूढ़ा बनाना, दूध को दही बनाना, दही को घी बनाना, पेड़ को इंसान बनाना, इंसान को भूत बनाना, हाथी को घोड़ा बनाना आदि.... कुछ भी। कोई भी कार्य जो चमत्कार या जादू लगे।

अणु के नियंत्रण में आते ही कोई भी काम इंसान के लिए असंभव नहीं। तो हम कह सकते हैं कि ब्रह्म ज्ञान और कुछ नहीं बस सिर्फ विज्ञान ही है। विज्ञान के इस तरह के रूप, विशेष स्तर को हम ब्रह्म विज्ञान और Atomic science कहेंगे।

हमारे पौराणिक समय में भी ब्रह्मज्ञान का जिक्र होता है और ब्रह्माचार्य का भी।

ब्रह्म अस्त्र = Atomic bomb

ब्रह्माचार्य = Atomic master or Master of atom

Atomic science = The science that can convert one matter to another

The Art that can convert one matter to another

The science of conversion or transformation or nuclear transmutation

Fully control of nuclear transmutation

### **Bifurcation of science**

तो अब हम यहाँ विज्ञान को दो भागों में बाँट सकते हैं :----

(1) साधारण विज्ञान

(2) ब्रह्म विज्ञान, atomic science

(A) साधारण विज्ञान : --- साधारण विज्ञान वो विज्ञान है जो साधारण लोगों तक ही सिमित है। यह विज्ञान आम इंसानों को स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में पढ़ाया जाता है। यह विज्ञान predetermined होता है। इस में इंसान का कोई दखल नहीं होता। इंसान प्रकृति के बनाए किसी भी नियम, parameter और सिद्धांतों में कोई बदलाव नहीं कर सकता। इंसान को विज्ञान की कितनी भी practical knowledge हो पर मैं उसे theoretical knowledge ही कहूँगी।

इस में इंसान को कोरा ज्ञान ही होता है। पर वो मन चाहा बदलाव नहीं कर सकता। जैसे कोई व्यक्ति अंधा है तो डॉक्टर सारी जाँच कर के यह तो बता सकता है कि यह इंसान क्यों अंधा है। पर उसके अंधेपन को ठीक नहीं कर सकता। जैसे किसी को कैंसर या एड्स है तो डॉक्टर बीमारी के बारे में बता तो सकता है पर उसकी इस बीमारी को ठीक नहीं कर सकता। किसी के बाल सफेद हो रहे हैं तो पुनः उसके बालों को काला नहीं किया जा सकता। कोई भौतिक विज्ञान पढ़ा इंसान यह तो बता सकता है कि इंसान गुरुत्वाकर्षण बल के कारण उड़ नहीं सकता। पर वो इंसान में या गुरुत्वाकर्षण बल के सिद्धांतों में इतनी तबदीली नहीं कर सकता कि इंसान उड़ने लगे। रसायन विज्ञानी, जीव विज्ञानी या डॉक्टर यह तो बता सकते हैं कि इंसान बूढ़ा क्यों होता है। पर वो इस प्राकृतिक प्रक्रिया को होने से नहीं रोक सकता। जैसे दिल के धड़कने का समय नियत है। हम उस समय में हेर फेर नहीं कर सकते। बच्चा जन्म लेने में नौ महीने का समय लगता है। कोई भी embryologist, doctor, chemist etc. step by step बहुत ही बारीकी से हर step बताने में सक्षम है। हर chemical, hormone और उसका समय बताने में सक्षम है। पर वो किसी भी step, chemical और rate of a chemical reaction में बदलाव नहीं कर सकता। ठीक ऐसे ही हम सूरज और धरती की दूरी बता सकते हैं, चँद और धरती की गति बता सकते हैं, दिन और रात की वजह बता सकते हैं, मानसून चक्र के बारे में बता सकते हैं। पर इन सब में कोई बदलाव नहीं कर सकते।

(B) ब्रह्म विज्ञान और Atomic science : ---

ब्रह्म विज्ञान वह विज्ञान है जो किसी एक विशेष प्राणी के पास ही होगा। उस विशेष प्राणी को हम आणविक प्राणी और Atomic organism कहेंगे। इस तरह के विज्ञान में किसी विशेष इंसान/प्राणी के पास theoretical knowledge के साथ साथ उस विषय पर पूर्णतः practical knowledge भी होगी। मतलब कि वह किसी भी चीज में मनचाहा बदलाव कर सकता है। मतलब

कि वह प्रकृति के किसी भी नियम और parametre को बदल सकता है। यह सब वह प्राणी समय, जीव विज्ञान (प्राणी विज्ञान+वनस्पति विज्ञान), भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित के विज्ञान की पूरी पूरी, गहराई तक, आणविक स्तर के ज्ञान की मदद से कर सकता है ।

(1) साधारण परिस्थितियों में साधारण विज्ञान का ज्ञाता यह तो बता सकता है कि जो प्राणी रात को अँधेरे में देख लेते हैं, क्यों और कैसे देख लेते हैं ? साधारण विज्ञान का ज्ञाता यह भी बता सकता है कि कुछ प्राणियों में रंग पहचानने की क्षमता होती है तो कुछ प्राणियों में रंग पहचानने की क्षमता क्यों नहीं होती ? साधारण विज्ञान हमें बताता है कि प्राणियों की आँखों में rod cells or cone cells होते हैं। Rod cells रात को अँधेरे में देखने में मदद करते हैं। इसलिए जो प्राणी अँधेरे में बहुत आराम से देख लेते हैं। उन प्राणियों में दूसरे प्राणियों (जो रात को अच्छे से नहीं देख पाते) की तुलना में अधिक rod cells होते हैं। और जो प्राणी रंगों को पहचानते हैं। उनके पास cone cells ज्यादा होते हैं। साधारण विज्ञान में इंसान को rod cells or cone cells के बारे में पता है । उनके काम के बारे में पता है। पर कोई भी इंसान इन cells की मात्रा और कार्य करने की क्षमता में बदलाव नहीं कर सकता । मतलब कि rod cells or cone cells quantitatively और qualitatively changes नहीं कर सकता ।

पर atomic science और आणविक विज्ञान का ज्ञाता ऐसे बदलाव कर सकता है ।

(2) वह प्राणी जिसके पास आणविक विज्ञान का ज्ञान है। वह पृथ्वी की गति को नियंत्रित कर, उस में बदलाव कर दिन रात के चक्र को, मौसमों को बदल सकता है ।

(3) सूरज कितना तपे, कितना प्रकाश छोड़े। यह भी नियंत्रित कर सकता है।

(4) माँ के पेट में पल रहा बच्चा नौ महीने में पैदा हो, एक महीने में पैदा हो या एक क्षण में पैदा हो। यह भी तय कर सकता है।

(5) शरीर में पैदा हुई कोई भी विकृति ठीक कर सकता है। जैसे कि कैंसर, एड्स, शुगर आदि। या फिर इन बिमारियों को इंसानी शरीर में पैदा कर सकता है ।

(6) वह बुढ़ापे वाले कारको को जानता है और उन्हें नियंत्रित कर सकता है। तभी हमारे सभी देवी देवता युगों से जवान हैं।

ऐसा प्राणी ही जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और गणित के सारे नियमों में मनचाहा बदलाव कर सकता है ।

ब्रह्म विज्ञान के पाँच सतम्भ : ---- (1) जीव विज्ञान

(2) रसायन विज्ञान

(3) भौतिक विज्ञान

(4) गणित

(5) समय

ब्रह्म और आणविक ज्ञान, Atomic knowledge : --- किसी भी पदार्थ कि उसके आणविक स्तर तक के ज्ञान, आणविक स्तर तक नियंत्रित कर पाने की क्षमता को आणविक ज्ञान कहते है। जैसेकि हम जानते है कि पानी का chemical formula H<sub>2</sub>O है। पानी की हम chemical और physical properties के बारे मे भी जानते है। पानी अलग अलग तरह की परिस्थितियो मे कैसे प्रतिक्रिया करता है, जानते है। हम पानी के इस स्वभाव को बदल नही सकते और पानी का chemical formula पता होने के बावजूद, हमारे वातावरण मे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन कि भरमार होने के बावजूद हम स्वयं से पानी नही बना सकते। हमे हर बात का कोरा ज्ञान ही है मतलब कि theoretical knowledge.

पर वह ज्ञान जिससे हम किसी भी तत्व के अणुओ को अपने नियंत्रण मे कर मनचाही क्रिया करा, मन चाहे परिणाम हासिल कर सके। जैसे हम वातावरण मे मौजूद हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के अणुओ को नियंत्रित कर पानी बनाएँ ।

हाइड्रोजन + ऑक्सीजन = पानी

किसी पदार्थ की आणविक स्तर तक knowledge & control को आणविक स्तर का ज्ञान/ ब्रह्म ज्ञान कहते है।

**पूर्ण आणविक और माँ लक्ष्मी जी की कुल सम्पदा :** --- हम किसी भी इंसान की कुल सम्पदा को लाखो, करोड़ो, अरबो मे गिन सकते है, उसके पास उपलब्ध जमीन को फुट, गज, एकड़ मे माप सकते है। उसके पास हीरे, मोती, चाँदी, सोने का भी हिसाब लगाया जा सकता है। पर एक पूर्ण आणविक की कुल सम्पदा को ना तो गिना जा सकता है, ना मापा जा सकता है और ना ही उसका कोई हिसाब किताब लगाया जा सकता है। बस सिर्फ पूर्ण आणविक की कुल चल अचल सम्पदा को एक statement/कथन मे ही बताया जा सकता है --- **"This is the matter of the matter"**. यही पूर्ण आणविक की कुल चल अचल सम्पति है।

यानि जितना ब्रह्माण्ड मे matter है उतनी ही पूर्ण आणविक की कुल सम्पदा है। और ब्रह्माण्ड मे matter अंतहीन है। ब्रह्माण्ड मे matter अनंत, असीम है। यानि पूर्ण आणविक की सम्पदा भी अनंत, असीम है। यानि no limit जैसे एक पूर्ण आणविक जब भी चाहे पृथ्वी जैसा एक पूरा ग्रह बना सकता है। उसके पास जमीन गज, फुट और एकड़ो मे नही होगी। या फिर किसी भी ग्रह को नियंत्रित कर, मान लो "बृहस्पति" ग्रह को नियंत्रित कर उसकी chemical composition को नियंत्रित कर nuclear transmutation के द्वारा giant gaseous planet को स्थलीय ग्रह/पृथ्वी मे बदल देना। यानि बृहस्पति का texture बिलकुल बदल देना। charge pool की मदद से।

एक पूर्ण आणविक किसी भी तरह का स्थलीय और गैसीय ग्रह, किसी भी आकर का, कितनी भी संख्या मे, कही भी बना सकता है। एक पूर्ण आणविक जब भी चाहे सोने, चाँदी, प्लैटिनम, लोहे, एल्युमीनियम, अभ्रक, तांबा आदि किसी भी धातु का पूरा का पूरा एक ग्रह बना सकता है। जिस विधि से धातुओ की खाने बनती है। उसी process को और बढ़ा चढ़ा देना या फिर मंगल ग्रह को nuclear transmutation के द्वारा सोने, चाँदी आदि के ग्रह मे बदल देना। ग्रह धातु के शुद्ध रूप मे भी हो सकता है या ore form मे भी।

एक पूर्ण आणविक जब भी चाहे अंतहीन मात्रा में किसी भी आकर, कैरट के हीरे और बेशकीमती मोतियो, अमूल्य चीजो का निर्माण कर सकता है।

एक पूर्ण आणविक जब भी चाहे अंतहीन मात्रा में किसी भी आकर, कैरट के हीरे और बेशकीमती मोतियों, अमूल्य चीजों का निर्माण कर सकता है।

एक पूर्ण आणविक सोने, चाँदी, हीरो और मोतियों की मूसलाधार बारिश कर सकता है। तभी रचित समाज/designer society में माँ लक्ष्मी जी को सोने के सिक्कों की वर्षा करते दिखते हैं। हीरा क्या है ? हीरा सिर्फ कार्बन से ही बना होता है। तापमान और दबाव की जरूरत भी होती है। कार्बन बहुत ज्यादा तेज तापमान और बहुत ज्यादा दबाव में हीरे में बदल जाती है। Money rain, gold rain, diamond rain just like water rain, acid rain, snow fall.

Diamond & pearl plant : --- पूर्ण आणविक हीरो की फैक्ट्री भी लगा सकता है। जैसे हम जानते हैं कि सूरज मुख्य दो गैसों से ही बना है - हाइड्रोजन (73 %) और हीलियम (25 %)। ऐसे ही एक पूरा ग्रह जो कार्बन से ही बना हो। Carbon under high pressure & temperature diamond में बदल जाती है। एक ऐसा ग्रह जो लगातार हीरो का निर्माण करता हो। ऐसे ही एक ऐसा ग्रह जो लगातार बेशकीमती मोतियों का निर्माण करता हो। ऐसे ही एक ऐसा ग्रह हो जो सीप से भरा हो। और जो लगातार हर आकर के, रंग के मोतियों का निर्माण करती जाएँ (Bio synthesis). Chemo synthesis में हम मोती की chemical composition जानते हैं  $\text{CaCO}_3$  - इसी फॉर्मूले से वातावरण से जरूरी रसायन ले अनगिनित मोती बना लेना।

पूर्ण आणविक जब भी चाहे किसी भी तरह की kingdom, phylum, class, order, family, genus, species तैयार कर सकता है, बना सकता है या फिर खत्म, विलुप्त कर सकता है।

पूर्ण आणविक की टकसाल का नाम charge pool (electron, proton, neutron) or nitrogen bases (pyrimidine or purine) है। 100% knowledge of Nuclear transmutation & genetic engineering से प्राणी ब्रह्माण्डों का शासक बनता है।

यह सब अणु का ही कमाल है जो आणविक गुण सांरणी द्वारा नियंत्रित होता है। इंसान पहले गोबर से उपले/कंडे बनाते थे। फिर गोबर गैस प्लांट लगा इंसानों ने इसे अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि माना। वही एक पूर्ण आणविक गोबर से हीरे बना सकता है। यहाँ कार्बन है पूर्ण आणविक के लिए वही हीरे हैं। गोबर में  $\text{CH}_4$  बहुत भारी मात्रा में होता है। कार्बन से भी हीरे बनाए जा सकते हैं और हाइड्रोजन से भी fusion द्वारा।  $6 \text{ हाइड्रोजन} = 1 \text{ कार्बन}$

**गुणिय हथियार** और Genetic weapons : ---- गुणिय हथियार बेशक यह term और पारिभाषिक पद हमारे लिए नया हो पर हम गुणिय हथियारों से अनभिज्ञ नहीं हैं। "गिरगिट की तरह रंग बदलना" यह मुहावरा तो हम बचपन से ही सुनते बड़े होते हैं। Camouflage/छलावरण गुणिय हथियारों का एक निम्न स्तर का उम्दा उदाहरण है। Octopus भी अपने आस पास के हिसाब से या वातावरण के हिसाब से अपने शरीर का रंग बदल लेते हैं। Camouflage में octopus और chameleon colour pigment /genes/गुण/colour/complexion controlling genes का ही इस्तेमाल कर रहे होते हैं अपने बचाव के लिए। हम सब जानते हैं कि octopus एक mollusc है और गिरगिट एक reptile. फिर भी यह कम विकसित निम्न स्तर के प्राणी अपनी जान बचाने के लिए गुणिय अस्त्रों का इस्तेमाल करते हैं। अब यह विचार करने योग्य मुद्दा है कि octopus और chameleon से क्रमिक विकास में यह गुणिय हथियार वाला गुण mammals से kingdom Atomic तक आते आते कितना विकसित और प्रभावशाली हो जाना चाहिए ? गुणिय हथियारों को मैंने चार श्रेणियों में बांटा है : ----



1) Morphological weapons : ---- इस में इंसान अपने सब ऑर्गन, ऑर्गन सिस्टम, गुण सांरणी को 0 से 100 % तक पूरा नियंत्रण कर परिस्थितियों के हिसाब से शरीर में कोई भी +ve और -ve बदलाव कर अपनी जान बचा सकता है। खुद को किसी भी तरह के जैविक और अजैविक/संजीव और निर्जीव में बदल कर। अपने शरीर में कैसे भी बदलाव कर अपनी जान बचाना। जैसे खतरा महसूस होने पर नर्मदा माँ एक नदी में बदल गए। महिषासुर राक्षस से भैसे में बदल जाता था। तितलियाँ भी polymorphism show करती है। वैसे यह गुणि गुणिय हथियारो/genetic weapons में नहीं life cycle में आएगा। जैसे मेरा मानना है कि हमारा designer world, इस में मौजूद तमाम biotic और abiotic मेरे ही जैविक पदार्थ से बना है।

Bodily/cellular jail = Biotic universal jail. अपने किसी भी कोशिका/cell में कोशिका विभाजन/cell division द्वारा विभिन्न तरह की कोशिकाओं को बना उन में विभिन्न तरह की variations, mutations or modifications द्वारा कई तरह की कोशिका और अणुओं का निर्माण करना। फिर इन विभिन्न तरह की कोशिकाओं और अणुओं में रूपांतरण और नाभिकीय रूपांतरण द्वारा शारीरिक, ग्रहीय, तारामण्डलीय, ब्रह्मांडीय जेल और इस में मौजूद विभिन्न तरह के जैविक अजैविक पदार्थ का निर्माण करना। जैसे मात्र दो तरह की कोशिकाओं (अंडाणु और शुक्राणु) द्वारा विभिन्न तरह की कोशिकाओं का निर्माण कर एक बच्चे का निर्माण होता है।

2) Genomic weapons : --- इस में इंसान द्वारा अपने बचाव के लिए सामने तीन या चार लोगों के शरीर/गुण सांरणी को 0 से 100 % तक नियंत्रित कर, उनके शरीर और दिमाग को प्रीज कर देना या ऐसा बदलाव कर देना कि जिससे अपनी जान बचाई जा सके। कैसे भी +ve और -ve बदलाव कर देना। सामने वाले को इंसान से पेड़, पत्थर, तोता, चींटी कुछ भी बना देना।

3) Atomic power :--- इस स्तर पर इंसान/प्राणी "One man army " की तरह होगा। वह एक साथ हजारों इंसानों/प्राणियों को नियंत्रित कर सकता है। अपने ग्रह के हर तरह के वातावरण, संक्रमण, के साथ 100 % तालमेल बिठा सकता है। वह अपने ग्रह के सभी तत्वों को भी नियंत्रित कर सकता है। यानि वो अपने ग्रह की तमाम chemical or biochemical reactions, fauna & flora को भी 100 % नियंत्रित कर सकता है। उसके पास आणविक काम करने के ढंग की भी सुविधा हो सकती है।

4) Atomic power : ---- यह शक्ति सिर्फ आणविक/पूर्ण आणविक के पास ही होगी। जैसे सृजन, पालन, प्रलय, सरस्वती, लक्ष्मी, काली आदि की तमाम शक्तियाँ। किसी भी ग्रह, उपग्रह, तारामंडल, ब्रह्माण्ड को बनाने की क्षमता, उजाड़ने की क्षमता। किसी भी तरह की Kingdom, phylum, class, family, order, genus, species को बनाने, बसाने और विलुप्त, उजाड़ने की क्षमता। 100 % nuclear transmutation की क्षमता। सब तरह के, सब ग्रहों के तत्वों, जीव जगत और वनस्पति जगत को नियंत्रित करने की क्षमता। काम करने का आणविक/ढंग आदि। यह सब क्षमताएँ ब्रह्म ज्ञान में आएँगी। और जैविक नाभिकीय युद्ध इन्हीं चौथे स्तर के गुणिय हथियारो/genetic weapons क्षमता (Atomic power) के लिए हो रही है।

तो हम कह सकते हैं कि ...

Morphological or genomic weapons = ऋषि, मुनि, सिद्ध पुरुष = Crash course, diploma

Atomic weapon = Partial atomic = Degree, Master degree

Atomic power = Full atomic = Ph.D & D.sc.

## आनुवंशकीय पुरस्कार और सजा

/Genetic reward & punishment : --- जैसे हमारी दुनिया मे हर काम मशीन, और bio machin (इंसान, हाथ, पैर, दिमाग, शरीर) द्वारा ही किया जाता है। ठीक ऐसे ही पूर्ण आणविक अपना सारा काम genes/atom की मदद से ही करते है। BNW gene/गुणो के लिए हो रही है। BNW set पर हर चीज हर चीज गुणों द्वारा ही नियंत्रित की जाती है। क्योंकि इस युद्ध को kingdom Atomic के प्राणी नियंत्रित कर रहे है। जिनका काम करने का ढंग आणविक है। सो हर काम गुणों/genes की मदद से ही हो रहा है। यह सारा "रचित समाज" गुणों द्वारा या गुणिय शक्ति से ही रचा गया है और संचालित किया जा रहा है। युद्ध लड़ने के लिए भी गुण ही इस्तेमाल हो रहे है। यानि गुणिय और आनुवंशकिय हथियार। तो BNW मे पुरस्कार और सजा भी गुणिय और आनुवंशकीय ही होगी। अब इस तरह की युद्ध पद्धति में प्रशंसा पत्र, प्रमाण पत्र, और तगमे तो मिलने से रहे। Genetic reward & punishment को आगे दो श्रेणियों मे बांटते हैं :

---

Genetic coding : --- आनुवंशकीय संकेतीकरण, जैसे कहते है कि पाप और पुण्य चित्र गुप्त जी द्वारा बही कहते मे लिखे जाते है। इन्हीं records /अभिलेखो के दम पर इंसान के लिए नर्क या स्वर्ग तय होता है। ठीक ऐसे ही BNW मे पाप - पुण्य, अच्छे - बुरे काम गुणिय और आनुवंशकीय रूप मे संग्रहित होते है। अगर किसी के कर्म अच्छे है तो उसके गुणों की और गुण सांरणी की गुणवत्ता/गुणता (कालिटी) अच्छी कर दी जाती है। अगर किसी के कर्म गलत है तो परिणाम स्वरूप उसके गुण और गुण सांरणी की गुणवत्ता/गुणता को कम कर दिया जाएगा। यानि गुण, गुण सांरणी को बेहतर, श्रेष्ठतर, निम्न स्तर का करना/बनाना। पुरस्कार के तौर पर गुण और गुण सांरणी को बेहतर और श्रेष्ठतर कर देना और सजा के तौर पर गुण और गुण सांरणी मे से उत्तम सुविधाएँ कम कर देना और soft ware को निम्न स्तर के गुणों/genes मे बदल देना। यानि reward के तौर पर superior genes और सुविधाएँ और पनिशमेंट के तौर पर inferior genes or genome. इस genetic coding मे इंसान की kingdom, phylum, class, order, genus, species कुछ भी बदला जा सकता है। कर्मों के हिसाब से या तो upgrade of genes या फिर degrade of genes. कर्मों के हिसाब से सिर्फ जैविक किस्म मे ही बदलाव नही होंगे जैसे इंसान से हाथी, घोडा, गधा बना दिया या इंसान से आणविक, आंशिक आणविक प्राणी बना देना। बल्कि सम्बंधित प्राणी को abiotic form मे भी बदल सकते है।

Genetic programming और अनुवंशकीय विन्यास : --- इस मे प्राणी के गुणों और गुण सांरणी को upgrade या फिर degrade नही किया जाता। यानि आनुवंशकीय सामग्री मे कोई बदलाव नही किए जाते। और आनुवंशकीय सामग्री ज्यूँ की त्यूँ ही रहती है। बस उस अनुवंशकीय सामग्री/genetic material का विन्यास (programming) अच्छा या बुरा /+ve और -ve कर दिया जाता है। सजा के तौर पर कम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, छल, ईर्ष्या, द्वेष, बीमारी आदि जैसे विकारो को मध्यम से भयंकर और प्रचंड भयंकर स्तर तक बढ़ा दिया जाता है। जिसे हम कहते है कि पाप करने वालो को नर्क मे तेल के बड़े बड़े कड़ाहो मे तला जाता है। या जैसे महिलाओ मे आम देखा गया है कि यदि किसी दूसरी महिला ने बढ़िया कपडे, चप्पल, या कोई गहना बनवा लिया तो उसके साथ वाली महिला की दो चार दिनों के लिए सुख, चैन और नींद हराम जो जाती है। किसी के बच्चे के नंबर ज्यादा आ गए या जिंदगी मे बढ़िया सेट हो गया तो परेशानी हो जाना। बात बात पर बिना वजह परेशान रहना। और यह प्रोग्रामिंग इंसान के शारीरिक, मानसिक और योन तीनों स्तरों पर मध्यम से प्रचंड भयंकर किस्म की हो सकती है। व्यर्थ मे चिंता से ग्रस्त रहना कि इंसान की चिंता ही सज जाए।

इनाम के तौर पर प्रोग्रामिंग में सतो गुण का विकास होना। वह सद् मार्ग पर सही कर्म करते हुए शांत, सकूँ भरा जीवन जीता है। बड़ी से बड़ी बाधा में भी धैर्य ना खो के मानसिक संतुलन बनाए रखता है। और उचित फैसले ले आराम से मसले को हल करता है। एक अति सुन्दर, चुप, मौन, गंभीर, संवेगहीन, आवेशरहित, खामोश, स्थिर, आदर्शवादी व्यक्तित्व। शील, शांत, समय, मिलनसार, इंसानियत से भरपूर, समझदार, दूरदर्शी, धैर्यवान, छठि इंद्रि जागृत, चतुर, सचेत, मृदुभाषी, उच्च विचार, आदर्श, कर्म में विश्वास रखने वाला, तकदीर की रजा में राजी। जिस पर काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का प्रभाव न हो। इन विकारों को मजाक समझे।

**Designer families/रचित परिवार : ----** इस रचित समाज/designer society में सब कुछ ही

रचित/कृतिम/designer है। ठीक फिल्मों के सेट की ही तरह। यहाँ कुछ भी वास्तविक और असली नहीं है। कुछ इसी तरह के रचित परिवारों की मैं यहाँ चर्चा करती हूँ। जिन्हें हम सब जानते हैं : ---

जितेंद्र - शोभा - एकता - तुषार : --- यहाँ तुषार = बर्फ की तरह ठंडा होना। college में मनु दो साल लगातार मेरे पीछे पीछे इसलिए घूम सका क्योंकि मेरा अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण है। वर्ना दुश्मन तो सदैव मौके की तलाश में ही रहते हैं। अपने इसी गुण के कारण इन दो सालों में मेरी SP ने मनु को पूरी सफलता के साथ specimen की तरह इस्तेमाल किया और कई जरूरी जानकारियाँ भी मिली।

अमिताभ बच्चन - जाया भादुड़ी - श्वेता - अभिषेक : ---- जैसे हम सब जानते हैं कि अमित जी और जया जी का प्रेम विवाह है। क्या सच में इस जोड़ी का विवाह प्रेम विवाह है ? क्या अमित जी और जया जी ऐसा चाहते थे ? फिल्मों की ही तरह जैविक नाभिकीय युद्ध भूमि/set पर हर छोटी बड़ी चीज/घटना पूर्व नियोजित/preplanned होती है। हम तो बस अपना किरदार अदा कर रहे हैं। BNW में एक भी क्षण ऐसा नहीं होता जिसे हमने अपने हिसाब या इच्छा से बिताया हो। हम सब पूर्व नियोजित, सम्मोहित, खुद बा खुद अपने आप मिले किरदार के हिसाब से क्रिया प्रतिक्रिया किए जा रहे हैं। हम किसी रोबोट की तरह अपने हिस्से आए किरदार को बखूबी निभाने के लिए पहले से ही पराभौतिक शक्तियों द्वारा programmed किये गए होते हैं। अमित जी और जया जी की शादी SP द्वारा पहले से ही तयशुदा थी। बस हालात और मनोदशा ऐसी बना दी गई कि उसे नाम प्रेम विवाह का दे दिया गया। इस में अमित जी की और जया जी की इच्छा अनिच्छा का कोई मतलब नहीं।

मेरे दुश्मनों ने मुझ पर कितने ही प्रतिबन्ध लगा रखे हो। मुझे मेरी दुनिया, मेरे अपनों से अलग कर दिया गया। मेरी तमाम शक्तियाँ, अधिकार, कौशल, क्षमता को शून्य कर, चारों तरफ से अच्छी तरह पंगु कर इस धरती पर कैद कर रखा हो। बेशक dirty tricks का षड्यंत्र दिन रात लगातार चल रहा है। पर फिर भी मेरे दुश्मन मेरी अमित आभा (अमिताभ) संकल्प, धैर्य, कर्मठि होने से नहीं रोक पाए। BNW के हर स्तर पर मेरी ही "जय" हुई है। मैंने अपनी सामाजिक, नैतिक, धार्मिक कद्र कीमतों और हिंदुस्तानी दर्शन, आदर्शों को बहुत ही कायदे कानून से निभाया है। मेरे सद् कर्मों की बदौलत (श्वेता/श्वेत) मेरे दुश्मनों के छल, मिथ्य, dirty tricks, hard card weapons के राज परत दर परत खुलते जा रहे हैं और मेरे सतो गुणों की शक्ति ने मेरे दुश्मनों के हर छल, विकार का मुँह तोड़ जबाव दिया। सो मैं हर परेशानी, छल, genetic war, genetic chain war से बचती गई (बच्चन = बच्चा, BNW में बचना)। Genetic war or genetic chain war में शामिल ना होने के कारण मेरा कोई बच्च/son (पुर्तगाल-पुत्र गाल) भी नहीं हुआ। इस तरह मेरे दुश्मन मेरे संस्कार/sons कार का इंतजाम नहीं कर पाए। सो मैं

दुबारा अपनी आणविक गुण सांरणी हासिल कर लूँगी और पुनः मेरा ब्रह्माण्ड की महारानी और परम शक्ति के रूप में "अभिषेक" होगा।

धर्मद्र - प्रकाश कौर - हेमा मालिनी : ---- मैं हमेशा धर्म के रास्ते पर रही। सो दुश्मनो ने कितना भी झूठ, छल, भ्रम, रचित समाज का काला अँधेरा (पथ भ्रष्ट करने वाले कारक) पसारा हो। पर मेरी सामाजिक, नैतिक, धार्मिक कद्र कीमतो, आदर्शों, दर्शन, आस्तिक प्रवृत्ति ने सदैव मेरे हर रास्ते को प्रकाशमान रखा और सदैव मेरी आणविक गुण सांरणी (खून) की रक्षा की है।

हेमा मालिनी = हेमा + मालिनी = Hemoglobin + रक्षा करना।

Hemoglobin = आणविक गुण सांरणी/खून

जी पी सिप्पी : ---- गोपाल दास परमानंद सिप्पी

गोपाल दास = धर्म की राह

गौ + पाल = one man army (BNW में गाँ = one man army, कामधेनु गाय)

परमानंद = परम + आनंद

सिप्पी = मेरी आणविक गुण सांरणी

रोशन : --- रोशन लाल नागरथ, जिन्हे लोग इनके पहले नाम "रोशन" से ज्यादा जानते हैं। नौवीं कक्षा में मेरे विज्ञान के अध्यापक सुनील नागपाल जी को ले कर भी एक अजीब किस्सा है। आम हालातो में ऐसा होता नहीं।

पृथ्वी राज कपूर : ---- जैविक नाभिकीय युद्ध में कपूर खानदान बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान पर है। पराभौतिक शक्तियाँ बचपन से ही दो बातें कह रही थी कि युद्ध छल रहा है। जिसके कारण तुम्हारी skills, powers, authorities, caliber, physique control की गई है। दूसरा तुम्हें इस कृत्रिम, रचित धरती पर कैद कर के रखा गया है। इन सब बातों को दो पहलुओं से सिद्ध करना था - (i) scientifically (ii) Logically. Scientifically इन बातों को सिद्ध करने के लिए मेरे अध्यापकों ने पूरी पूरी मदद की। रचित समाज को logically सिद्ध करना था। इसमें Kapoor & film industry ने बहुत बढ़िया भूमिका निभाई।  
BNW में कपूर -

क = भ्रमित, रचित समाज, पूर = पूरना (कपूर) यानि भ्रमित समाज के मुद्दे को सिद्ध करना

पृथ्वी राज कपूर : --- पृथ्वी राज = पृथ्वी + राज/शासन/गुप्त भेद = सारी धरती पर BNW का set (शासन) लगा है। यह बात मुझसे गुप्त रखी गई है।

कपूर = क + पूर = भ्रमित समाज + पूरना = भ्रमित समाज के मुद्दे को पूरना/भ्रमित समाज के मुद्दे को logically सिद्ध करना।

पृथ्वी थिएटर : --- पृथ्वी थिएटर जैविक नाभिकीय युद्ध में इस बात को दर्शाने के लिए है कि हमारी पृथ्वी/दुनिया एक रंग मंच है। यहाँ पर BNW का नाटक चल रहा है। जैविक नाभिकीय युद्ध की युद्ध भूमि का रंगमंच सजा हुआ है।

R K studio : --- राज (R) + भ्रमित समाज (K) + studios/मेहनती, कर्मठी, कछुए की तरह लगातार प्रयास करके भ्रमित समाज के जाल को काट देना।

मैंने यहाँ +1, +2 की उस कॉलेज को "रणधीर" कॉलेज कहते हैं। वैसे उसका नाम नवाब जस्सा सिंह आहलुवालिया सरकारी कॉलेज है। इस भ्रमित समाज में सारा ही कपूर खानदान specially designed है। बस यहाँ संक्षिप्त ही

BNW में हर गाना, हर फिल्म, हर संवाद, आदि BNW की needs & objectives के हिसाब से ही रचे होते हैं। हर फिल्म, हर गाना BNW के किसी ना किसी किस्से/मुद्दे पर बनी होती है। जैसे रामलीला में सारे प्रसंग रामायण से ही लिए होते हैं। ठीक ऐसे ही सब फिल्में, नाटक, लेखन कार्य, साहित्य आदि काल से ले कर अब तक BNW की needs & objectives के हिसाब से ही design किए गए हैं। यानि सारे ही प्रसंग जैविक नाभिकीय युद्ध से ही लिए जाते हैं।

## कुछ प्रसिद्ध कवि या कवयित्री/Some famous poet & poetess:---

सुभद्रा कुमारी चौहान : --- यह एक जबरदस्त designer नाम है। सुभद्रा = सु + भद्र = सौम्य रौद्र रूप (भद्र काली)

कुमारी, चौहान = जिसकी कीर्ति चारों दिशाओं में फैली हो। इन्होंने बेहद प्रसिद्ध कविता "झाँसी की रानी" लिखी है।

झाँसी = झाँसा = भ्रमित समाज, भ्रम, मिथ्य, छल। ब्रह्मांड में सबसे ज्यादा शक्तिशाली और धनवान कौन है ? जिसके पास आणविक गुण सांरणी है वही सबसे ज्यादा शक्तिशाली और धनवान (लक्ष्मी बाई) है। लक्ष्मी बाई जी अंग रेजो (अंग + रेंज/range) के साथ वारिस को ले कर लड़ी थी। यानि नो genetic war or genetic chain war। "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी" यह -SP का bluff/झाँसा है कि बेटा होना चाहिए। पर BNW में यह सब घातक है - पुर्त गाल = पुत्र गाल, sons+ कार ।

रामधारी सिंह दिनकर : ---- इन्हें राष्ट्र कवि भी कहा जाता है।

धारी - धारण करने वाला - जैविक नाभिकीय युद्ध में राम/र म हथियार को, प्रोग्राम को धारण करने वाला। मेरे दुश्मन नहीं चाहते थे कि मैं 'राम' हथियार का इस्तेमाल करूँ या इस प्रोग्राम पर काम करूँ। क्योंकि इस से मेरे दुश्मनों के रचे जैविक नाभिकीय युद्ध का पर्दा फाश हो जाना था। कोई दमदार इंसान ही इस हथियार को इस्तेमाल करने के काबिल होता है।

राम = र - म = राहुल + मनु

सिंह = गर्जना, नरसिंह, ताकत;

दिनकर = दिन + कर। भ्रमित समाज और सम्मोहन को काले अँधेरे को मिटाना। और इस तरह मुझे मनु - राहुल गठबंधन के कारण अदृश्य, देवीय जैविक नाभिकीय युद्ध दिखाई देना, समझ आना और इसकी रणनीति समझ आनी शुरू हो गई।

मुंशी प्रेम चंद : --- "मुंशी" + "प्रेमचंद"/टीना मुनीम = मनु के मुताबिक मेरी एक से ज्यादा शादियाँ लिखी थीं। ऊपर से मेरा आधा शरीर मेरे दुश्मनों के नियंत्रण में है। इसे ही कहते हैं - गरीबी में आटा गीला, आसमान से गिरा खजूर पर अटकना। पर भगवन जी की कृपा से सब कुछ ठीक ठाक ही रहा। टीना मुनीम -T ना मुनीम, T- Telebrands.

भीष्म साहनी : --- BNW मे मेरा कोई साहनी नहीं/मुकाबले का नहीं है। मैं इस खेल मे one man army की तरह हूँ।

सूफी कवि : --- पंजाब मे सूफी का मतलब वो व्यक्ति जो किसी भी तरह का नशा, शराब, गलत चीजे नहीं खाते पीते/  
teetotaler.

सुमित्रा नंदन पंत = सुमि ता + नंदन + पंत = पुर्त गाल, no genetic war or no genetic chain war यानि गुणिय युद्ध  
और गुणिय श्रृंखला युद्ध हरगिज भी ना होना।

## World clues

अमेरिका : --- अमेरिका = आ + मैं + रुका। 1975 मे emergency लगते ही और 1977 मे जब पराभौतिक शक्तियो ने पहली बार मुझसे बात की तो मैं BNW technically जीत चुकी थी। क्योंकि मेरी पराभौतिक शक्तियो ने मुझे आणविक गुण सांरणी नियंत्रित करती बता देनी थी। पर मेरे दुश्मनो ने कोशिका युद्ध की चुनौती दे दी। क्योंकि गुणिय युद्ध तो वो शुरू कर ही नहीं पाए थे। Cellular war यानि बिना पराभौतिक शक्तियो की मदद से खुद जैविक नाभिकीय युद्धभूमि पर रह कर हर तरह की dirty trick or hard card weapon, hardship को बर्दाश करना बिना पराभौतिक शक्तियो की मदद लिए। सो इस युद्ध मे मेरी SP direct active form मे नहीं है। पर passive form मे है। जैसे महाभारत मे कृष्ण जी ने पांडवो को जरूरत पड़ने पर जगह जगह मदद, मार्ग दर्शन, संकेत दे कर पांडवो को विजयी बनाया था। कृष्ण जी ने कौरवो को अपनी चतुरंगिणी सेना दे दी।

चतुरंगिणी सेना = चतुर रंगो वाली सेना। यानि वो सेना जो अपनी shape, size, complexion बदल सकती है = (pseudomorphism) मेरी SP तटस्थ खड़ी है और समय समय पर मुझे BNW से जुड़े जरूरी संकेत, जानकारी देती रहती है। पर तमाम तरह की परिस्थितियो का मैने ही सामना करना है। मेरी SP ने BNW से जुड़े सारे जरूरी संकेत, जानकारी दे कर BNW के मामले मे पूरा update कर भरपूर नैतिक समर्थन यानि moral support दी और खुद कृष्ण जी की तरह active participant/सक्रिय भागीदार ना बन कर युद्ध के तटस्थ रह, मेरे विजयी हो कर लौटने का इंतजार कर रही है। अमेरिका : --  
- अमेरिका = आ + मैं + रुका।

Newyork (= new + yolk = new nucleus = Atomic genome) का statue of Liberty भी यही सिद्ध करता है कि हम सब यहाँ पर कैद है। Statue के एक हाथ मे किताब और दूसरे हाथ मे एक मशाल है।

मशाल = जो BNW के भ्रम के काले शाह अँधेरे मे भी सही रास्ता बता रही है। और आजादी की मशाल जगाए हुए है।

किताब = यानि युद्ध कलम और कागज पद्धति से हल होगा। यानि Science & education (साँई - science & education) द्वारा ही हल हो जाएगा। आ + मैं + रुका, क्योंकि BNW woman oriented war strategy है।

अफ्रीका : --- अफ्रीका = आ + free + का = सामाजिकता के परिदृश्य मे काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंह, ईर्ष्या, छल, कपट, भ्रम, मिथ्य आदि के चलते इंसान कई बार ऐसी परिस्थितियो मे फँस जाता है कि वो काम भी करने पड़ते है जो उसके जमीर, आदर्श, कद्र कीमतो, मनोदशा और जीवन शैली के अनुरूप हरगिज नहीं होते। पर मैं बेहद शांत, संतुलित इंसान हूँ। सो कभी भी ऐसी परिस्थिति मे नहीं फँसी कि मुझे वो कीमत चुकानी पड़े जो मेरी श्रेणी और सीमा से बाहर हो। Femur (fee + मर) =

Thigh bone/hind limb = he. ना दूँ । मैने कभी कोई असामाजिक, अनैतिक और अधार्मिक, जमीर के विरुद्ध जा कर कीमत नहीं चुकाई।

Europe : --- Europe = You + rope = डूबते का तिनके का सहारा। मेरी पराभौतिक शक्तियाँ और WW1 और ww2

Asia : --- Asia = A she yeah - सिर्फ सुमिता ही एक मात्र परम शक्ति है। क्योंकि मेरे AG की nursery नहीं बन पाई यानि no AG culture. मैने पहली बार जिस स्कूल (स + cool) मे अप्रैल 1979 मे दाखिला लिया उस स्कूल का नाम AG nursery school था। यह नाम नांगा महात्मा श्री आनंद गिरी जी महाराज जी के नाम पर है।

Asia = As + i/l + a/A = As usual । A यानि मैं अकेली ही हूँ। मेरे AG का कोई भी replica नहीं है।

New zealand : --- Newzealand = New + zea/G + land = New + genome + land /आयाम /दुनिया। = Atomic genome न्यूज़ीलैण्ड की राजधानी wellington है।

Australia : --- सरलतम एक व्याख्या यह कि मेरे दुश्मनो का पता था कि यह युद्ध हिंदुस्तान बनाम नेपाल है। वे कभी भी नहीं जीत सकते। फिर भी आस कि शायद वो जीत जाएँ । उन्होंने जैविक नाभिकीय युद्ध शुरू किया।

इन छः संकेतो मे लगभग सारी धरती/designer युद्धभूमि आ जाती है।

धरती = यहाँ युद्ध धरा/रचा/रखा गया हो।

Earth = अर्थ यानि हमारी earth पर जैविक नाभिकीय युद्ध का रंगमंच सजा हुआ है। हमारी धरती रचित है, कृत्रिम है। प्राकृतिक नहीं।

Planet earth = play + net, अर्थ

पृथ्वी = पृथक

पृथ्वी = पृथक, हमे सारे ब्रह्माण्ड से पृथक कर यहाँ इस धरती यानि युद्धभूमि पर कैद किया गया है।

## सात अजूबे

चीन की दीवार : --- 1980 मे मुझे SP ने कहा की pseudomorphology के चलते कोई भी तेरे पति का रंग रूप ले कर तेरे पास आ सकता है। इस तरह वो तुझे कोई भारी नुक्सान पहुँचा सकता है या फिर जान से भी मार सकता है। तू अपने चारो तरफ इतनी मजबूत दीवार बना ले कि अगर तेरा कोई अपना (SP) तेरे तक नहीं आ सकता तो कोई दुश्मन भी तेरे तक नहीं पहुँच पाएगा । यह BNW मे 100% सुरक्षित सूत्र है। इससे सम्बंधित एक प्राचीन दीवार है इस दुनिया मे। तुझे उसे ढूँढना है। वो दीवार भी इसी मकसद से बनाई गई है। अगर बड़े हो कर तूने वो दीवार ढूँढ ली तो यह समझना कि यह कोई प्राचीन दीवार नहीं है बल्कि अभी अभी, हाल ही की बनाई गई है। इस युद्ध की needs & objectives को ध्यान मे रख कर यानि कि यह

designer है। यानि तूँ एक रचित और भ्रमित समाज मे रहती है। प्राकृतिक और प्राचीन (प्र + चीन) समाज मे नहीं। ये भी कोई इत्तेफाक नहीं कि दुश्मनो से बचने के लिए बनाई गई दीवार चीन मे ही है = हिन्द चीनी भाई भाई।

ii) Eiffel Tower : ---- Eiffel = I + fell + down = genes/गुणों का degrade होना। पेरिस = pay + रिस , pay + रस

iii) झूलते बाग : --- "झूलते बाग" (= फुलवाड़ी, चमन, फूल) babylon (baby + loan, Genetic chain war) मे है जो इराक (I + rock) मे है। इराक की राजधानी बगदाद = बाग + दाद (खुजली, चमड़ी की समस्या) फुलवाड़ी = फुलवेरी रोग = बाग + दाद /दाद खुजली। जब हमारे खानदान का इकलौता चिराग, मेरा चचेरा भाई अमित पैदा हुआ। तब चाची जी को जबरदस्त Itchy skin की समस्या हो गई। हमारा सारा परिवार, काम वाली, घर पर आए लोग/मेहमान सब कंधे से खाज/खारिश कर कर थक जाते थे। कंधे टूट जाते थे। पर चाची जी की खुजली नहीं जाती थी। चार - पांच साल का होने पर अमित को फुलवेरी (Full + वेरी/दुश्मन) की समस्या हो गई। इराक एक मुस्लिम इलाका है। Cousin = Co + u + sin. "Cofactor " BNW मे एक प्रावधान

iv) पीसा की मीनार है : --- "दो पाटन के बीच मे साबुत बचा ना कोई" यह मीनार इटली मे है। वाह क्या इत्तेफाक है ! मेरी जिंदगी मे 31 मार्च 1980 मनु और राहुल के आने से "Cellular war " one of the worst, lethal, terrific, dangerous war strategy शुरू हुई।

vi) ताज महल, statute of Liberty, Pyramids के clues के बारे मे मैं पहले ही लिख चुकी हूँ। अजूबे सात ही क्यों है ? आठवाँ अजूबा = Inert gas = octet rule = octet complete = noble gas = no - बल + अदृश्य युद्ध पद्धति = इस BNW को कागज और कलम रणनीति द्वारा हल किया जा रहा है। no genetic war.

**जैविक नाभिकीय श्रृंखला युद्ध** /Bio nuclear chain war, bio chain war, Genetic chain war :---

जैसे nuclear bomb मे nuclear chain reaction होती है। ठीक ऐसे ही BNW मे bio chain war होती है। इस मे पीढ़ी दर पीढ़ी युद्ध चलता है इसीलिए BNW का औसतन समय 100 साल है। इस दौरान AG यानि आण्विक गुण सांरणी को steal, copy, decode करना होता है। अगर AG steal हो गया तो युद्ध उसी वक्त खत्म। क्योंकि AG एक बहुत जबरदस्त शक्ति है। जिसके पास भी AG होगा। उसका कोई सामना नहीं कर सकता। पर AG को copy, decode करना मुश्किल है।

i) 10 - 20 साल की उम्र के बीच AG को steal किया जा सकता है। AG steal होते ही युद्ध खत्म। दुश्मन को AG इस्तेमाल करना आता है। इस समय AG मेरे पास है। पर मुझे उसे इस्तेमाल करना नहीं याद आ रहा है। इसीलिए यह युद्ध अभी भी चल रहा है। जिस दिन मुझे AG इस्तेमाल करना आ गया। उसी दिन युद्ध खत्म।

ii) 20 - 30 साल की उम्र मे AG को copy ही किया जा सकता है। अगर AG कॉपी जो जाए तो फिर कांटे की टक्कर। क्योंकि AG की एक copy मेरे पास और एक copy मेरे दुश्मनो के पास। और दोनो तरफ एक सी ही शक्ति। क्योंकि दोनो के पास same AG है।



iii) 30 - 40 साल की उम्र तक AG को decode किया जा सकता है। पर यह decoding इतनी आसान नहीं होती। अगर डिकोडिंग हो जाए तो फिर कांटे की टक्कर। क्योंकि दोनो दलो के पास एक एक AG की copy है। पर 20s के बाद AG हासिल कर पाना बहुत मुश्किल है। क्योंकि तब तक आणविक गुण सारणी धारक (subject) कुछ सचेत होने लगता है। सो copy, decode करना इतना आसान नहीं होता। दरअसल अब BNW खत्म हो चुकी है। मुझे अपनी स्मरण (स + मरण) शक्ति नार्मल करनी है। तांकि मैं AG activate कर सकूँ। और इस BNW के चक्रव्यू से बाहर आ सकूँ।

अगर मान लो by chance किसी तरह AG मे से कुछ गुण/genes subject के, 10 % गुण offspring (off + spring) के पास चले गए तो यह BNW, genetic chain war, Bio nuclear chain war, Bio chain war का रूप धारण कर लेगी। क्योंकि दुश्मन को बाकि के 90 % गुण/genes भी चाहिए। इसलिए दुश्मन युद्ध जारी रखेगा। Subject को अपने 10 % खोए गुण/genes वापिस चाहिए। इसलिए subject भी तब तक युद्ध जारी रखेगा। जब तक कि उसे अपने 10 % खोए गुण वापिस ना मिल जाँएँ। तांकि desirable genetic material हासिल हो जाए। Biochain war का सब से उम्दा उदहारण महाभारत है। AG को हासिल करने का मतलब होता है कि ब्रह्मांडो पर राज करना। BNW ब्रह्मांडीय सिंहासन के लिए युद्ध है। और महाभारत भी सिंहासन और सत्ता के लिए हुई।

असल मे युद्ध वो नहीं था जो कुरुक्षेत्र मे लड़ा गया। युद्ध की शुरुआत सत्यवती के शांतनु के जीवन मे आगमन से ही शुरू हो गई थी। बस युद्ध नीतियाँ/पद्धतियाँ/शैलियाँ/स्तर अलग अलग थे। हिंदुस्तानी संस्कारो के चलते देवव्रत ने स्वयं ही सिंहासन की दावेदारी छोड़ दी। युवराज नियुक्त होने के बावजूद भी ! यहाँ तक कि देव व्रत (designer name) की अगली पीढ़ी सिंहासन के लिए दावेदारी ना कर दे बेचारे ने अज्ञाकारी, निष्ठावान, श्रवण पुत्र की तरह आजीवन कुँआरे रहने का देवीए 'व्रत" धारण कर लिया। इस तरह देवव्रत के पीछे हटने से सत्यवती सामाजिक, नैतिक या धार्मिक कद्र कीमतो के कारण बिना लड़े ही युद्ध जीत गई। पर सत्यवती की अपनी ही अगली पीढ़ियो मे सिंहासन के लिए मारा मारी हो गई। सत्यवती के दोनो बेटे चित्रांगद और विचित्र वीर्य मृत्यु (एक स्तर, सत्यवती के कर्मो के चलते) के कारण सिंहासन पर अपनी दावेदारी सिद्ध ना कर सके। सत्यवती इतना होने पर भी ना रुकी। उसने शादी से पहले अपने ही एक और नाजायज पुत्र वेद व्यास (=way the व्यास/diameter = सब कुछ हड़पने के लिए) से अपनी दोनो निःसंतान पुत्रवधुओ से संतान उत्पन्न करवाई। तांकि सत्यवती के वंश की सिंहासन पर दावेदारी बनी रहे। पर एक बार फिर अगली पीढ़ी योग्य सिद्ध ना हुई। धृतराष्ट्र अँधा था और पाण्डु पहले से ही एक तो पीलिया रोग से ग्रस्त था दूसरा रहते सहते श्राप ग्रस्त भी हो गया। सो फिर एक बार फिर अगली पीढ़ी और उत्तराधिकारी के लिए होड़ लग गई। धृतराष्ट्र और पाण्डु मे से जिसका पुत्र बड़ा होता। वही सिंहासन का उत्तराधिकारी होता। इस बार फिर पाण्डु ने बाजी मार ली और युधिष्ठिर दुर्योधन से बड़ा था। अब असली खूनी खेल शुरू हुआ। कौरवो ने पांडवो के विरुद्ध शकुनि के मार्ग दर्शन मे षड़यंत्र रचने शुरू कर दिए। पर इन dirty tricks से काम नहीं बना। मात्र एक सिंहासन के लिए भारतवर्ष के कितने योद्धाओ, रथियो और महारथियो, एक तरह से अमरत्व प्राप्त महानुभूतियो को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। तब कही जा कर सिंहासन की दावेदारी का मामला सुलझा ! ऐसे ही BNW पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है। desirable atomic genes, genome हासिल करने के लिए

जैविक नाभिकीय श्रृंखला युद्ध महाभारत के सन्दर्भ मे : --- जैविक नाभिकीय श्रृंखला युद्ध और गुणिय श्रृंखला युद्ध के सन्दर्भ मे जैविक नाभिकीय युद्ध की जरूरतो और उद्देश्यो को पूरा करने के लिए महाभारत को विशेष तौर से रचा गया है।

1 पीढ़ी	गंगा + शांतनु	+ सत्यवती
2 पीढ़ी	देवव्रत	चित्रगन्ध      विचित्र वीर्य
3 पीढ़ी		धृतराष्ट्र      पाण्डु
4 पीढ़ी		दुर्योधन                      युधिष्ठिर
		दुशासन                      भीम
		+ 98 और भाई                      अर्जुन
		नकुल
		सहदेव
		अभिमन्यु, अर्जुन पुत्र
5 पीढ़ी		राजा परीक्षित
6 पीढ़ी		

Atomic structure and Bio atom and Virus atomic cell and Bio atomic spores, Bio atomic clone : ---- जैविक नाभिकीय युद्ध मे क्या हमारे पास जीव जगत को ले कर पूरी पूरी जानकारी है ? क्या आणविक और सम्मिश्रित जीवो (atomic or fusion organisms)

की सम्भावना नहीं ? क्या सच में टूटी फूटी, आधी अधूरी बुद्धि के साथ और मिट्टी जैसे शरीर के साथ हम जीव जगत में चोटी पर हैं ? क्या हमें सम्पूर्ण सृष्टि से अलग करके तुच्छ और अधूरे ज्ञान के साथ इस धरती पर कैद करके नहीं रखा गया है ? हमारी विज्ञान की जानकारी उतनी ही है जितनी जैविक नाभिकीय रणनीतिज्ञों ने तय की है। क्या atomic structure वैसा ही है, जैसा हम जानते हैं ? चलो माना atomic structure वैसा ही है, जैसा हम जानते हैं। पर क्या atomic structure में विविधता और भिन्नता नहीं हो सकती ? वर्ग मछली, उभयचर, सरीसृप, पक्षी, स्तनधारी में क्या सिर्फ एक ही तरह की मछली, उभयचर, सरीसृप, पक्षी, स्तनधारी है ? नहीं हमें पता है कि वर्ग मछली, उभयचर, सरीसृप, पक्षी, स्तनधारी में कितनी कितनी, बेशुमार विविधता है। ठीक इसी तरह कोशिका - जीवन की मूल इकाई (bio cell, basic unit of life) में भी कितनी विविधता है। मोटे तौर पर bio cell दो तरह के होते हैं Prokaryotes & Eukaryotes. और वास्तव में बैक्टीरिया, वायरस और बाकी सब एक कोशिका वाले जीव (acellulars) जो kingdom Monera or Protista में मिलते हैं। वे सब भी तो "सेल" के विभिन्न और उन्नत रूप ही हैं। ये acellulars आत्म निर्भर और अकेले, स्वतंत्र रहना जानते हैं। ये acellulars अपने आप में sufficient और efficient हैं। ठीक इसी तरह Eukaryotes में somatic cells or germ cells भी "cells" की ही forms हैं। पर कुछ advanced or specialized cells जो bacteria और virus की तरह independent नहीं हैं और self sufficient और self efficient ना होने के कारण इन्हें एक शरीर की जरूरत पड़ती है। जैसे epithelial cells, neurons, nephrons, cardiac cells, cone or rod cells, muscle cells, bone cells, hair cells etc इसी तरह वनस्पति जगत में भी कई तरह के bio cells पाए जाते हैं। Bio cells में variety है तो atom और atomic structure में variety क्यों नहीं ? जिस तरह flora & fauna world में variety है और अनगिनत तरह के cells मिलते हैं तो chemical world में variety की सम्भावना क्यों नहीं हो सकती ? Chemical variety के साथ ही flora & fauna world में भी विभिन्नता होगी। Due to different types of chemicals there are different types of bio worlds by abiogenesis or any other mechanism.

हम सिर्फ उसी atom or atomic structure, elements or chemicals को जानते हैं जिसकी BNW में जरूरत थी। हमें वैसी ही galaxy में कैद किया गया है। यहाँ हमारी जानकारी वाले chemicals हैं। पर और भी कई तरह के atoms, atomic structures, chemicals होंगे। जिनकी जानकारी हमें नहीं है। Numerous planets, natural satellites, galaxies और universe होंगे। यहाँ विभिन्न तरह के atoms, atomic structures, chemicals होंगे। इन planets, satellites, galaxies or universes को उनके atoms, atomic structures, elements, bio world के bases पर वर्गीकृत किया गया होगा। वहाँ का flora और fauna और bio world वहाँ के atoms, atomic structures, elements, chemicals के हिसाब से abiogenesis theory और अन्य other mechanism के हिसाब से विकसित हुआ होगा। तो जाहिर सी बात है कि उनकी chemistry, bio chemistry, chemical reactions or biochemical reactions हमारी जानकारी के आगे की होंगी। Advanced type के और भी कई atom or atomic structures होंगे।

हम कैसे पक्के तौर पर कह सकते हैं कि atom में electron, proton और neutron ही होते हैं ? This is very very primitive & basic atomic structure & participants of the atom. जैसे हमारी धरती पर इस समय के elements हैं, जो हमारे long form of periodic table को बनाते हैं। जैसे Hydrogen, Helium, Lithium, Beryllium...+102 elements. Hydrogen में एक proton, एक electron, और एक ही neutron है। ऐसे ही helium में 2-2 electron, proton, neutron है और lithium में 3-3 electron, proton और neutron & goes on... हर अगले element में 1-1 electron, proton और neutron बढ़ता जाता है। यानि कि हाइड्रोजन का structure यहाँ 'basic structure' की तरह हुआ। जिस में एक एक electron, proton और neutron बढ़ते जाते हैं और अगला element बनाते जाते हैं। इस तरह हमारा abiotic world 'Hydrogen world' कहलाएगा। क्योंकि हमारा सारा ही abiotic world or all atoms, elements hydrogen से ही derive, develop हुए हैं। इस तरह कोई +102 elements मिल कर हमारी दुनिया का abiotic, chemical world और hydrogen world बनाते हैं। यानि हमारे chemical world में electron, proton और neutron ही atom, atomic structure or element को तय करते हैं, बनाते हैं। Really very very simplest or primitive chemical world. Development and gradual development abiotic world में भी हुई होगी। जो simple से complex की तरफ हुई होगी जीव जगत की ही तरह।

जैसे हमारी दुनिया में ketons, aldehydes, alcoholic groups, alkane, alkenes, alkynes, benzene derivatives, hydrocarbons etc. मिलते हैं। क्या पता ऐसे ही इन groups में बदलाव कर किसी planet galaxy और universe का chemical world बना हो। जैसे हमारी दुनिया में hydrogen के basic atomic structure में electron, proton neutron add कर के आगे +102 elements बन जाते हैं यानि हमारा सारा chemical world or abiotic world, hydrogen world बन जाता है। ऐसे ही और planets, galaxies or universe का chemical world बना हो। जैसे, सिर्फ उदहारण के लिए benzene world, keton world, aldehyde world, alcoholic world etc. इन groups में hydrogen की तरह changes कर पूरे के पूरे planet, galaxy or universe का chemical world तैयार करना /होना। इन specific chemicals के planets, galaxy, universe.

Specific मंत्री /देव और ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी specific होंगे। उनके पास अपने planet, galaxy or universe के specific chemicals को handle करने की power, authority, skill होगी।

समय के साथ हमारे ही periodic table में कितनी changes, modifications, developments हुई हैं तो और आगे changes, modifications, developments, innovations or mutation /chemical /elemental mutation के chances नहीं हैं ? Electron, proton or neutron की तरह और भी कई तरह के atomic

participants, sub atomic particles होंगे। जिसके तहत infinite abiotic world हो सकते हैं। और infinite type के abiotic world के कारण infinite types के biotic worlds abiogenesis theory के द्वारा होंगे।

और full atomic खुद भी तरह तरह के atoms और elements बना सकता है। कई तरह के synthetic planets और उनके हिसाब से वहाँ का abiotic or biotic world भी synthesize कर सकते हैं। जैसा कि हमारे सौरमंडल में भी है। हमारा सौर मंडल BNW के हिसाब से design किया गया है।

## गैसीय कोशिकाएँ, पवनीय कोशिकाएँ, वायु कोशिकाएँ, आणविक कोशिकाएँ

और जैविक अणु (Bio atoms, airy cells, gaseous atom) : --- जिस तरह की कोशिकाओं के बारे में

हमें बताया गया है। उस तरह की कोशिकाओं से सिर्फ स्थूल शरीर ही हासिल किया जा सकता है। सूक्ष्म शरीर

गैसीय कोशिकाओं, पवनीय कोशिकाओं, वायु कोशिकाओं, और जैविक अणु (Bio atoms, airy cells, gaseous atom) से ही प्राप्त होता है। यह गैसीय कोशिकाएँ इंसानों में neurons की तरह अति उन्नत कोशिकाएँ होती हैं।

क्रमिक विकास में इतना विकास हुआ कि आगे जाकर अणु और कोशिका (atom and cells) में संलयन और विलय (fusion and merge) हो गया। परिणामस्वरूप अणु और कोशिका वायु कोशिकाओं, आणविक

कोशिकाओं, जैविक अणुओं में विकसित हो गईं।

इस तरह के जैविक अणुओं को जीवित रहने के लिए खाने, पानी और वायु से प्राप्त होने वाली ऊर्जा की जरूरत नहीं है। ये जैविक अणु (Bio atom) अपने आप में सम्पूर्ण होते हैं। और सूक्ष्म प्राणी का हर जैविक अणु अपनी ऊर्जा की पूर्ति करने में स्वयं सक्षम होता है। या फिर जैसे हमारी ऊर्जा की पूर्ति करने के लिए हमारे पास संचार प्रणाली, श्वसन प्रणाली, पाचन तंत्र (circulatory system, respiratory system or digestive system) आदि हैं। ऐसे ही इनके पास भी कुछ जैविक अणुओं का समूह (जैसे हमारे पास उत्तक, tissue) होगा। जो सूक्ष्म शरीर को ऊर्जा की पूर्ति करता होगा। पर ये जैविक अणु अपनी ही किसी कोशिकांग और गैसीय कोशिकांग; कोशिका क्रिया और जैविक अणु नाभिकीय क्रियाएँ (cell organelle और bio atomic organelle; cellular reaction, bio atomic nuclear reactions) और सूरज की तरह संलयन या विखंडन (fusion or fission) द्वारा सूक्ष्म शरीर की ऊर्जा की पूर्ति करते होंगे। इनकी ऊर्जा का स्रोत गैसीय कोशिकाएँ और जैविक आणविक नाभिकीय क्रियाएँ (Bio atoms or Bio atomic nuclear reactions) हो सकती हैं। जैसे हमारा शरीर बिजली से चलता है। ठीक ऐसे ही इनका सूक्ष्म शरीर इतनी बिजली पैदा करता होगा कि bio robot की तरह ये प्राणी पूर्णतय: बिजली से ही चलते होंगे या और ये प्राणी इलेक्ट्रिक रे की तरह बिजली को अपने हथियार की तरह भी इस्तेमाल कर सकते होंगे। या ये प्राणी अपने ग्रह पर मिलने वाले किसी तत्व, रसायन से सीधे ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। उदहारण के तौर पर जैसे हमारी धरती पर ऑक्सीजन, कार्बनडाईऑक्साइड, यूरेनियम, हाइड्रोजन, सोना, चाँदी आदि ऊर्जा के स्रोत हैं। इनके ऊर्जा स्रोत में अपनी आणविक कोशिकाओं की किस्म, वातावरण, हालातों के हिसाब से बहुत ज्यादा

विभिन्नता हो सकती है। यही ऊर्जा स्त्रोत्र इनकी phylum, class, order, family, genus और species तय करेगे।

ये आणविक कोशिकाएँ और जैविक अणु, Bio atoms, airy cells रूपांतरण में सौ प्रतिशत निपुण होते हैं। इसीलिए सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर में और स्थूल शरीर को सूक्ष्म शरीर में बदलने में इन्हें पूर्णतयः महारत हासिल होती है। इसीलिए यह किसी भी जैविक और अजैविक वस्तु में खुद को बदलने में सक्षम होते हैं।

ये गैसीय कोशिकाएँ धुँआई कोशिका, अग्नि कोशिका, जल कोशिका, मिट्टी कोशिका, पत्ता - पादप/पौधा कोशिका, टहनी कोशिका, प्लास्टिक कोशिका, सूती कोशिका, सिल्क कोशिका, चूर्ण-पाउडर कोशिका (किसी भी रंग में), लकड़ी कोशिका आदि के रूप में हो सकती हैं। ये कोशिकाएँ किसी भी तरह के पदार्थ, सामग्री, stuff और रंगरूप में हो सकती हैं और खुद को परिवर्तित, रूपांतरित कर सकती हैं। इनकी विभिन्नता की कोई सीमा नहीं है। तभी सम्पूर्ण आणविक कोई भी, कैसा भी रूप धारण कर लेता है। पूर्ण आणविक/आणविक प्राणी नाजुक सी तितली बन होली जैसे रंग पैदा कर सकता है। अखरोट बन बाहर से लकड़ी जैसा कठोर खोल-ढाँचा बन सकता है। भालू, घोड़े और शेर जैसे खूबसूरत, चमकीले और आकर्षक बाल बना सकता है। गेंडा बन सकता है और गेंडे जैसी सख्त चमड़ी भी बना सकता है और केंचुए जैसे नर्म प्राणी में भी बदल सकता है और बना सकता है। वो खुद को कपास के फूलों में भी बदल सकता है और गेहूँ की बाली में भी खुद को परिवर्तित कर सकता है। वो पहाड़ भी बन सकता है और नदी, नाला, समुन्द्र भी। क्योंकि हर चीज, हर चीज अणु और गुणों/genes की ही बनी होती है। और ये प्राणी किसी भी तरह के अणु और गुण (atom and gene) की नक्ल कर सकता है। इन कोशिकाओं की प्रकार, किस्म, विविधता, बहुरूपता, बहुमुखीयता, रूपांतरण की कोई सीमा नहीं है। यही बातें और विभिन्नताएँ Kingdom Atomic को आगे phylum, Class, order, family, genus, species को बनाने में सहायक होती हैं।

यह गैसीय कोशिकाएँ सुरक्षा के मामले में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती होंगी। चूँकि ये आणविक कोशिकाएँ और जैविक अणु हैं तो ये अपने आप में एक सम्पूर्ण शस्त्रशाला भी होंगे। सूक्ष्म शरीरधारी प्राणियों को यानि अदृश्य प्राणी, वायुमय प्राणी, वायु जीव अपने जैविक अणुओं (Bio atom) से किसी भी तरह की विकिरण (radiation) को निकाल सकते हैं जो सृजन और प्रलय दोनों तरह के काम करने में सक्षम होंगी। जैसे अल्फा, बीटा, गामा आदि विकिरण। क्योंकि जैविक अणुओं का आणविक स्तर और उपआणविक स्तर (Atomic level or subatomic level) तक नियंत्रण है। यानि जैविक अणु प्रोटोन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन को नियंत्रित कर अल्फा, बीटा और गामा रेडिएशन को नियंत्रित कर सकते हैं। यानि वायु जीव अपने आप में एक सम्पूर्ण जैविक अणु संयंत्र (nuclear plant, Bio nuclear plant) होगा। उसे किसी भी तरह के पारम्परिक प्राकृतिक जैविक हथियार, जिन्हें हम इंसान जानते हैं जैसे कि शल्क (scale), पंख, बाल, पंजे, नाखून, खुर और सींग आदि की जरूरत नहीं। क्योंकि वो अपने बचाव के लिए जैविक आणविक हथियारों (Bio atomic weapon) का इस्तेमाल करते हैं। जैविक आणविक हथियार यानि अणु और आणविक अंग (प्रोटोन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन आदि) को अपनी सुरक्षा और काम करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। ये आणविक कोशिकाएँ और भी कई तरह की किरणों, विकिरणों को नियंत्रित करना जानती

होगी। जिनके बारे में हम इंसानों को अभी जानकारी नहीं है। और ये सब इन प्राणियों के खाने और सुरक्षा के मामलों में मदद करती होगी। इन्हीं किरणों, विकिरणों, लेसर बीम आणविक शक्ति से ये प्राणी अपना सारा काम करते हैं। बिना हाथ, पैर, शरीर, किसी औजार, मशीन आदि की मदद से। तभी भगवान जी को निराकार भी माना जाता है। क्योंकि उन्हें कोई भी काम करने के लिए bio machines यानि हाथ, पैर आदि की जरूरत नहीं होती भगवान जी अपना सारा ही काम गुण और अणु/genes or atom की ही मदद से करते हैं और गुण और अणु को रिमोट कंट्रोल और संचालित किया जाता है।

## विषाणु अणु, विषाणु कोशिकाएँ और विषाणु आणविक कोशिकाएँ - Virus cell or

Virus atom or Virus bio atom और Virus atomic cell - इस तरह की विशेष तौर पर विकसित हुई कोशिकाओं और अणुओं को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता होगा। जो सामने वाले प्राणी या सेना को संक्रमित कर देती होगी। जो सामने वाले प्राणी के शरीर में जैव रसायनों और उसके गुणों (genes) पर प्रभाव डाल उस प्राणी के जैविक रसायनों में बदलाव कर या फिर उस प्राणी की आनुवंशिक सामग्री (Genetic material) में मन चाहे बदलाव कर के उस प्राणी में मनचाहे बदलाव करती होगी। या फिर यह विशेष आणविक कोशिकाएँ ऐसे रसायन शरीर में पैदा करती होगी जिससे ब्रह्म पाश और नाग पाश की तरह प्राणी जड़ित वस्तु बन कर रह जाए। जैसे सारा ही शरीर लकवा ग्रस्त हो गया हो। प्राणी को सब दिखाई और सुनाई देगा पर वो प्रतिक्रिया नहीं कर पाएगा। ये विशेष तौर पर प्रोग्राम की गई कोशिकाएँ होगी। जो बीजाणुओं की तरह हवा द्वारा अपने लक्ष्य तक पहुँचने के काबिल होगी। या पूर्ण आणविक या आंशिक आणविक सीधा उस इंसान के शरीर में उस इंसान के शरीर द्वारा भी ऐसी कोशिकाएँ उत्पन्न करवा सकता है। जो निशाने पर है।

चूँकि ये प्राणी या तो पूर्ण आणविक होते हैं, आंशिक आणविक या फिर नगण्य आणविक होते हैं। सूक्ष्म शरीर मुख्य रूप से तीन तरह के प्राणियों के पास होगा। एक तो पूर्ण आणविक, दूसरा आंशिक आणविक, तीसरा नगण्य आणविक। नगण्य आणविक में कुछ विशेष तरह के साधु-संत, ऋषि-मुनि, सिद्धपुरुष आएँगे। पूर्ण आणविक तो सौ प्रतिशत अणु को नियंत्रित करना जानता है। तो इसका काम करने का ढंग सौ प्रतिशत आणविक ही होगा। क्योंकि इसके पास पूर्ण आणविक गुण सारणी है। आंशिक आणविक में बहुत सारी विभिन्नताएँ होगी। और ये विभिन्नताएँ अणु को नियंत्रित करने के आधार पर वर्गीकृत होगी। और इस तरह के प्राणियों के पास आंशिक आणविक गुणसारणी (Partial atomic genome) होती है।

फिर मोटे तौर पर यहाँ कहा जा सकता है कि इसलिए ऐसे प्राणियों को यानि पूर्ण आणविक को निराकार कहा जाता है। क्योंकि इनको कोई भी काम यंत्रों की मदद से नहीं बल्कि अणुओं की मदद से करना होता है। इसलिए इनको काम करने के लिए ना तो शरीर, दिमाग की जरूरत होती है और ना ही हाथ और पाँव की जरूरत होती है। ऐसे प्राणियों ने कोई भी काम सामने पड़ी वस्तु के अणुओं को नियंत्रित कर के कर लेना होता है। सो ऐसे प्राणियों को शरीर, दिमाग, हाथ, पैर की जरूरत नहीं होती। ऐसे प्राणी किसी भी तरह की आकृति में हो सकते हैं क्योंकि इनके शरीर से निकलने वाली विकिरण, लेज़र बीम, आणविक ऊर्जा ही इनके सब तरह के काम कर देगी। इसीलिए देवी माँ को ज्योति रूप में पूजा जाता है। सिख धर्म, मुस्लिम धर्म और बहुत से धर्मों, सम्प्रदायों में भगवान को निराकार

माना जाता है। क्योंकि ऐसे प्राणियों के अंग आणविक (atomic), जैविक आणविक (bio atomic) होते हैं। इन्हें हमारी तरह के पारंपरिक अंग जैसे दिल, दिमाग, फेफड़े, गुर्दे, हाथ, पैर, आँख, नाक, कान, हड्डियों आदि की जरूरत नहीं।

ऐसे प्राणियों का जीवन काल इंसानों की तरह साठ, सत्तर, सौ साल का नहीं होता। जो कि इनको अपना वंश चलाने के लिए अपने बच्चों, बच्चों के बच्चों आदि की जरूरत पड़े। जैसा कि कहा जाता है कि विकास सर्व पक्षीय होगा। सो इनका प्रजनन करने का ढंग भी कई तरह के है, अद्वितीय है और क्षणिक है। इंसानों की तरह नौ महीने नहीं लगते इन्हें अपने एक दम से अपाहिज बच्चे को पैदा करने के लिए। वो बच्चा जो खाने-पीने, चलने-दौड़ने, पढ़ने-लिखने, बोलने, खुद की सुरक्षा करने, कुछ समझने, कोई भी काम करने में अपाहिज, लाचार, बेबस यानि हर तरह से बेबस और अपाहिज।

चूँकि ऐसे प्राणियों का अपनी आणविक कोशिकाएँ, जैविक अणु, Bio atoms or airy cells पर पूरा पूरा नियंत्रण होता है। यह प्राणी अपने किसी भी जैविक अणु में कोशिका विभाजन (mitosis, meiosis) द्वारा पल क्षण में एक सम्पूर्ण समझदार, ज्ञानवान, पढ़ा-लिखा बच्चा पैदा कर सकते हैं। यह एक दम एक व्यस्क को जन्म दे सकते हैं। या फिर Genetic engineering द्वारा अपने मन चाहे गुणों (Characteristics) और गुणों (Genes) वाले बच्चों को भी पैदा कर सकते हैं। इनके पास अनंत विकल्प होंगे अपने बच्चे को जन्म देने के। चूँकि यह प्राणी (पूर्ण आणविक) खुद युगो युगो तक जीवित रहते हैं। इसलिए इन्हें अपने वंश आगे बढ़ाने के लिए अगले वंश की कोई खास जरूरत नहीं होती। अपने से कम शक्तिशाली बच्चे को यह प्राणी बर्दाश नहीं करेगा और अगर बच्चा इस प्राणी के बराबर का शक्तिशाली हुआ तो वही बच्चा कल को अपने जन्मदाता को भी चुनौती दे सकता है। इसलिए प्रजनन के मामले में ऐसे प्राणियों को बहुत ही ज्यादा सचेत रहना पड़ता है। ज्यादा संख्या में पूर्ण आणविक प्राणियों का इस कायनात में रहना उचित नहीं है। इसीलिए एक समय पर इस पूरी कायनात में सिर्फ एक ही पूर्ण आणविक प्राणी होता है। अगर एक से ज्यादा पूर्ण आणविक प्राणी इस दुनिया में होंगे भी तो वो पूर्णतयः परम शक्ति के अधीन होंगे। ताँकि व्यवस्था बनी रहे।

## आणविक बीजाणु, आणविक प्राणी प्रतिलिपि or Bio atomic spores, Bio atomic clone -

जैसे जीव जगत में बीजाणु/spores का इस्तेमाल प्रजनन के लिए किया जाता है। ऐसे ही ये आणविक, आंशिक आणविक, नगण्य आणविक प्राणी भी Virus cell or Virus atom - Virus bio cell or Virus bio atom का इस्तेमाल प्रजनन के लिए करते होंगे। किसी युद्ध आदि की स्थिति में जब इन्हें लगता होगा कि यह मरने वाले हैं तभी यह प्राणी ऐसी कोशिकाओं को उत्पन्न करेगा जो बीजाणु की तरह काम करेंगे। या फिर वो ऐसे बीजाणु किसी आपातकाल में पैदा करेगा। ताँकि उसका वंश चलता रहे। इस तरह के बीजाणु सही समय, सही स्थिति, सही हालातों में किसी विशेष तरह की कोशिका विभाजन के द्वारा खुद बा खुद एक बच्चे और एक व्यस्क में विकसित हो जाएँगे।

या फिर इन आणविक बीजाणुओं का प्रयोग नर और मादा द्वारा बिना संभोग द्वारा बच्चे पैदा करने के लिए भी किया जा सकता है।



ये प्राणी बहु आकृति (multimorphism) में भी प्रवीण होंगे। ये कुशल गुणकौशल, गुणिय अभियान्ता (जेनेटिक इंजीनियर) होते हैं और इनके पास अपनी एक आनुवंशिक प्रयोगशाला (genetic laboratory) होती है। जिस में यह मनचाही गुणसारणी तैयार कर अस्थाई और स्थाई विभिन्न तरह के ज्ञात और अज्ञात प्राणी बना सकते हैं। जो स्वयं संचालित और रिमोट संचालित हो सकते हैं।

परिणामस्वरूप अणु और कोशिका मिल कर एक और नई Kingdom Atomic की सृजना करते हैं। जिस में अनंत तरह की कोशिकाएँ, आणविक कोशिकाएँ, अणु, रसायन और जैव रसायन होंगे। इस जगत (Kingdom) में विभिन्न तरह के जैविक और अजैविक पदार्थों की भरमार होगी। अनंत तरह के जीव-जंतु और रसायन होंगे। जो आणविक जगत (Kingdom Atomic) का तरह तरह से श्रृंगार करते होंगे।

हमारी धरती पर अभी सिर्फ दो तरह के ही मुख्य कोशिकाएँ मिलती हैं – सुकेंद्रिक कोशिका और अकेंद्रिक कोशिका (eukaryotes or prokaryotes organism) तो जीवन के प्ररूपों में कितनी कितनी भिन्नता है। जलचर, उभयचर, सरीसृप, पक्षी और स्तनधारी। फिर इन genus में कितनी कितनी species मिलती हैं। और हमारी धरती पर अणु और periodic table में दर्ज सभी तत्व मूलभूत (simplest form) में हैं। तब भी हमारी धरती पर विभिन्न तरह के रसायन मिलते हैं। तो विभिन्न तरह के बहुत ज्यादा विकसित अणु (advanced or developed atoms) कितने कितने तरह के तत्व, रसायन बनाते होंगे ? जो कई तरह के अजैविक जगत का निर्माण करने में सक्षम होंगे। और फिर यह बात तो संवर्धित, समर्थित है कि जितने तरह के अजैविक जगत होंगे। Abiogenesis theory या किसी और प्रक्रिया या क्रियाविधि द्वारा उतने ही प्रकार के जैविक जगत होंगे।

हमारी रचित दुनिया में ही मात्र दो तरह की कोशिकाएँ और +102 तत्वों के कारण जीवन में कितनी कितनी कितनी विभिन्नता है जैसे सूक्ष्मदर्शी, अकशेरुकीय या कशेरुकी जीव (nonvertebrates or vertebrates), विभिन्न तरह की वनस्पति और विभिन्न तरह के रसायन और इन रसायनों से बनने वाले विभिन्न तरह के अजैविक पदार्थ। इस से यह बात भी सिद्ध होती है कि ब्रह्माण्ड में आणविक जगत (Kingdom Atomic) के सिवा भी और कई तरह तरह के जगत (Kingdoms) और अजैविक जगत (Abiotic worlds, inorganic worlds) होंगे। जो विभिन्न तरह के ब्रह्मांडों की सृजना करते होंगे। ब्रह्मांडों को इन विभिन्न तरह के जैविक और अजैविक जगत के आधार पर विभाजित और वर्गीकृत किया जा सकता है।

आणविक कोशिकाएँ चूँकि संजीव और निर्जीव (कोशिका + अणु) का समिश्रण होती हैं। और आणविक कोशिकाएँ 100% अणु को नियंत्रित करना जानती हैं। और हर चीज अणु की ही बनी होती है। यही वजह है कि देवताओं को पल क्षण में कपड़े बदलते दिखाया/बताया जाता है। एक दम से जब वो विशाल रूप धारण कर लेते हैं और एक क्षण में ही वो सामान्य या बहुत छोटे आकार में आ जाते हैं। इतने सारे शारीरिक बदलाव के बावजूद वही कपड़े फिट कैसे बैठ जाते हैं ? शरीर के आकार में तो कोशिका विभाजन (mitosis, cellular fusion & cellular fission) द्वारा बदलाव किए जा सकते हैं। शरीर के आकार को कोशिका विभाजन (cell division) द्वारा बढ़ाया या घटाया

जा सकता है। पर कपड़ों के आकार में कैसे बदलाव संभव है ? कपड़े और कोई भी चीज जो निर्जीव है। उसके अणुओं की गिनती बढ़ा घटा कर उस निर्जीव चीज के आकार में बदलाव किए जा सकते हैं। कपड़ों का आकार बढ़ाने के लिए, जिस तरह के अणुओं से वो कपड़ा बना है। उन अणुओं की गिनती बढ़ा देनी है और अगर कपड़ों के आकार को छोटा करना है तो उस कपड़े के अणुओं की गिनती कम कर दो, संख्या को घटा दो तो कपड़े का आकार छोटा, कम हो जाएगा। यानि addition & subtraction of atoms simple...